श्री वि...ायनमः

श्री दंडकादि जैन प्राचीन स्तवनादि संग्रह. ॥

ोन महापुरुषोना बनावेला दंडकादि द्वार

० तथा स्तवनो, चैत्यवंदनो, स्तुतिओ,

सझायो, विगेरेना संग्रह.

ागच्छना पुज्यपाद गुरुणीजी श्री श्री श्री १००८ सुरश्रीजी

ाजश्रीना शिष्या गुरुणीजी हीरश्रीजी महाराज तेमना

ा श्री हरखश्रीजी महाराजना सदुपदेशथी

ामना श्रावक शेठ बालुभाइ शामचंद तथा पुना ा श्रावी-

विगेरे तरफथी मलेल द्रव्य सहायवडे.

छपावी प्रसिद्ध करनार.

खंभात निवासी.

मास्तर उमेदचंद रायचंद.

मुं० अमदावाद. ठे० पांजरापोळ.

त्ति १ ली. प्रत १००० वीर संवत २४४६ सने १९२०

संवत १९७६.

सत्यविजय' प्रीन्टींग प्रेसमां शा. सांकलचंद हरिलाले

छापी--ठे० पांचकुवा नवा दरवाजा--अमदावाद.

किंमत ०--१०--०.

श्री वितरागायनमः

॥ श्री दंडकादि जैन प्राचीन स्तवनादि संग्रह. ॥

प्राचीन महापुरुषोना बनावेला दंडकादि द्वार ३० तथा स्तवनो, चैत्यवंदनो, स्तुतिओ, सझायो, विगेरेनो संग्रह.

तपगच्छना पुज्यपाद गुरुणीजी श्री श्री श्री १००८ सुरश्रीजी माहाराजश्रीना शिष्या गुरुणीजी हीरश्रीजी महाराज तेमना शिष्या श्री हरखश्रीजी महाराजना सदुपदेशथी तळे गामना श्रावक शेठ बालुभाइ शामचंद तथा पुनानी श्रावीकाओ विगेरे तरफथी मलेल द्रव्य सहायवडे.

छपावी प्रसिद्ध करनार

खंभात निवासी.

मास्तर उमेदचंद रायचंद.

मुं० अमदावाद. ठे० पांजरापोळ.

आवृत्ति १ ली. वीर संवत २४४६ सने १९२०

प्रत १००० संवत १९७६.

श्री 'सत्यविजय' प्रीन्टींग प्रेसमां शा. सांकलचंद हरिलाले छापी–ठे० पांचकुवा नवा दरवाजा–अमदावाद.

किमत ०–१०–०.

प्रस्तावना.

सुज्ञ जैन बंधुओ अने ब्हेनो ?

आप सर्वे जाणोज छो के आवा स्तवनादिक जेवां नाना पुस्तकनी प्रस्तावनानी अति आवश्यकता होइ शके नहीं छतां पण आ पुस्तक शा हेतुथी बहार पाडवामां आव्युं तेम कोना सदुपदेशथी विगेरे सहज हकीकत जणाववी योग्य धार्गी छे.

घणुं खुशी थवा जेवुं छे के हींदुस्ताननां घणा शहेरो अने गामोमां ज्यां ज्यां आपणा पवित्र पूज्य पाद उत्तम चारित्र रत्नथी विभूषित गुरुणीजी माहाराजाओ विचरी रह्यां छे त्यां त्यां आधूनीक समयमां जैन स्त्री वर्गमां तेम बालीकाओमां खास परम पवित्र वितराग परमात्मानी अविच्छिन्न प्रभावशाळी धर्म क्रियामां तेमज परमात्माना अलोकिक गुण गान करवाना उध्यम माटे पुरतो उत्साह दाखल करेलो द्रष्टिगोचर थाय छे दरेक स्त्रीयो अने बालीकाओ पोतानुं दुर्लभ्य मानुष्य जीवन जो वीतराग परमात्माना धर्म सेवनथी तेमज तेमना गूण गान करवाथी पावन करे तो ते शिवाय आ निःसार दुनीयामां आत्म कल्याणनो बादशाही मार्ग बीजो कयो छे ? मतलब के तेज छे. आ उत्साहने पुरो पाडवा माटे जो के जैनोमां स्तवन सझायना पुस्तको घणा छपायेला छे, छतां पण प्राचीन महा पुरुषोना अपुर्व भाव वाला घणां स्तवनो चैत्यवंदनो सझायो स्तुतीओ विगेरे हस्त लीखीत पानाओमां पडी रहेला छे तेनो सौने लाभ मले एवा हेतुथी परम उपगारी पूज्यपाद श्री श्री श्री मोहनलालजी महाराज साहेबजीना संघाडाना साध्वीजी महाराजश्री सुरश्रीजी तेमना शिष्य गुरुणीजी माहाराजश्री हीरश्रीजी तेमना

शिष्यागूरुणीजी महाराजश्री हरखश्रीजी महाराजके जेओ दक्षिण गुजरात, मारवाड, मेवाड, काठीयावाड आदि हींदुस्ताननां घणा शहेरो अने गामोमां विचरी घणी भावीकाओ तेम बालीकाओ उपर उपकार करी पोतानुं दीव्य चारित्र शोभावी रह्या छे तेमना सदूपदेशथी मलेल द्रव्यनी सहायवडे आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आव्यूं छे.

आ पुस्तकनी अंद्र उत्तम प्रकारना विषयो दाखल करेला छे प्रथम दंडकना ३० द्वार विस्तारथी दाखल करेला छे पछी सम्यकत्व विचार गर्भित श्री महावीरजीन स्तवन उत्तमविजयजी कृत संयम श्रेणीनुं स्तवननी ढालो, गोडी पार्श्वनाथजीना स्तवनो चैत्यवंदनो स्तुतिओ सझायो विगेरे घणी उपयोगी बाबतो दाखल करेली छे वली आ पुस्तकनी अंद्र पुज्यपाद परम उपगारी सुप्रसिद्ध मुनी माहाराजश्री मोहनलालजी महाराज साहेबनो तेमज तेमना पाट पटंधर पंन्यासजी महाराजश्री हर्ष मुनीजीना टुंक वृंतांत साथे तेमना फोटा मुकवामां आवेला छे.

आ पुस्तक पसिद्ध करवामां जे जे भाइओ तथा व्हेनोए मदद करी छे तेमना मुबारक नाम आ पुस्तकनी साथे जोडवा साथे तेमनो खरा अंतःकरणथी आभार मानवामां आवे छे.

आ पुस्तकमां घणा विषयो हस्त लीखीत पाना उपरथी लेवामां आवेला छे.

बनती महेनते लखावी सुधारी छपाववामां आवेल छे अने तेनी मुल जे असल भाषा छे तेज भाषामां पण केटलाक स्तवनो छपावेल छे छतां पण दृष्टि दोषथी या यंत्र दोषथी शास्त्र विरुद्ध या अशुद्ध

छपायुं होय ते माटे सुज्ञ भाइओ ब्हेनोनी क्षमा चाहुं छुं अने सुधारी वांचवा भलामण करुं छुं. ली. प्रसिद्ध कर्ता.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां जे गृहस्थो तथा ब्हेनो तरफथी मदद मलेली छे तेना मुबारक नामो नीचे मुजब छे.

२००-०-०	शेठ बालुभाइ शामचंद तरफथी	मु. तले गाम.
२५-०-०	शेठ वीरचंद दीपचंद तरफथी	मु. अमदावाद.
३०-०-०	शेठ चीमनलाल डुंगरशीनी पत्नि सोभाग्यवंती बाइ माणेक	मु. पुना.
३०-०-०	लाधाजी फताजीनी विधवा नाजुबाइ	मु. पुना.
२५-०-०	मणीलाल माणेकचंद	मु. पुना.
१५-०-०	कस्तुरचंद कंकुचंदनी विधवा बाइ डगरी	मु. पुना.
१०-०-०	शंकरलाल मगनलाल	मु. पुना.
१०-०-०	कृष्णाजी बालाजी	मु. पुना.
१०-०-०	भगवानजी बालाजी	,, ,,
१०-०-०	मारवतीशा रुपाजी	,, ,,

पन्यासजी श्री हर्षमुनीजीनुं टुंक वृतांत.

श्री महात्मा शांत मुद्रा परमपूज्य श्रीश्रीश्री १००८ श्री मोहनलालजी माहाराज साहेब तेमना शिष्य गंभिर्य गुण गुरु सेवा करवामां कुशळ पंन्यास श्री हर्ष मुनीजी तो महाराज श्रीना चरणकमलने त्यज्या नहीं अर्थात पंन्यासजी महाराजश्रीना पासे रह्या कवी कहे छे के कमळनी पांखडीनो त्याग करी भमरो बीजे जाय छे के शुं नथीज जतो तेमज पंन्यासजी पण महाराजश्रीने छोडीने गया नहीं आ

શ્રી ૧૦૦૮ મુની મોહનલાલજી માહારાજના શિષ્ય તપગચ્છ

પંન્યાસજી શ્રી હરખમુનિજી માહારાજ.



જન્મ.	દીક્ષા.	સ્વર્ગવાસ.
સંવત ૧૯૨૪	સંવત ૧૯૪૮	સંવત ૧૯૭૬
ફાગણ માસ.	અષાડ સુદ ૮	વૈશાખ વદ ૬

पंन्यासजी हर्षमुनीजीए तो पोताना गुरुजी महात्मा मोहनलालजी माहाराजनां चरणकमलनी सेवामांज पोताना आत्माने कृतार्थ मान्यो वृधावस्थाने लीधे अथवा व्याधिने लीधे के प्रकृति ठीक न होवाने लीधे मोहनलालजी माहाराज पोते कोइ दीवस व्याख्यान वांची शके नही तो ते वखते तेमना शिष्यमां मान्य पन्यासजीश्री हर्षमुनीजी पाट उपर बेसी देसना करता हता ते पंन्यासजी हर्षमुनी कहेवा हता के थोडा बोला तथा शास्त्रमां कह्या प्रमाणे उपदेशने करनारा होवाथी ते महामुनीश्री पंन्यास हर्षमुनीजीनुं व्याख्यान सांभलीने मुंबाइनो तथा सुरतनो संघ आनंद पाम्यो सारा अंतःकरणवाला पन्यास श्री हर्षमुनीजी धर्मथी डरीने सुत्र प्रमाणे यथार्थ अने परीमित एटले बहु वधारे नही ने तेम वहु ओछुं नही परंतु जरुर जेटलुंज बोलनारा कोइने पण अप्रीटा लागे तेम नहीं वर्तनारा इत्यादि घणा गुणवान पुरुष हता तेमना दर्शनथी सौ कोइने आनंद थतो हतो. एक वखते कोइए श्री मोहनलालजी महाराजने पुछयुं के हे महाराज तमारा शिष्योमां आपणा पदने कोण शोभावशे ए सांभलीने बीजाओए कह्युं के ए वात पुछवी नकामी छे कारणके हालमां जे पंन्यासजी हर्षमुनीजी शोभावे छे तेज पछीथी पण शोभावशे त्यारबाद पंन्यासजी हर्षमुनीजी कांतिमुनीजी तथा देवमुनीजीए कह्युं के अमोए पहेलेथी अंगीकार करेली तपागछनी समाचारी प्रमाणे आपणे अनुसरवानी इछा राखीए छीए तेज वखते नयमुनीजी कल्याण मुनीजी पद्ममुनीजी क्षेमामुनीजो वीगरे घणा शिष्योए कह्युं के अमारे तो पंन्यासजी हर्षमुनीजीनुं शरण छे अर्थात पंन्यासजी हर्षमुनीजी करशे ते प्रमाणे करीशुं बाद श्री मोहनलालजी

माहाराजे जे जेने रुचे ते प्रमाणे करो एम हर्षथी कही काळ नजीक आव्याथी मोहनलालजी माहाराजे वीचार करयो के अहो योग ए बे अक्षरो साक्षात अमृत छे योगना प्रभावथी अरिहंत वीगरे परम योगीयो अमर थइ गयेला छे तेम ते योगना महीमाने वर्णवतां वर्णवतांज श्री मोहनलालजी माहाराज ततकाल विधि प्रमाणे प्रत्याख्यान विगेरे करीने पोताना आत्माने छेल्ली समाधीमां जोडी दीधो एटले देहोत्सर्ग करवाने माटे आ देहनी अंतिम समाधिमां बेठा अने आ असार संसारनो तेज वखते आ विनश्वर देहनो त्याग कर्यो अर्थात् काल करयो पंन्यासजी हर्षमुनीजी कांतिमुनीजी वीगरे आदे साधु तथा गुरुणजी सुरश्रीजी वीगेरे साधवीओ नगीनदास कपुरचंद वीगरे श्रावक श्रावीकाओ अपशोषमा पडया बाद सुरतना संघे जाण्युं के जेवो मोहनलालजी माहाराजे संघाडो चलाव्यो तेज प्रमाणे पंन्यासजी श्री हर्ष मुनीजी पण संघाडो चलावशे एम जाणीने सुरतना संघे पंन्यासजी हर्षमुनीजीने गुरुनी पाटे बेसाडया संवत १९६३ शालमां काल करयो त्यारबाद पंन्यासजी श्री हर्षमुनीजीनी आज्ञामा साधु तथा साधवीओ वीचारता हता जे पंन्यासजी हर्षमुनीजीए अंतकाल सुधी समुदाय सारो चलाव्यो देशो देशथी विहारता सुरतना संघनी घणी विनति हती माटे सुरतमां पधार्याने तेज दीवसे शरीर नरम होवाथी अने वधारे वधारे नरम थवाथी पंन्यासजी हर्ष मुनीए जाण्युं के हवे मने सारु नही थाय ने अंत समयनी स्थिति जाणी के हवे मारा संघाडामां कोइ पण मारा गया पछी पंन्यास नथी एम जाणी तेज वखत कमलविजय सुरीश्वर पण सुरतमां पधार्या

हता तेमने बोलावीने कहुं के मारा संघाडामां कोइ पंन्यास नथी माटे मारा बे शिष्योने पंन्यास पदवी आपजो तेज वखते कमल वीज्य सुरीश्वरे पण कहुं के क्या शिष्योने आपवी त्यारे पंन्थासजीश्री हर्ष-मुनीजीए कहुं के मारा मोटा शिष्यजयमुनीने अने क्षांतिमुनीने ते बे शिष्योने आपजो ते वखते कमलवीज्य सुरीश्वरे पण पंन्यास हर्षमुनी-जीनुं वचन कबुल कर्युं सुरतना संघे पण पंन्यासजीनुं वचन कबुल कर्युं ज यमुनीजी मोटा शिष्यने ज्ञानवान जाणीने पंन्यास पदवी आपवानी कहीने शांति मुनीजीने पंन्यास पदवी आपवानी केम कही के दीक्षा लीधी तीदारथीज पंन्यासजी पासेज रहेतां हता उमरे नाना छे पण महागुणीने क्षमावंतने विनय गुण घणो हतो ने ज्ञान पण हतुं तेथी तेमने पण पंन्यास पदवी आपवानुं कहुं त्यार पछी पंन्यासजी हर्षमुनी-जीए काल कर्यो ते ज वखत साधु माहाराज साधवीओ सुरतनो संघ घणोज अपशोशमा पडीयो केमके आवा महात्मा गुरु ओचिंता काल करवाथी सुरतना संघने घणुंज लागी आव्युं साधु साधवीओए जाणुं के हवे अमारा संघाडाना नायक पंन्यासजी हर्षमुनीजीए काल कर्यो ते घणुं खोटुं थयुं केमके अमारा संघाडामां गंभिर्य ज्ञान गुनवान गुरुनी खामी पडी गइ छे माटे घणो अपशोश लागे छे. परंतु भावी आगल कोइनुं चालतुं नथी. विशेष शुं लखवुं.

ली. श्री. मोहनलालजी जैन पाठशालाना सेक्रेटरी झवेरी.

मोहनलाल डाह्याभाइ.

अमदावाद.

अनुक्रमणीका.

श्री वीत रागाय नमः

अथ श्री दंडक द्वार प्रारंभ.

प्रथम नाम द्वार, बीजो लेश्या द्वार, त्रीजो शरीर द्वार, चोथो अवगाहना द्वार, पांचमो संघयण द्वार, छठो संज्ञा द्वार, सातमो संस्थान द्वार, आठमो कषाय द्वार, नवमो इंद्रिय द्वार, दसमो समुद्घात द्वार, अगीयारमो द्रष्टि द्वार, बारमो दर्शन द्वार, तेरमो ज्ञान द्वार, चउदमो जोग द्वार, पंदरमो उपयोग द्वार, सोलमोने सतरमो उपजवा चववानो द्वार, अढारमो आयुष्य द्वार, ओगणीसमो प्रर्याप्ति द्वार, वीसमो आहार द्वार, एकवीसमो अने बाविसमो गति आगति द्वार, त्रेविसमो वेद द्वार, चोविसमो चवनद्वार,

पच्चीसमो प्राणद्वार, छवीसमो संपदाद्वार, सत्ता वीसमो धर्मद्वार, अठावीसमो योनी द्वार, ओग-त्रीसमो कुळकोडी द्वार, त्रीसमो अल्प बहुत्व द्वार. हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे. सातनारकीनो एक दंडक, दस भुवनपतिनादसना दसदंडक, पांच स्थावरनां पांच दंडक, त्रण विगलेंद्रिना त्रण दंडक, तिर्यंच पंचेंद्रिनो एक दंडक, मनुष्यनो एक दंडक, एक व्यंतरनो दंडक, एक ज्योतिषनो दंडक, एक वैमानिकनो दंडक, ए चोवीस दंडक. धमा, वंसा, सेला, अंजना, रिठा, मघा, माघवति असुरकुमार, नागकुमार सुवर्ण कुमार, विद्युत कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दीशीकुमार वायुकुमार, स्तनितकुमार, पृथ्वी, पाणी, तेउं, वाउं, वनस्पति, बे इंद्रि, तेइंद्री, चौरिंद्रि, तिर्यंचपंचेंद्रि, मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिष, वैमानिक, ए प्रथम नाम द्वार. हवे

लेश्या द्वार कहे छे. कृष्णलेश्या, निललेश्या, कापोत-लेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुकललेश्या, नारकीने प्रथम त्रण लेश्या, दश भुवनपतिने प्रथम चार लेश्या, तेउ, वाउने प्रथम त्रणलेश्या, बेइंद्री, तेइंद्री, अने चौरंद्रीने प्रथम त्रण लेश्या, तिर्यंच पंचेंद्री, अने मनुष्यने छ लेश्या, व्यंतरने प्रथमनी चार लेश्या, ज्योतीषीने, सुधर्मा, इसान देवलोके एक तेजो लेश्या, त्रीजे, चोथे, पांचमे देवलोके एक पद्म लेश्या, छठा देवलोकथी उपरांत, सघळे देवलोके एक शुकल लेश्या, ए बीजुं लेश्या द्वार, हवे त्रीजो शरिर द्वार कहे छे. शरीर पांच, उदारीक शरीर, वैक्रीय शरीर, आहारक शरीर, तेजस शरीर, कारमण शरीर, आहारक चौद पुर्वधारीने, तेजसे आहार पचवे, कार्मण ते जीव परगतीए जाय तींहा कर्मभेळा जाय नारकी, दसभूवन-पति, व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक ए चवद दंडके

त्रण शरीर वैक्रीय, तेजस, कारमण, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वनस्पति, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरींद्रि, ए सात दंडके त्रण शरीर, उदारीक, तेजस, कारमण. वाउकाय अने तीर्यंज पंचिंद्रि, ए बे दंडके चार शरीर, उदारीक, वैक्रिय, तेजस, कार्मण, मनुष्यने पांच शरीर, ए शरीर द्वार. हवे चोथो अवगाहना द्वार कहे छे. सात नारकीनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतकीष्टो पांचसे धनुष. प्रथमनरके जघन्यथी त्रणहाथ उतक्रीष्टो पोणा आठ धनुषने छ अंगुल बीजो नरके जघन्यथी पोणाआठ धनुष अने छ अंगुल, उतक्रीष्टो साडा पंदर धनुष अने बार अंगुल. त्रीजी नरकेजघन्यथी साडा पंदर धनुषने बार अंगुल, उतक्रीष्टो एकत्रीस धनुषअने एक हाथ. चोथी नरकेजघन्यथी एकत्रीस धनुष अने एक हाथ, उतक्रीष्टो साडाबासठ धनुष्य

पांचमी नरकेजधन्यथी साडावासठ धनुष्य, उतक्रीष्टी सवासो धनुष छठी नरकेजघन्यथी सवासो धनुष्य, उतक्रीष्टी अढीसोधनुष सातमी नरके जघन्यथी अढीसो धनुष, उतक्रीष्टी पांचसे धनुष. वैक्रीय करे तो हजार धनुष, नारकी सा-तेने पोताना शरीरथी वैक्रीयशरीर बमणा करे. मनुष्यनी अवगाहनाजघन्यथी अंगुलनो असं-ख्यातमो भाग उतक्रीष्टी त्रण गाउनी वैक्रीय करेतो लाख जोजनथी कांइक अधिक सवा प-होरवार रहे. दसभुवनपतिव्यंतर, ज्योतिष, वै-मानीकनीजधन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतक्रीष्टी दसभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमा-नीक, सुधर्मा, इसानदेवलोके सात हाथनीकाय त्रीजे, चोथे देवलोके छ हाथनी काया पांचमे, छठे देवलोके पांच हाथनीकाया सातमे आठमे देवलोके चार हाथनी काया, नवमे, दसमे, अगीया-

रमे अने बारमे देवलोके त्रण हाथनीकाया. नवग्रैवेके बेहाथनी काया चार अनुत्तर विमाने एक हाथनी काया सर्वार्थ सीद्धे एक मुंढा हाथनी काया वैक्रीय करे तो लाख जोजननुं करे, पंदर दीवस सुधी रहे अने जघन्यथी तो सर्व थानके, अंगुलनो असंख्यातमो भाग पांच स्थावरनीजघन्य तथा उतकीष्टी पण अंगुलनो असंख्यातमो भाग पण वनस्पतिनो उतकीष्टो हजार जोजनथी अधीक, बे इंद्री, ते इंद्री, चौरिंद्रीनोजघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतकीष्टो बे इंद्रिनो बार जोजननुं, ते इंद्रिनुं त्रण गाउनुं, चौरिंद्रीनुं, एकजोजनतीर्यंज पंचिंद्रीनोजघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतकीष्टो हजारजोजन वैक्रीय करे तो नवसे जोजननुं, चार महुरत सुधी रहे. पेहेलो आरो बेसता त्रण गाउनी काया उतरता बे गाउनी काया बीजो आरो बेसता बे गाउनी काया उतरता एक गाउनी काया त्रीजो आरो बेसते एकगाउनी काया उतरते पांचसे धनुष्यनीकाया चोथो आरो

बेसते पांचसो धनुषनी काया उतरते सात हाथनी काया. पांचमो आरो बेसता सात हाथनी काया उतरते एक हाथनी काया छठो आरो बेसते एक हाथनी काया उतरते मुंढा हाथनी काया, हवे चडता आराछ छे. पेहेलो आरो बेसता मुंढा हाथनी काया उतरते एक हाथनी काया बीजो आरो बेसते एक हाथनी काया उतरते सात हाथनी काया. त्रीजो आरो बेसतेसात हाथनी काया उतरते पांचसे धनुषनी काया. चोथोआरो बेसते पांचसे धनुषनी काया उतरते एकगाउनी काया पांचमो आरो बेसते एकगाउनीकाया उतरते बे गाउनी काया छठो आरो बेसते बे गाउनी काया उतरते त्रण गाउनी काया ए चडता छआरा जलचर गर्भजनी हजार जोजननी काया, जलचर समुर्छीमनी हजार जोजननी काया थलचर गर्भजनी त्रण गाउनी काया थलचर समुर्छीमनी सातगाउनी काया. खेचर गर्भजनी नव धनुषनी काया, खेचर समुर्छीमनी नव धनुषनी काया उरपरी सर्प

गर्भजनी हजार जोजननी काया, उरपरी सर्प समु-
र्छीमनी नव जोजननी काया भुजपरी सर्पगर्भजनीनव
गाउनी काया ए उतकृष्टी, जघन्यथी तो सर्वनी
अंगुलना असंख्यातमा भागनी कायाएअवगाहना
द्वार हवे पांचमो संघयण द्वार कहे छे. वज्ररुषभना
राच संघयण, रुषभनाराच संघयण, नाराच संघयण,
अर्धनाराच संघयण, कीलीका संघयण, छेवठु संघ-
यण ए छ संघयण नारकी, दसभुवनपति, व्यंतर,
ज्योतिष, वैमानिक पांचस्थावर, ए ओगणीस दंडके
एके संघयण नथी. हाडका नहीं, मांस नही, रुधीर
नहीं, ते असंघयणी बे इंद्री, ते इंद्री, चौरींद्रीए त्रण
दंडके एक छेवठीउ. तीर्यंज पंचींद्री,मनुष्यने छए संघयण
समुर्छीम्, तीर्यंज पंचींद्रीने, मनुष्यने छेवठो संघयण
ए संघयणद्वार हवे संज्ञाद्वार कहे छे आहार संज्ञा,
भय संज्ञा, मइथुन संज्ञा, परीग्रह संज्ञा, क्रोध संज्ञा,
मान संज्ञा, माया संज्ञा, लोभ संज्ञा, उध संज्ञा,

लोक संज्ञा, सुख संज्ञा, दूख संज्ञा, दूर्गंग संज्ञा, शोक संज्ञा, मोह संज्ञा, धर्म संज्ञा, एसोल संज्ञा, मांहेथी बावीस दंम्के पनर संज्ञा होय, तीर्यंञपंचींद्री, अने मनुष्यने सोल संज्ञा होय. धर्म संज्ञा वधी ए ठट्ठो संज्ञाद्वार. हवे सातमो संस्थानद्वार कहेछे. सम चतुरस्त्र संस्थान, निग्रोद परीमंम्ल संस्थान, सादि संस्थान वामन संस्थान, कुब्ज संस्थान, हुंम्क संस्थान, नारकी पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ए नव दंम्के एक हुंम्क संस्थान होय दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक ए तेर दंम्के एक सम चतुरस्त्र संस्थान होयछे. तीर्यंज पंचींद्रीने, मनुष्यने छए संस्थान होय समुर्छीम तीर्यंच, मनुष्यने एक हुंम्क संस्थान होय ए संस्थानध्वार हवे कषायध्वार कहे छे. क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार कषाय चोवीसे दंम्के होय छे. देवताने लोभ घणो, नारकीने क्रोध घणो, तीर्यंचने माया घणी, मनुष्यने मान घणो ए कषाय-

ध्वार हवे नवमो इंद्रीयध्वार कहे छे. फरस इंद्री, रस इंद्री, घ्राण इंद्री, चक्षु इंद्री, श्रोत इंद्री, नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर. ज्योतीषी. वैमानीक, तीर्यंज पंचींद्री, मनुष्यने पांच इंद्री होय एकेंद्रीने फरस इंद्री अने बेइंद्रीने फरस अने रस इंद्री होय छे. तेइंद्रीने फरस इंद्री,रस इंद्री, घ्राण इंद्री होय चौरींद्रीने फरस इंद्री रस इंद्री, घ्राण इंद्री चक्षु इंद्री ए चार होय छे. हवे दसमो समुदघात ध्वार कहे छे. वेदनी समुद-घात, कषाय समुदघात, मरण समुदघात, वैक्रीय समुदघात तेजस समुदघात, आहारक समुदघात, केवली समुदघात, नारकीने, वाउकायने चार समु-दघात वेदनी, कषाय, मरण, वैक्रीय ए चारे होय दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक तीर्यंज पंचींद्री, ए चउद दंडके पांच समुदघात होय, वेदनी, कषाय, मरणांत, वैक्रिय, तेजस ए पांच होय बे इंद्री, ते इंद्री, चौरेंद्री, पृथ्वी, अप, तेउ, वनस्पति,

ए सात दंडके त्रण समुदघात होय. वेदनी, कषाय, मरणांत मनुष्यने साते समुदघात होय ए समुदघात द्वार. हवे अगीयारमो दृष्टीद्वार कहे छे. समकीत दृष्टी, मीश्र दृष्टी, अने मिथ्या दृष्टी. नारकी, दसभुवनपति, व्यंतर, ज्योतीष, वैमानिक तीर्यंच पंचींद्री अने मनुष्य ए सोल दंडके त्रणे दृष्टी होय पांच स्थावर ने एक मिथ्या दृष्टी होय त्रण वीगलेंद्री ने बे दृष्टी होय समकीत दृष्टी अने मीथ्यादृष्टी ए दृष्टिद्वार. बारमो दरसन द्वार कहे छे, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शन, नारकीने, दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीष, वैमानीक, तीर्यंचपंचेंद्री, ए पंदर दंडके त्रण दर्शन होय. चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन. पांच स्थावर ने एक अचक्षु दर्शन होय. बेइंद्री तेइंद्रीने एक अचुक्षु दर्शन होय, चौरींद्रीने चक्षु, अचक्षु, ए बे होय, मनुष्यने चारे दर्शन होय, ए दरसणद्वार. तेरमो ज्ञानद्वार कहे छे. मतीज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि

ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, वीभंग अज्ञान, पांच स्थावर ने बे अज्ञान होय, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान ए बे होय त्रण विगलेंद्री ने बे अज्ञान अने बे ज्ञान होय छे. मती ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान. नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक तीर्यंच पंचींद्री ए पंदर दंडके त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे मतीज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधी ज्ञान, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान मनुष्यने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय ए ज्ञानद्वार. जउ-वमो जोगद्वार कहे छे. चार मनना, चार बचनना अने सात कायाना एम पंदर जोग सत्य मन जोग, असत्य मन जोग, सत्यमृषा मन जोग. असत्य मृषा मन जोग. सत्य वचन जोग, असत्य वचन जोग, सतमृषा वचन जोग, असतमृषा बचन जोग, उदारीक काय जोग, उदारीक मीश्र-

काय जोग, वैक्रीयकाय जोग, वैक्रीय मीश्रकाय जोग, आहारककाय जोग, आहारक मीश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग, नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर ज्योतीषी, वैमानीकए चउद दंडके अगीयार जोग, चार मनना, चार वचनना, त्रण कायाना वैक्रीयकाय जोग, वैक्रीय मीश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग तीर्यंच पंचीद्रीना दंडके तेर जोग चार मनना, चार वचनना, पांच कायाना उदारीककाय जोग, उदारीक मीश्रकायजोग, वैक्रीयकायजोग वैक्रीय मिश्रकायजोग, कार्मणकाय जोग पांचे स्थावरमां थी चार स्थावर ने त्रण जोग, उदारीककाय जोग, उदारीक मिश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग वाउ कायना दंडके पांच जोग उदारिककाय जोग. उदारिक मिश्रकाय जोग. वैकीयकाय जोग; वैकीय मीश्रकाय जोग. कार्मणकाय जोग. बे इंद्री, ते इंद्री, चौरींद्री ए त्रणे दंडके चार जोग उदारीककाय जोग.

उदारिक मिश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग. असत्यमृषा वचन जोग. मनुष्यने पंदर जोग होय छे. ए जोगद्वार. हवे पंदरमो उपयोगद्वार कहे छे. उपयोग बार पांच ज्ञान त्रण अज्ञान; चार दर्शन मती ज्ञान, श्रुत ज्ञान; अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शन, नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक. तीर्यंच पंचेंद्री ए पंदर दंडके नव उपयोग त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान, त्रण दर्शन मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान. मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन. पांच स्थावर ने त्रण उपयोग; मति अज्ञान; श्रुत अज्ञान, अचक्षु दर्शन; ए त्रण बे इंद्री ते इंद्री बे पांच उपयोग; मती ज्ञान; श्रुत ज्ञान; मति अज्ञान; श्रुत अज्ञान, अचक्षु दर्शन ए पांच

चौरींद्रीने छ उपयोग होय मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन ए छ मनुष्यने बार उपयोग होय ए उपयोगद्वार सोलमो सतरमो उपजवा, चववानोद्वार कहे छे नारकी एक समये जघन्यथी एक, बे, त्रण आदेद इजावत उतकोष्टा संख्याता असंख्याता उपजे अने चवे दस भुवनपती व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक, ए तेर दंडके एक, बे, त्रण आदेदइने संख्याता असंख्याता उपजे ने चवे. तीर्यंच पंचींद्री एक, बे, त्रण आदे दइने संख्याता असंख्याता उपजे ने चवे, मनुष्यने एक, बे, त्रन, आदे दइने संख्याता उपजे ने चवे समुर्छिम मनुष्य असंख्याता उपजे अने चवे चार स्थावरमां असंख्याता उपजे ने चवे. वनस्पतिमां अनंता उपजे ने चवे. बेइंद्री, तेइंद्री, चौरींद्री एक, बे, त्रण, आदे दइ जावत उतकृष्टा संख्याता असंख्याता उपजे ने चवे ए उपजवाचववामोद्वार

हवे अढारमो आयुष्यद्वार कहे छे. सर्वे नारकीनुं आयुष जघन्यथी दसहजार वर्षनुं उतकीष्टो तेत्रीस सागरोपमनुं प्रथम नरके जघन्यथी दसहजार वर्षनुं उतकीष्टो एक सागरोपमनुं बीजे नरके जघन्यथी एक सागरोपम अने उतकृष्ट त्रण सागरोपम त्रीजी नरके जगन्यथी त्रण सागरोपमनुं उतकीष्टो सात सागरोपमनुं चोथी नरके जघन्यथी सात सागरोपम नुं उतकीष्टो दस सागरोपमनुं पांचमी नरके जगन्यथी दस सागरोपम अने उतकीष्टो सत्तर सागरोपमनुं छट्ठी नरके जघन्यथी सत्तर सागरोपमनुं उतकीष्टो बावीस सागरोपमनुं सातमी नरके जघन्यथी बावीस सागरोपननुं उतकीष्टो तेत्रीस सागरोपमनुं दस भुवनपतिना वीस इंद्रनां नाम कहे छे. चमर इंद्र, वल इंद्र, धर्मेंद्र, भूतानेंद्र, वणूदेव, वणूदालि, हरीकंत, हरी सींह, अग्नी सींह, अग्नी मानय, पूरण, विसस्ती, जलकंत, जलप्रभ, अमित गति, मरिगवाहन, विकंभ,

प्रभर्जन, घोस, महाघोस, ए वीस इंद्र मध्ये चमर इंद्रनी जातनो जघन्यथी दस हजार वर्षनुं, उतकृष्टो साडात्रण पल्योपमनुं बल इंद्रनो जघन्यथी दस हजार वरसनुं, उतकृष्टो एक सागरोपमथी अधीक एनी देवीनो जघन्यथी दस हजार वर्षनो उतकृष्टो, साडाच्चार पल्योपमनुं. हवे दक्षीण पासाना नव इंद्रनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो दोढ पल्योपमनुं हवे उत्तर पासाना नव इंद्रनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो वे पल्योपमनुं.

हवे ए इंद्रोनी देवीओनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो बे पल्योपमनो दक्षीणना नवे इंद्रनी देवीओनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो एक पल्योपमनु पृथ्वीकायनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं, उतकृष्टो बावीस हजार वरसनो.

हवे बादर पृथ्वीनो भेद करे छे. सनाह पृथ्वी गोपीचंदनादीकनो जघन्यथी अंतर मुहुर्तनो उतकृष्टो एक हजार वरसनो. बीजी शुद्ध पृथ्वी नदीनी भेखडादिकनो जघन्यथी अंतर मुहुरतनो उतकृष्टो

बावीस हजार वरसनुं. त्रीजी वालुका. चवेतवेलु प्र-
मुखनो जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं. उतकृष्टो चौद ह-
जार वरसनो चोथा मणसीला. हरीआंल सरमादीकनुं
जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं, उतकष्ट सोलहजार वरसनुं
पांचमी सरकरा सुवर्णादिक सात धातुनुं जघन्यथी
अंतर मुहुर्तनुं अने उतकष्टथी बावीस हजार वर्षनुं.
अपकायनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने उतकष्टथी
सात हजार वर्षनुं. तेउकायनुं जघन्यथी अंतर मु-
हुर्तनु अने उतकष्टथी त्रण अहोरात्रीनुं. वाउकायनुं,
जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने उतकष्टथी त्रण हजार
वर्षनुं. वनस्पातिकायनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं. अने
उत्कृष्टथी दस हजार वर्षनुं. बे इंद्रीनुं जघन्यथी अं-
तर मुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी बार वर्षनुं. ते इंद्रीनुं ज-
घन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी ओगणपचास
दीवसनुं. चौरिंद्रीनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने
उत्कृष्टथी छ मासनुं आयुष्य होय छे. तीर्यंच पंचें-
द्रिना पांच भेद छे. जलचर, थलचर, खेचर, उरपरी
सर्प, भूजपरी सर्प, एम पांच समुर्छीम् अने पांच ग-

र्भज मली दस भेद. ते मध्येथी समुर्छीम् जलचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्ट पूर्वक्रोड वरसनुं समुर्छीम् थलचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उ-त्कृष्ट चोरासी हजार वर्षनुं. गर्भज चोपगानुं जघन्यथी अंतरमूहुर्त उत्कृष्टथी त्रण पल्योपमनुं, समुर्छीम् खेच-रनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्टथी बोतेरहजार वर्षनुं, हवे गर्भज खेचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग. समु-र्छीम् उरपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी त्रेपन हजार वर्षनुं. गर्भज उरपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्टथी पूर्वक्रोडवरसनुं समुर्छीम् भुजपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी बेंतालीस हजार वर्षनुं तेमज गर्भज भुजपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्त अने उत्कृष्टथी पूर्व क्रोड वर्षनुं आयुष्य होय छे. हवे समुर्छीम् म-नुष्यनुं जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी अंतरमुहुर्तनुं. ग-र्भज मनुष्यनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी त्रण पल्योपमनुं. व्यंतर देवतानुं जघन्यथी दसह-जार वर्षनुं अने उत्कृष्टथी एक पल्योपमनुं. व्यंत-

रोनी देवीनुं जघन्यथी दसहजार वर्षनुं अने उत्कृ-
ष्टथी अर्ध पल्योपमनुं. ज्योतीर्षीना पांच भेद छे.
चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र. अने तारा, चंद्रमांनुं जघ-
न्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी एक
पल्योपम अने एक लाख वरसथी कांइक अधिक.
चंद्रमानी देवीनुं जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग
अने उत्कृष्टथी अर्ध पल्योपमने पचास हजार वर्षथी
कांइक अधिक. सूर्यनुं जघन्यथी पल्योपमनो चोथो
भाग अने उत्कृष्टथी एक पल्योपम अने एक हजार
वर्षथी कांइक अधिक. सूर्यनी देवीनुं जघन्यथी
पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी अर्ध पल्यो-
पम अने पचास हजार वर्षथी कांइक अधिक ग्रहनुं
जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी
एक पल्योपमनुं. ग्रहनी देवीनुं जघन्यथी पल्योपमनो
चोथो भाग अने उत्कृष्टथी अर्ध पल्योपम. नक्षत्रनुं
जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी
अर्ध पल्योपम, नक्षत्रनी देवीनुं जगन्यथी पल्योपमनो
चोथो भाग अने उत्कृष्टथी पल्योपमना चोथा भाग

थी कांइक अधिक. तारानुं जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्टथी पल्योपमनो चोथो भाग; तारानी देवीनुं जघन्यथी ताराथी अर्ध जाणवुं.

वैमानीक देवताओनुं आयुष्य कहे छे. सुधर्मा देवलोकनुं जघन्यथी एक पल्योपमनुं अने उत्कृष्टथी बे सागरोपम. इसान देवलोकनुं जघन्यथी एक पल्योपमथी कांइक अधिक उत्कृष्ट बे सागरोपमथी कांइक अधिक. परिग्रहीता देवीनुं जघन्यथी सात पल्योपमनुं अने उत्कृष्टथी पचास पल्योपमनुं. अपरी ग्रहिता देवीनुं जघन्यथी नव पल्योपमनुं अने उत्कृष्ट पंचावन पल्योपमनुं.सनतकुमार देवलोकनुं जघन्यथी बे सागरोपमनुं अने उत्कृष्ट सात सागरोपमनुं.चोथा माहेंद्र देवलोकनुं जघन्यथी बे सागरोपम अधिक अने उत्कृष्टथी सात सागरोपमथी कांइक अधिक. ब्रह्म देवलोकनुं जघन्यथी सात सागरोपमनुं उत्कृष्ट दस सागरोपमनुं छट्ठा लांतक देवलोकनुं जघन्यथी दस सागरोपमनुं उत्कृष्टथी चौद सागरोपमनुं. सातमां. माहा शुक्र देवलोकनुं जघन्यथी चौद सागरो

पमनुं उत्कृष्टथी सत्तर सागरोपमनुं. आठमां सहसार देवलोकनुं जघन्यथी सत्तर सागरोपमनुं अने उत्कृष्टथी अढार सागरोपमनुं. नवमां आणंत देवलोकनुं जघन्यथी अढार सागरोपम अने उत्कृष्टथी ओगणीस सागरोपम. दसमां प्राणंत देवलोकनुं जघन्यथी ओगणीस सागरोपम् अने उत्कृष्टथी वीस सागरोपमनुं. अगीआरमां आरण देवलोकनुं जघन्यथी वीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी एकवीस सागरोपमनुं. बारमां अच्युत देवलोक जघन्यथी एकवीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी बावीस सागरोपमनुं आयुष्य छे पहेली ग्रैवेकनुं जघन्यथी बावीस सागरोपम अने उत्कृष्ट त्रेवीस सागरोपम. बीजी ग्रैवेकनुं जघन्यथी त्रेवीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी चोवीस सागरोपम. त्रीजी ग्रैवेकनुं जघन्यथी चोवीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी पच्चीस सागरोपमनुं. चोथी ग्रैवेकनुं जघन्यथी पच्चीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी छव्वीस सागरोपमनुं. पांचमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी छव्वीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी सत्तावीस सागरोपमनुं छट्ठी ग्रैवेकनुं जघ-

न्यथी सत्तावीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी अठ्ठावीस सागरोपमनुं. सातमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी अठ्ठावीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी ओगणत्रीस सागरोपमनुं. आठमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी ओगणत्रीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी त्रीस सागरोपमनुं. नवमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी त्रीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी एकत्रीस सागरोपमनुं. हवे पांच अनुत्तर विमानमां वीजय, वीजयंत, जयंत, अपराजीत, ए चारनुं जघन्यथी एकत्रीस सागरोमनुं अने उत्कृष्टथी तेत्रीस सागरोपमनुं, अने पांचमां सर्वार्थसीद्धनुं जघन्य अने उत्ष्टकृथी तेत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य हाय छे.

पहलो आरो बेसते त्रण पल्योपमनुं आउखुं उतरवे ब पल्योपमनुं. बीजो आरो बेसते बे पल्योपमनुं उतरते एक पल्योपमनुं. त्रीजो आरो बेसते एक पल्योपमनुं उतरते पूर्व क्रोड वरसनुं. चोथो आरो बेसते पूर्व क्रोड वरसनुं उतरते सवासो वरसनुं पांचमो आरो बेसते सवासो वरसनुं उतरते वीस वर्षनुं. छठ्ठो आरो बेसते वीस वरसनुं उतरते सोळ

वर्षनुं ए उतरता आरा छे.

पहेलो आरो बेसता सोल वरसनुं आवखु उतरता वीस वरसनुं. बीजो आरो बेसता वीस वरसनुं अने उतरता सवासो वरसनुं आउखुं. त्रीजो आरो बेसता सवासो वरसनुं अने उतरता पूर्वक्रोड वरसनुं. चोथो आरो बेसता पूर्वक्रोड वरसनुं अने उतरता एक पल्योपमनुं. पांचमो आरो बेसता एक पल्योपमनुं अने उतरता बे पल्योपमनुं. छट्ठो आरो बेसता बे पल्योपमनुं अने उतरता त्रण पल्योपमनुं ए छ आरा चडता छे. ए आयुष्य द्वार. हवे ओगणीसमुं पर्याप्ति द्वार कहे छे. आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति इंद्रिय पर्याप्ति श्वासोश्वास पर्याप्ति भाषा पर्याप्ति, मन पर्याप्ति ए छ पर्याप्ति छे तेमां नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक, मनुष्य अने तीर्यंच ए सोल दंडके छ ए पर्याप्ति. पांच स्थावरने चार पर्याप्ति, आहार–शरीर–इंद्रीय अने श्वासोश्वास ए चार, बे इंद्री, ते इंद्री, चौरींद्री, अने असन्नी पंचेंद्रीने मन विना पांच पर्याप्ति होय छे, ए पर्याप्ति द्वार. हवे

वीसमो आहार द्वार कहे छे. ओजा आहार रोमा आहार अने कवल आहार एम त्रण प्रकारना आहार छे तेमां—नारकी—भुवनपती—व्यंतर, ज्योतीषी—वैमानीक अने पांचस्थावरो ए ओगणीस दंडकोने ओजा आहार अने रोमा आहार एम बे आहार होय छे, अने बे इंद्री—ते इंद्री—चौरिंद्री तथा तीर्यंच अने मनुष्य ए पांच दंडके त्रणे आहार होय छे. जीव चवे ते वखते—एक—बे—त्रण समय सुधी अणाहारी उपज्या पछी आहारी होय ए आहार द्वार.

अथ एकवीसमुं गतिद्वार.

गति—गमन करवुं—कया दंडकनो जीव कया कया दंडके जाय एम जे कहेवुं ते अहिं गतिद्वार जाणवुं.

नारकी जीवो नारकीमांथी नीकळी, गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्य एम बे दंडकमां जाय छे. दशभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्म तथा इशान देवलोकना देवो भवांतरे, पृथ्वीकाय, अप्का-य, वनस्पतिकाय, पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य एम

पांच दंडके जाय, तथा सनत् कुमारादिसहस्त्रार पर्यं-
तना देवो गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य एम बे दंडके
जाय, ने सहस्त्रारथी उपरना देवलोकना देवो एक
गर्भज मनुष्यनाज दंडके जाय छे. पृथ्वीकाय, अप-
काय,वनस्पतिकाय तथा बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरि
द्रिय ए छ दंडकना जीवो, भवांतरे पांच एकेंद्रिय,
त्रण विगलेंद्रिय, तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्यना
मळी दश दंडकने विषे जाय अने वाउकाय तथा ते
उकायनाजीवो ए उपर कहेलां दश दंडकमांथी एक
मनुष्यना दंडक सिवाय बाकीना नव दंडकने विषे
जाय छे. गर्भतिर्यंच पंचेंद्रिय अने गर्भज मनुष्यना
दंडकमांथी संख्याता आयुष्यवाळा जीवो पोताना
कर्मानुसार २४ दंडकमां जाय तथा असंख्याता आ-
युष्यवाळा तो तेर देवतानाज दंडके जाय छे.संख्याता
आयुष्यवाळा गर्भज मनुष्यमांथी वज्ररुषभनाराच
संघयणना धणी कोइक जीव आठे कर्म खपावीने
सिद्धगति मांहे पण जाय छे. एम सामान्ये चोवीसे
दंडकना जीवोनीगति कही.

हवे चोवीसे दंडकना जीवोनी गति पांचसेंने त्रेसठ जीवभेदने विषे कहे छेः—पहेलेथी छट्ठी नारकीना जीवो आयुक्षये नारकीमांथी नीकळीने पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्यपर्याप्ता, पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्य अपर्याप्ता तथा पांचगर्भजतिर्यंचपर्याप्ताने पांचगर्भजातिर्यंचअपर्याप्ता एवं चालीशजीवभेदने विषे जाय, तथा सातमी नारकीथी नीकल्यां जीवो तो पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ताने पांच गर्भज तिर्यंच अपर्याप्ता एमदशजीवभेदने विषे जाय छे. दशभुवनपति, सोलव्यंतर, पंदरपरमाधामी, दशतिर्यग् जृंभक, दशज्योतिषी, सौधर्म, इशान अने एक किल्वीषिय। एम चोसठ जातिनां देवोमांथी नीकल्या जीवो, पंदर कर्मभूमिनागर्भज मनुष्य अने पांच जातिना गर्भज तिर्यंच तथा बादर पृथ्वीकाय, बादर अपकायने बादरप्रत्येकवनस्पतिकाय मळी त्रेवीसपर्याप्ता तथा त्रेवीस अपर्याप्ता एवं छेताळीस भेदमां जाय छे. सनतकुमारथी मांडीने सहस्त्रार पर्यंत छ देवलोकना देवो, बे किल्वीषिया जातिना देवो अने नवलोकांतिकना

देवो एम सत्तर जातिना देवोमांथी नीकल्या जीवो, पांच गर्भज तिर्यंच अने पंदर कर्म भूमिना ममुष्य नामळी वीस पर्याप्ता तथा वीस अपर्याप्ता एवं चाळीस भेदमां जाय छे. नवमा आणत देवलोकथी मांडीने बारमा अच्युत देवलोक सुधीना चार देवलोकना देवो अने नव ग्रैवयक तथा पांच अनुत्तरविमानना देवो एसर्वे मळीने अढार देवलोकना नीकल्याजीव, ते पंदरकर्म भूमिना मनुष्यमां जाय छे. नारकीनो एक दंडक तथा देवताना तेर दंडक मळीने चौद दंडकनी गति कही. जीवमात्र उत्पति काळे अपर्याप्तावस्थाए होय अने पछीथी पर्याप्ता थाय, ए अपेक्षाए अहीं नारकी तथा देवतानी गति पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता जीवभेदे कहीछे तो ते करण अपर्याप्ता जाणवा. करण अपर्याप्ता जीव अवश्य पर्याप्ता थायज, तथा संग्रहणी विगेरेमां कह्युं छे के नारकी तथा देवता चवीने पर्याप्ता तिर्यंच अने मनुग्य थाय एमां कोइ विरोध नथी.

पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पति ाय तथा बे

इंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय एवं छ दंडकना जीवो आयुक्षये आप आपणा दंडकमांथी नीकळीने, पंदर कर्म भूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, एकसोनेएक समुर्च्छिम मनुष्य अने अडताळीसतिर्यंचना ए सर्वे मळीने एकसोने ओगणाएंशी जीवभेदने विषे पोतपोताना कर्मानुसार जाय छे. तेउकाय अने वाउकाय ए बे दंडकना नीकळ्या जीव. अडताळीस भेदना तिर्यंचमां जाय छे. एवी रीते बावीस दंडकनी गति कही.

गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवा जलचरजीवो आठमांथी बारमा देवलोके, नव ग्रैवेयके अने पांच अनुत्तर विमाने जाय नहिं माटे सर्व पांचसे ने त्रेसठ जीवभेदमांथी ए अढार स्थानकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्तामळी छत्रीस जीवभेद बादकरता बाकीना पांचसेंने सतावीस जीवभेदमां जलचर जीवो जाय छे. गर्भजउरपरिसर्पजीवो उपर कहेला पांचसेंने सत्तावीस जीवभेदमांथी सातमी अने छट्ठी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार भेद वर्जीने बा-

कीना पांचसेंने त्रेवीस जीवभेदमां जाय छे. गर्भज थलचर जीवो (चोपगा) उपर कहेला पांचसेने सत्तावीस जीवभेदमांथी सातमी, छठी अने पांचमीनारकीनापर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी छ भेद वर्जी ने बाकीना पांचसे ने एकवीस जीवभेदने विषे जाय छे. गर्भज खेचर जीवो उपर कहेला पांचसेंने सतावीस जीव भेदमांथी सातमी, छठी, पांचमी अने चोथी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी आठ भेद वर्जीने बाकीना पांचसेंने ओगणीस जीवभेदमा जाय छे. गर्भज भुजपरिसर्पजीवो उपर कहेला पांचसेंने सत्तावीस जीव भेदमांथी सातमी, छठी, पांचमी, चोथी अने त्रीजी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी दश भेद वर्जीने बाकीना पांचसेने सत्तर जीव भेदमां जाय छे. हवे असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवो आयुक्षये निकलीने त्रणसेंने पंचाणुं भेदने विषे जाय तेनां नाम कहे छे;—दश भुवन पति, सोल व्यंतर, पंदर परमाधामी, दशतिर्यग् जृंभक, छप्पन्न अंतर द्वीपना मनुष्यो, पहेली नारकी अने पंदर कर्म भू-

मिना मनुष्यो एवं एकसोने त्रेवीस पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळीने बसेंने छेताळीस तथा एकसोने एक समुछिम मनुष्यो अने अडताळीस भेद तिर्यचना गणतां त्रणसेंने पंचाणुं जीवभेद थया तेमां असंज्ञी तिर्यच पचेंद्रियनी गति जाणवी. एवं त्रेवीस दंडकनी गति कही.

मनुष्यना दंडके गति कहे छे. प्रथम समुर्छिम मनुष्य आयुक्षये, समुर्छिम मनुष्यमांथी नीकळ्या, पंदर कर्म भुमीज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म भुमिज अपर्याप्या, एकसोने एक समुर्छिम मनुष्य अने अडताळीस भेदना तिर्यच एवं एकसोने ओगणा एंसी जीवभेदमां जाय छे पंदर कर्म भुमिना गर्भज मनुष्योमांथी जीवो नीकळीने पांचसेंने त्रेसठ जीवभेदमां जाय छे. त्रीस अकर्म भुमिना मनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो, दशभुवनपति; सोल व्यंतर, पंदर परमाधामी, दशातिर्यग् ज्रंभक, दश ज्योतिषी, एक किल्वीषिया अने सौधर्म तथा इशान ए बे देवलोक मळी चोसठ जीवभेदमां जाय छे. छप्पन्न अंतर द्वीपनामनुष्यमां

थी नीकळया जीवो, दश भुवनपति, सोलव्यंतर, प
दर परमाधामी अने दश तिर्यग जृंभक एम एक
वन जीवभेदमां जाय छे. इति गतिद्वार.

अथ बावीसमुं आगतिद्वार.

आगति–आगमन–कया दंडकने विषे कयाक
दंडकना जीवो आवीने उपजे एम जे कहेवुं तेनुं ना
अहिं आगत्तिद्वार जाणवुं.

नारकी तथा देवताना मळी चौद दंडकने वि
एक तिर्यंच पंचेंद्रिय अने बीजा मनुष्य एम बे दं
क मांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. पृथ्वीकाय
अपकाय अने वनस्पतिकाय एम त्रण दंडकने वि
एक नारकीवर्जीने बाकीना त्रेवीशें दंडकमांहेथी जी
वोआवी उत्पन्न थाय छे. तेउकाय, वाउकाय, बे इं
द्रिय, ते इंद्रिय अने चौरिंद्रिय एम पांच दंडकने वि
थावरना पांच, विगलेंद्रियना त्रण, तिर्यंच पचेंद्रि
अने मनुष्य एम दश दंडक मांहेथी जीवो आवी उ
त्पन्न थाय छे. तिर्यंच पचेंद्रियना दंडकने विषे चो

वीशे दंडकमांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. मनुष्यना दंडकने विषे. तेउकाय अने वाउकाय सिवाय बाकीना बावीश दंडकमांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. एम सामान्य चोवीशे दंडकनी आगति कही.

हवे चोवीशे दंडके, पांचसे त्रेसठ जीवभेदमांथी आगति कहे छे—पहेली नरके. पंदरकर्मभूमीज गर्भज मनुष्य, पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने पांच समुर्छिमतिर्यंच पंचेंद्रिय एम पच्चीशभेदना जीव आवी उपजे. बीजी नरके. पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस भेदना जीव आवी उपजे. त्रीजीनरके. पंदर कर्म भूमिज गर्भज मनुष्य तथा गर्भज जलचर, थलचर, उरपारिसर्प अने खेचर एम ओगणिश भेद मांहेथी जीव आवी उपजे. चोथी नरके पंदरकर्मभूमिज गर्भज मनुष्य तथा गर्भज जलचर थलचर अने उरपारिसर्प एम अढार भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. पांचमी नरके पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य तथा जलचर अने उरपारिसर्प एम सत्तर भेदमांहेथी जीव आवी

उपजे. छट्ठीनरके पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य अने गर्भज जलचर एम सोल भेद मांहेथी जीव आवी उपजे. सातमी नरके पण पंदर कर्मभुमिजगर्भज मनुष्य अने जलचर एम सोलभेदमांहेथी आवी उपजे. नरकने विषे अपर्याप्ता जीवो जाय नहि ए. प्रकारे नारकीना दंडके आगति कही.

दशभुवनपति, सोल व्यंतर, पंदर परमाधामी अने दशतिर्यगज्रृंभक ए एकावनजातिना देवोनेविषे एकसो एक क्षेत्रना गर्भज ममुष्यपर्याप्ता, पांचगर्भज तिर्यंच पर्याप्ता अने पांच असंज्ञी तिर्यंच पंचांद्रिय एम एकसोने आगियार भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. दश प्रकारना ज्योतिषी अने सौधर्म एम आगियार जातीनां देवोने विषे पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य, त्रीस अकर्मभुमिज गर्भजमनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच एम पचास भेदमांहेथी जीवो आवी उपजे. बीजा इशान देवलोकने विषे पंदरकर्मभुमि, पांचहरिवर्ष, पांच रम्यक, पांचदेवकुरु ने पांच उत्तरकुरु एवं पांत्रीस क्षेत्रना गर्भज मनुष्यो तथा पांचगर्भजातिर्यंच एम चालीश भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. पहेला

किल्वीषिया जातिना देवोने विषे पंदर कर्मभुमि,पांच उत्तरकुरुने पांच देवकुरु एवं पचीस क्षेत्रना गर्भज मनुष्यो तथा पांचगर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम त्रीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. त्रीजाथी आठमासुधी छ देवलोक, नव लोकांतिक अने बे किल्वीषिया एम सत्तर जातिना देवोने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस भेदमांहेथी जीवो आवी उपजे. नवमा आणंत देवलोकथी मांडीने पांच अनुत्तर विमान पर्यंत्ना अढार देवलोकने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्यना भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. एवी रीते एक नारकीनो दंडक तथा तेर देवताना दंडक मळीने चौद दंडके आगति कही.

पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण दंडकनेविषे अडताळीसभेदना तिर्यंच, एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य तथा पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता,पंदर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता तथा पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, सोलव्यंतर, [illegible] जृंभक,दश ज्योतिषी, सौधर्म तथा इशान

अने एक किल्वीषिया जातिना देवो एम सर्वे मळी बसेंने त्रेंताळीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. ते उकाय, वाउकाय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय अने असंज्ञीतिर्यंच पंचेंद्रियने विषे एकसोनेएक समुर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्मभुमिज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म भुमिज मनुष्य अपर्याप्ता अने अडताळीस भेदना तिर्यंच एम एकसोने ओगणाएंसी भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवा जलचर, थलचर, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचरने विषे एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्मभुमिज मनुष्य अपर्याप्ता, अडताळीस भेदना तिर्यंच तथा पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, सोळव्यंतर, दश तिर्यग् जृंभक, दश ज्योतिष, त्रण किल्विषीया नव लोकांतिक अने सौधर्मथी मांडीने आठमा सहस्त्रार पर्यंत् देवलोक तथा सात नारकी एम सर्वे मळीने बसेंने सडसठ जीवभेद मांहेथी जीव आवी उपजे. त्रेवीस दंडके आगति कही.

समुर्च्छिम मनुष्यने विषे पंदर कर्म भुमिज म-

नुष्य पर्याप्ता, बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, सुक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता त्रण विकलेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता, तथा वीस तिर्यंच पंचेंद्रियना अने एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य एम सर्वे मळीने एकसोने इंकोतेर भेदमांथी जीवो आवी उपजे. पंदर कर्म भुमिज गर्भज मनुष्यने वीषे उपर कहेला एकसोने इंकोतेर जीवभेद तथा नव्वाणु देवताना भेद अने पहेलीथी छट्टीनारकी सुधीना नारकी एम सर्वे मळीने बसेंने छोंतेर भेदमांहेथी जीव आवीउपजे. त्रीस अकर्म भुमिना मनुष्यने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अने पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ता मळी वीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. छप्पन्न अंतर द्वीपना मनुष्यने विषे पंदर कर्म भुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता तथा पांच गर्भज तिर्यंचपर्याप्ता अने पांच समुर्च्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय

पर्याप्ता एम पच्चीसभेदमांहेथी जीव आवी उपजे. एवी रीते चोवीस दंडके आगति कही.

त्रेवीसमुं वेद द्वार कहे छे.

स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुषक वेद नारकी स्थावर अने त्रण विगलेंद्री एनव दंडके एक नपुंशक वेद होय छे, दसभुवन पती, व्यंतर, ज्योतीषी, अने वैमानीकने, स्त्री वेद अने पुरुष वेद एम बे वेद होय मनुष्य अने तीर्यंच पंचेंद्रीने त्रणे वेद होय ए वेद द्वार. हवे चोवीसमो भुवन द्वार कहे छे प्रथम नरके, त्रीस लाख नरकावासा. बीजी नरके, पच्चीस लाख नरकावासा. त्रीजी नरके, पंदर लाख नरकावासा. चोथी नरके, दस लाख नरकावासा. पांचमी नरके, त्रण लाख नरकावासा. छट्ठी नरके, पांच उणा एक लाख नरकावासा. अने सातमी नरके, पांच नरकावासा. सर्वे मलीने चोरासी लाख नरकावासा छे, पेहेली नरके तेर पाथडा, बीजी नरके अगीआर पाथडा, त्रीजी नरके नव पाथडा, चोथी नरके सात पाथडा, पांचमी नरके पांच पाथडा, छट्ठी नरके त्रण पाथडा अने सातमी नरके एक पाथडो, सर्वे मलीने

ओगणपचास पाथडा छे. पहेली. रत्नप्रभा, बीजी शर्करा प्रभा, त्रीजी वालुका प्रभा, चोथी पंकप्रभा, पांचमी धुम प्रभा, छट्ठी तम प्रभा, सातमी तमतमा प्रभा. रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाखने अेंसी हजार जोजन, शर्करा प्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाखने बत्रीस हजार जोजन, वालुका प्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाखने अट्ठावीस हजार जोजन, पंकप्रभा पृथ्वीनो पीं-ड एकलाखने वीस हजार जोजन, धुमप्रना पृथ्वीनो पींड एकलाखने अढार हजार जोजन, तमप्रभा पृ-थ्वीनो पींड एकलाखने सोलहजार जोजन, तमत-मा प्रभा पृथ्वीनो पींड एकलाखने अढार हजार जोजन. ए साते नारकीनुं जाडपणुं जाणवुं. रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एकलाख अेंसीहजार जोजन छे तेमां. थी एकहजार जोजन हेठे मुकी अने एकहजार जो-जन उपर मुकी वच्चे एकलाखने इट्ठोतेर हजारनुं पोहोलापणुं ते मांहे नरकावासा छे. अने तेमां दस भुवन पतीना भुवन छे, जघन्यथी जंबु द्वीप जेवडा मध्यमथी संख्याता जोजन प्रमाण अने उत्कृष्टथी असंख्याता जोजनना छे. हवे उपर एकहजार जोज-ननुं मुकेलुं छे तेमांथी सो जोजन हेठे अने सो जो-

जन उपरनुं मुकी बाकी वचमां रहेला आठसो जोजनमां आठ व्यंतर देवोना भुवनो छे ते जघन्यथी भरतक्षेत्रना प्रमाणवाला, मध्यमथी महाविदेह क्षेत्रना प्रमाणवाला अने उत्कृष्ट जंबुद्वीप जेवडा मोटा होय छे. वली उपरना भागमां सो जोजन रहेलुं छे तेमांथी हेठे दस जोजन अनी उपर दस जोजन मुकी वचमां रहेला ऐंशी जोजननी पहोलाइमां आठ वाणव्यंतर देवोना नगर छे ते जघन्यथी भरतक्षेत्र जेवडा अने उत्कृष्टथी जंबुद्वीप जेवडा होय छे. सुक्ष्म पांच स्थावरो चौद लोकमां व्यापेला छे. बादर पांच स्थावरो, विगलेंद्री तथा तीर्यंच पंचेंद्री लोकमां ठसो ठस छे, मनुष्य अढीद्वीपमां पीसतालीस लाख जोजन मांहे छे. हवे पांच ज्योतीषीना भेद कहे छे. समभुतला पृथ्वीथी सातसेने नेवुं जोजन उंचा जइए तो त्यां प्रथम तारा छे ते उपरे दस जोजन आवे सूर्य छे, ते उपरे त्रण जोजन आवे ब्रहस्पति छे, ते उपरे त्रण जोजन आवे मंगल छे, ते उपरे त्रण जोजन आव सनीसर छे एटले एकसो दस जोजन मांहे ज्योतीषीना असंख्याता बिमानो छे ते उपरे

एक राज उंचो सुधर्मा अने इसान देवलोक छे, सुधर्मा देव लोकमां बत्रीस लाख विमान, बत्रीस लाख देहेरा, अने तेमां जीन बिंब सत्तावन क्रोडने साठलाख छे. इसान देव लोके, अठ्ठावीसलाख विमान अने अठ्ठावीस लाख देहेरा छे, तेमां जीनबिंब पचास क्रोड अने चालीसलाख छे. सनतकुमार देव लोके बारलाख विमान अने बारलाख देहेरा छे, तेमां जीनबिंब एकवीस क्रोडने साठलाख छे, मांहेंद्र देव लोके आठ लाख विमान अने आठ लाख देहेरा छे, तेमां जीनबिंब चौद क्रोडने चालीसलाख छे. ब्रह्मदेव लोके चारलाख विमान अने चारलाख देहेरा छे, तेमां जीनबिंब सातक्रोड अने वीसलाख छे, लांतक देव लोके, पचास हजार विमान अने पचास हजार देहेरा छे, तेमां जीनबिंब नेवुलाख छे. सुक्र देवलोके चालीसहजार विमानने चालीसहजार देहेरा छे, तेमां जीनबिंब बहोंतेरलाख छे. सहसार देवलोके छ हजार विमानने छ हजार देहेरा छे, तेमां जीनबिंब दसलाख ऐंसीहजार छे. आणंत अने प्राणंत देवलोके चारसे विमान अने चारसे देहेरा छे,

तेमां जीनबिंब बहोतर हजार छे. आरण अने अ-
च्युत देवलोके त्रणसें बिमान अने त्रणसे देहेरा छे
तेमां जीनबिंब चोपन हजार छे. प्रथम त्री के एक-
सो अगीआर विमानने एकसो अगीआर देहेरा छे,
तेमां जीनबिंब त्रणसेनेवीस, बीजे त्रीके एकसो सात
विमान अने एकसो सात देहेरा छे, तेमां जीन बिंब
बारहजार आठसोने चालीस, त्रीजे त्रीके एक सो
विमान एकसो देहेरा अने तेमां जीनबिंब बारहजार,
पांच अनुत्तर विमान पांच विमाने, पांच देहेरा तेमां
जीनबिंब छसें छे. सर्व मलीने विमान चोरासी
लाख सत्ताणुंहजार नेत्रेवीस छे एटला देहेरा तेमां
जीनबिंब एकसो क्रोड बावन क्रोड चोराणुंलाख
चुंवालीसहजार सातसेंने साठ एउर्ध्व लोकनो सर-
वालो छे. हवे भुवनपतीनी संख्या कहे छे चमर इं-
द्रने चोत्रीसलाख भुवन, बलइंद्रने त्रीसलाख भुवन,
धरणेंद्रने चुंवालीस लाख भुवन, भुतानेंद्रने चालीस
लाख भुवन, वर्णुदेवने अडत्रीस लाख भुवन, वणु-
दालीने त्रीसलाख भुवन, हर्कितने चोत्रीस लाख
भुवन, हरीसेहने त्रीसलाख भुवन, अग्निसेहने चा-

लीसलाख भुवन, अग्नि मानवने छत्रीसलाख भुवन, पुरणीने चालीसलाख भुवन, विसष्टने छत्रीसलाख भुवन, जलकंतने चालीसलाख भुवन, जलप्रभने छत्रीसलाख भुवन, अमितगनीने: चालीसलाख भुवन, मरीगवाहनने छत्रीसलाख भुवन, विलंबने चालीस लाख भुवन, प्रभजनने, छेंतालीसलाख भुवन, घोसने पचासलाख भुवन, महा घोसने छेंतालीसलाख भुवन, सर्व इंद्रने सात क्रोडने बोंतेरलाख भुवन एटला देहेरा तेमां जीनबिंब तेरसे नव्यासी क्रोडने साठलाख छे. तीर्छा लोकमां बत्रीसहजार अने ओगणसाठ देहेरा तेमां जीनबिंब त्रगलाख एकाणुंहजार त्रणसेंवीस छे. व्यंतर अने ज्योतीषीमां असंख्याता जीनबिंब छे, एना भुवन अने देहेरा गणवा मां न आवे. हवे त्रणभुवनना देहेरानी संख्या कहेछे आठ क्रोडने सत्तावनलाख ओगणत्रीस हजार नेव्यासी एटला देहेरां, तेमां जीनबिंब, पंदरसने बेतालीस क्रोड अठ्ठावनलाख छत्रीसहजार अने एंशी एटला त्रणभुवनमां जीनबिंब जाणवा. सर्वार्थ सीद्धथी वार जोजन सीद्ध सीला छे ते लांबी अने पहोली पीसतालीसलाख जोजन छे वचमां आठ जोजन

जाडी छे छेडे अंगुलना असंख्यातमां भाग जेटली पातली छे, मांखीनी पांख जेवी ते उपरे एक जोजनमां सीद्धो छे गाउने छट्टे भागे अथवा जोजनना चोवीसमां भागे जइए ते वारे सीद्ध परमात्मा आवे ते सीद्ध परमात्मानी अवगाहना त्रणसे तेत्रीस धनुष्यने बत्रीस अंगुलनो प्रमाण छे एवा श्री सीद्ध परमात्मा छे. तेमने माहारो समय समय नमस्कार होजो. ए भुवन द्वार ॥ हवे पचीसमो प्राण द्वार कहेछे. प्राण दस छे, फरस इंद्री रसइंद्री, घ्राण इंद्री, चक्षु इंद्री, श्रोत इंद्री, मनोबळ, वचन बल, कायबल, श्वासोश्वास, आउखु, नारकी, दसभुवनपती, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक, तीर्यंच पंचेद्री अने मनुष्य ए सोल दंडके दस प्राण होय छे. पांच स्थावरने चार प्राण फरस इंद्री, कायबल, श्वासोश्वास अने आउखुं. तेइंद्रीनें सात प्राण, फरस इंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री, कायबल वचनबल, श्वासोश्वास अने आउखुं. चौरींद्रीने आठ प्राण फरस इंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री चक्षुइंद्री, कायबल, वचनबल श्वासोश्वास अने आउखुं. असन्नी पंचेद्रीने नव प्राण फरस इंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री, चक्षूइंद्री, श्रोतइंद्री, कायबल,

वचनबल, श्वासोश्वास अने आउखुं, ए प्राणद्वार—
हवे छवीसमुं संपदाद्वार कहेछे. संपदात्रेवीस छे, चक्र
रत्न, दंडरत्न, खडगरत्न, कांगीणीरत्न, मणीरत्न,
छत्ररत्न, चर्मरत्न, ए सातरत्न एकींद्री छे. गाथापती
पुरोहितररत्न, सेनापतिरत्न, वार्धिकरत्न, गजरत्न,
अश्वरत्न, स्त्रीरत्न, ए सात पंचींद्रीरत्न छे. तीर्थंकर,
चक्रवर्ती, वलदेव, वासुदेव, केवली, साधु, श्रावक,
अविरति—समकित दृष्टि, मांडलिकराजा, ए त्रेवीस
संपदा. पेलीनरकनो नीकल्यो सात एकींद्री विना
वाकीनी—सोलसंपदा पामे. बीजी नरकनो नीकल्यो
पंदर संपदा पामे, सतएकींद्री अने चक्रवर्ती वि-
नानी त्रीजी नरकनो नीकल्यो, सातएकींद्रीरत्न,
चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, विना तेर संपदा पामे.
चोथी नरकनो नीकल्यो. सात एकींद्रीरत्न, तीर्थंकर,
चक्रवर्ती बळदेव, वासुदेव, विना बार संपदा पामे.
पांचमी नरकनो नीकल्यो सात एकींद्रीरत्न, तीर्थंकर
चक्रवर्ती बळदेव, वासुदेव, अने केवली, विना अगी-
आर संपदा पामे. छट्ठी नरकनो नीकल्यो, सात पंचेद्री
रत्न, श्रावक, अविरती समकित दृष्टि, ए दस संपदा
पामे. सातमी नरकनो नीकल्यो, अश्वरत्न गजरत्न,

अविरती समकित दृष्टि, ए त्रण संपदा पामे. दस भु-
वनपती, व्यंतर, ज्योतीषीए बार दंडकमांथी नीक-
ल्यो, तीर्थंकर अने वासुदेव विना एकवीस संपदा
पामे पृथ्वी, अप, वनस्पति, तीर्यंच पंचीद्री अने
मनुष्य ए पांच दंडकमांथी नीकल्यो, तीर्थंकर, च-
क्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव विना ओगणीस संपदा
पामे. तेउकाय, वाउकायनो नीकल्यो, सात एकीं-
द्री रत्न अश्व रत्न, गज रत्न, ए नव संपदा पामे.
बे इंद्री ते इंद्री, चौरींद्रीनो नीकळयो, तीर्थंकर, च-
क्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, केवली, विना अढार सं-
पदा पामे. वैमानीकमां सुधर्मा, इशान देवलोकनो
नीकल्यो, त्रेवीस संपदा पामे. त्रीजा देवलोकथी
आठमा देवलोक सुधीनो नीकळी, सात एकींद्री
रत्न विना सोल संपदा पामे. नवमां देवलोकथी न-
वग्रैवेयक सुधीनो नीकल्यो सात एकींद्री रत्न, अश्व
रत्न, गजरत्न, ए नव विना चौद संपदा पामे. पांच
अनुत्तर विमाननो नीकल्यो तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बळ-
देव, केवली, साधु, श्रावक, मांडलीकराजा, अविर-
ती समकित दृष्टि, ए आठ संपदा पामे. ए संपदा
द्वार—सत्तावीसमो धर्मद्वार कहेछे. नारकी, दसभुवन

पती, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक, पांच स्थावरो, त्र-
ण विगलेद्रीए बावीस दंडके धर्म नथी. तीर्यंय पंचीं-
द्री अने मनुष्यने करणी रूप धर्म छे. ए धर्मद्वार—
हवे अठ्ठावीसमो योनी द्वार कहेछे पृथ्वी काय, अ-
पकाय, तेउकाय, अने वाउकाय ए चारने सात सा-
तलाख योनी छे प्रत्येक वनस्पतिकायने दस लाख
अने साधारण वनस्पति कायने चौदलाख योनी छे,
बे इंद्री, ते इंद्री अने चौरींद्रीने बेए लाख योनी छे,
तीर्यंय पंचेंद्रीने, नारकीने, देवताने ए दरेकने चार चार
लाखयोनी छे मनुष्यनी चौदलाखयोनी छे ए योनीद्वार
ओगणत्रीसमूं कुल कोडी द्वार कहे छे नारकीनी प-
चवीसलाख कूल कोडी भूवन पतीनी वीस लाख
कुल कोडी, व्यंतरनी त्रे लाख कुल कोडी, ज्योती-
षीनी बे लाख कुल कोडी, वैमानीकनी बे लाख कुल
कोडी, पृथ्वीकायनी बार लाख, अपकायनी सात ला-
ख, तेउकायनी त्रण लाख, वाउकायनी सात लाख,
वनस्पतिकायनी अठ्ठावीस लाख कुल कोडी, बे ईं-
द्रीनी सातलाख, ते ईंद्रीनी आठलाख अने चौरीं-
द्रीनी नवलाख कुल कोडी, जलचरनी साडाबारला-
ख, थलचरनी चौदलाख, खेचरनी बारलाख कुल

कोडी, उरपरी सर्पनी दसलाख, अने भुजपरी सर्प-
नी नवलाख कुल कोडी, मनुष्यनी बारलाख कुल
कोडी, सर्वे थइने एक क्रोडने सत्ताणुंलाख कुल
कोडी थई, ए कुल कोडी द्वार, त्रीसमो अल्प बहु
त्व द्वार सर्वथी थोडा गर्भज पर्यात्ता मनुष्य, तेथी
बादर अग्नि काय जीव असंख्यात गुणाअधिक तेथी
वैमानीक देवता असंख्यात गुणाअधिक, तेथी दस
भुवनपती देवता असंख्यात गुणा अधिक, तेथी
नारकीना जीव असंख्यात गूणा अधिक, तेथी व्यं-
तर असंख्यात गूणा अधिक, तेथी ज्योतीषी देवता
असंख्यात गूणा अधिक, तेथी चौरींद्रीना जीव अ-
संख्यात गुणा अधिक, तेथी तीर्यय पंचींद्रीना जीव वि-
शेषाधीक, तेथी बे इंद्रीना जीव विशेषाधिक तेथी ते
इंद्रीना जीव विशेषाधिक, तेथी पृथ्वीकाय जीव अ-
संख्यात गुणा, तेथी अपकायना जीव असंख्यात
गुणा अधिक, तेथी वाउकायना जीव असंख्यात गु.
णा अधिक, तेथी वनस्पतिकापना जीव अनंत गुणा
अधिक ए त्रीसमुंद्वार संपूर्ण.

दंडकना त्रीसद्वार संपूर्ण समाप्त,

श्री सम्यक्त्व विचार गर्भित

श्री महावीरजिनस्तवन.

ढाल पेहेली एछिंडीकिहां राखी एदेशी.

इगविध दुविध त्रिविध चउविधवलि ॥ पणविध दशविधजाणो ॥ ए समकित शिवतरूनुं बीजक ॥ संप्रति परें मन आणोरे ॥ प्राणी समकित शुध आराधो ॥ जेम शिवमारग साधोरे ॥ प्राणी० सम० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इगविध तुज आणा रुची दुविहा ॥ द्रव्य भावथी कहिये ॥ निश्चयने व्यवहारें अथवा ॥ समकित दुविध स-दइयें रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ सद्दहणा सूधी तुज आगम ॥ परमारथ नवीजाणे ॥ समकित द्रव्यथकी तस कहिये ॥ भावथी तत्व वखा-णेरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ मिथ्यापुद्गल शुद्धनु वेदन ॥ समकित द्रव्य कहावे ॥ भावथि तत्व रुचिपण तिमहिज ॥ तत्व रुची परिभावेरे ॥ प्रा० ॥ ४॥ पुद्गलरूपी अरुपी अ पुद्गल ॥ ए पण द्विविधनुं देखे॥ क्षायोपशमिकवेदक पुद्गल॥ शेष अपुद्गल अलेखेरे ॥ प्रा० ॥५॥निश्चय समकित शुभ, आतमनो ॥ ज्ञानादिक परिणाम ॥ अथवा आतम समकित कहिये ॥ गुण गुणी भेद न ठामरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ मि-थ्या दृष्टीतणी संस्तवना ॥ त्यागादिक व्यवहार ॥ वलिय निसर्गा-पर अधिगमथी ॥ बिहुं भेदे निरधाररे प्रा० ॥ ७ ॥ जिम कोई मा-रग भूलो पंथी ॥ भमतो मारग आवे ॥ कोइक उपदेशादिक योगे ॥ कोइक थाग न पावेरे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ ज्वर पण सहेजे औषध

योगे, जाये एक न जाय ॥ मारग ज्वर दृष्टांते समकित ॥ इणि परें द्विविधे थायरे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ जाती समरण प्रमुख थकी जे ॥ तास निसर्ग विचारो ॥ गुरुउपदेशादिकथी आव्युं ॥ ते अधिगम चित्त धारोरे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कारक रोचक दीपकभेदे ॥ त्रिविधे पण ए भाख्युं॥ अथवा उपशम क्षायोपशमिक॥क्षायिक भेदे दाख्युरे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ तें जिम भाख्युं ते तिम कीधुं ॥ ते कारक तस खास ॥ तुज धर्मोपरि रुचिथी रोचक ॥ नहि, किरिया, अभ्यासरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मिथ्या दृष्टि थको पण पोते ॥ धर्म कथादिक सारे ॥ दीपक परें परने दीपावे ॥ ते दीपक उपचारेंरे ॥ प्रा० ॥ ॥ १३ ॥ ते समकित जिम फरस्युं जीवे ॥ तिम तुज आगल दाखुं तुज आगम नय न्याय शुधोदधि ॥ परमारथ रस चाखुंरे ॥ प्राणी समकित सुद्ध अराधो ॥ १४ ॥

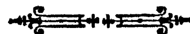


ढाल बीजी देवतुज सिद्धांत मीठो ए देशी.

वीर जिणेसर साहिब सुणजो ॥ निज सेवक अरदासरे ॥ दीन दयाकर ठाकुर आपो ॥ तुह्मचरणे मुज वासरे ॥ वी० ॥ १ ॥ लोकाकाशि रह्यो अविनाशी ॥ भाव अनादि अनंतरे ॥ ए भव चक्र तणा दुःख बहुला ॥ भोगवियां भगवंतरे ॥ वी० ॥ २ ॥ सूक्ष्मनिगोद वस्यो हुं स्वामी ॥ अनादि वणस्सइ नामरे ॥ तिहांमे कीध अनंता पुद्गल ॥ परावर्त्तविण स्वामिरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ अव्यवहाररासें इम वसिओ ॥ काल अनंतो भोगेरे ॥ कर्मपरिणाम नृपति आदेशे ॥ तादश भव्यता योगेरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ तिहां एकण सासो-

सासमें कीधां ॥ भवसतरे जाजेरारे ॥ ए दुख तुजविण कुण छोडावे ॥ स्वामी मुज भवफेरारे ॥ वी० ॥ ५ ॥ व्यवहाररासी लइ उतकर्षे ॥ काल अनंत अनंतोरे ॥ थुल निगोदने पृथवी पाणी ॥ तेज अनिल त्रस जंतोरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ तिहांपण हुं वसिओ तुम पाखे ॥ मिथ्या मतने जोरेरे ॥ हरिहर देव करीमें मान्या ॥ तुं न चढ्यो मन मोरेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ तेण में छेदन भेदन ताडन ॥ भूख तृष गुरु भाररे ॥ गर्भवासने जन्म जरा दुख ॥ भोगवियां निरधारे ॥ वी० ॥ ८ ॥ इम चउगइ भवना दुख फरसी ॥ वार अनंती अनाणीरे ॥ पाला दृष्टांते इग पुद्गल ॥ परावर्त्त स्थिति आणीरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ भव्यपणादिक न परिपाके ॥ गिरिसरि दुपल न्यायें ॥ अध्यवसाय विशेष करण जे ॥ अनाभोगथी थाय रे ॥ वी० ॥ १० ॥ ते त्रिविधे भाख्युं तिहां पहेलुं ॥ यथाप्रवृत्त वली बीजुं ॥ करण अपूरव नामे कहीयें ॥ अनिवृत्त करण ते त्रीजुंरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ यथा प्रवृत्त करणे आयुविण ॥ सात करम करी खीणां ॥ कोडा कोडी सायर इगपलनो ॥ असंख्य भाग तिणे हीणरें ॥ वी० ॥ १२ ॥ इहां कर्कस निबिड गुपिलजिम ग्रंथी भेदन दुक्कर कामरे ॥ कर्म परिणाम जनित घन जीवनो ॥ रागद्वेष परिणामरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ते ग्रंथी नवी भेदी जीवे ॥ पहेलि इणे संसाररे ॥ वार अनंति अभव्य पण आवे ॥ ग्रंथी लगें निरधाररे ॥ वी० ॥ १४ ॥ भव्य अभव्य रहे तिहां ग्रंथी ॥ संख्य असंख्य कालरे ॥ अरिहंतादिकनी ऋद्धि देखी ॥ संयमने उजमालरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ तिहा लहे श्रुत समायक द्रव्यें ॥ सेष लाभ नही तास

॥ तिहांथी ग्रैव्यकेपण जीवे ॥ पण नहि शिवपुर वासरे ॥ वी० ॥
॥ १६ ॥ कोइक भव्य महातम तेहमां ॥ जेहने भवनो पाररे ॥ नि-
शित कुठार धारें जिम ततखिण ॥ भेदे बल मनोहाररे ॥ वी० ॥
॥ १७ ॥ करण अपूरव परम विशुधे ॥ तिमते ग्रंथी आयरे ॥
भेदीने अंतर मूहूरतमां ॥ अनिवृत्तिकरणे जायरे ॥ वी० ॥ १८ ॥
॥ मिथ्यामोह तणीस्थिति तेहनु ॥ अंतरमुहूरत एकोरे
॥ उदय क्षण उपरें ओलंघी ॥ ते समरथ सुविवेकोरे ॥ वी० ॥
॥ १९ ॥ अनिवृत्ति करण विशेषे अंतर ॥ मुहूरतकाल अनूपोरे ॥
अंतरकरण करे तिहां वेद्यजे ॥ दलिक अभाव सरुपोरे ॥ वी० ॥
॥ २० ॥ जिमवनदवदग्धे घन उखर ॥ पामी ठाम उल्हायरे ॥
तिम मिथ्या वेदन वनदव सम ॥ अंतरकरणे थायरे ॥ वी० ॥२१॥
अंतरकरण करे मिथ्यातनी ॥ थितियुग कहे जिन न्यानेरे ॥ अंतरक-
रण थकी थिति हेठी ॥ पहेली मुहूरत मानेरे ॥ वी० ॥ २२ ॥
तेहथी उपरली थिति बीजी ॥ तिहां प्रथम स्थिति जाणोरे ॥ मि-
थ्यादलीकनुं वेदन तेहथी ॥ मिथ्यादृष्टी वखाणोरे ॥ वी ॥ २३ ॥
अंतरमुहूरत ते थितिनाशे ॥ नही मिथ्यादल वेदोरे ॥ अंतरकरणनो
प्रथम समय तिहां ॥ लहे उपशम निरवेदोरे ॥ वी० ॥ २४ ॥ पर-
मानंद मगन होइ भटजिम ॥ जीती कटक अशेषरे ॥ न्यायवंत हरषे
जिम गाढे ॥ न्याय धनागम पेखरे ॥ वी० ॥ २५ ॥



॥ ढाल त्रीजी सहीरेसमाणी ए देशी.

॥ इणीपरें तुजथी समकित फरस्युं ॥ जेहथी भवथी भवजल

तरस्युंरे ॥ धनधन तुम सेवा ॥ एथी मन वंछीत फल लेवा ॥ ते करवा मुज हेवारे ॥ ध० ॥ १ ॥ तिहां कोइ देश विरति तससरसी सर्व विरतिलहे हरिसीरे ॥ ध० ॥ मिच्छामयण कोद्रव सरिखुं ॥ उपशम ओषधपरखुंरे ॥ ध० ॥ २ ॥ जल वस्त्रादिकनेदृष्टांते ॥ तुज आगम कहेखांतेरे ॥ ध० ॥ मिथ्यापुंजकरेत्रणसोधी ॥ उपशम करीशुभबोधीरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ शुद्धने अर्द्ध विशुद्धते बीजो ॥ अविशुद्ध मतरीजोरे ॥ ध० ॥ उपशमथी पडिओमनवामे ॥ क्षायोपशमिक पामेरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ मिश्र तथा मिथ्यात्वने फरसे ॥ करम मतीइम हरसेरे ॥ ध० ॥ बीजुंक्षायोपशमिक कहिये, उपशमपरिपण लहियेंरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ मिच्छापुंजकरीत्रिण निरणे ॥ कोई अपूरव करणेरे ॥ ध० ॥ शुद्धपुज तिहांवेदतोज्ञानी, जिनवचनामृतपानीरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ उपशमपाम्याविग तुजनामे ॥ क्षायोपशमिकपामेरे ॥ ध० ॥ यथाप्रवृत्तिकरणत्रयक्रमथी ॥ अंनरकरणेतुजथीरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ जेलहेउपशम भवजल तरवा ॥ तसत्रणपुंजन करवारे ॥ ध० आलंबन अलहंती ईयल, जिमसंठाण नमूकेरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ मिश्र पुंज अणलाभी उपशमे ॥ तिममिथ्याते ढूकेरे ॥ ध० ॥ उपशमसमकितथीतिणिपडिओ ॥ जइ मिथ्या गुण अडिओरे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इम सिद्धांतीनिज मत खोले ॥ कल्पभाष्यपण बोलेरे ॥ ध० ॥ ते त्रणपुंजनुंसंक्रमभाखुं ॥ जिनवयणेमनराखुंरे ॥ ध० ॥ १० ॥ मिथ्या दलिकथीपुद्गल खिंची ॥ समकितदृष्टीविंचीरे ॥ ध० ॥ संकरमावे समकित मीसें ॥ शुभपरिणामे हिंसेरे ॥ ध० ॥ ११ ॥ समकितदृष्टी मीस आकर्षी ॥ समकितमांहेहर्षीरे ॥ ध० ॥ संकरमावे मिथ्यादृष्टी

॥ मिथ्यामांगुणपृष्टीरे ॥ ध० ॥ १२ ॥ समकित पुद्गल मिथ्यामांहे ॥ पण मीसें नवि चाहेरे ॥ ध० ॥ मिच्छाखीण नहीछे जेहने ॥ ते त्रण पुंजछे तेहनेरे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मिच्छाखीण थये दोय पुंजी ॥ मीस खये एक पुंजीरे ॥ ध० ॥ क्षायक समकित पुद्गल नाशे ॥ जिन आगम इम भासेरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सोधित मयण कोद्रवा थाने ॥ समकित पुद्गल मानेरे ॥ ध० ॥ तेहने विरुध तैलादिक पाशे ॥ शुद्धपणु तस नासेरे ॥ १५ ॥ तिमज कुशास्त्र कुतीर्थिकसंगे ॥ तस किरिया मन रंगेरे ॥ ध० ॥ मिथ्या, मिश्रित समकित जाये ॥ तत- क्षण मिथ्या थायरे ॥ ध० ॥ १६ ॥ समकितथी पडिऊंजो पाछुं ॥ वली समकितलहे आछुंरे ॥ ध० ॥ ते त्रण पुंज करे तिहां फेरी ॥ मिच्छ अपूर विवेरीरे ॥ ध० ॥ १७ ॥ अनिवृत्ति बलें ते रसीओ ॥ समकित पुंजे वसीओरे ॥ ध० ॥ समकित परेजिहां विरतिनेपावे ॥ आद्यकरण बे आवेरे ॥ ध० ॥ करण अपूर्व्व कालने आगे ॥ वि- रतिलही तिहां जागेरे ॥ ध० ॥ १८ ॥ अंतरमुहुरतमां तस लाधे ॥ निज परिणामे वाधेरे ॥ ध० ॥ उंचो नियम नही तिहां कोई ॥ वृद्धि हाणी सम होईरे ॥ ध० ॥ १९ ॥ अनाभोग परिणामनी हाणे ॥ गइ विरति नवी जाणेरे ॥ ध० ॥ अकृत करण थको ते प्राणी ॥ फिरी लहे विरति सुहाणीरे ॥ ध० ॥ २० ॥ आभोगें जे विरतिथी खसिया ॥ तिमज मिथ्यागुणे वसियारे ॥ ध० ॥ अंतरमुहूरतमां लहे आछी ॥ जघन्य थकी फिरी पाछीरे ॥ ध० ॥ २१ ॥ उत्कर्षे बहुकालें भाखी ॥ आद्य करणछे साखीरे ॥ ध० ॥ इणीपरे कर्मप्र- कृति वृत्तिमांहे ॥ तिहां जोजो उच्छांहेरे ॥ ध० ॥ २२ ॥ कोइ विरा

धित समकेत फेरी ॥ ते लहे मिथ्या वेरीरे ॥ ध० ॥ छठीनरक लगें ते जाय ॥ समय मतें कहेवायरे ॥ ध० ॥ २३ ॥ आऊ बंधविना ऊच्छाहे ॥ फिरी समकित अवगाहेरे ॥ ध० ॥ वैमानिकविण आउ न बांधे ॥ कर्म मती मत सांधेरे ॥ ध० ॥ २४ ॥ समकित पतित कहे मतबांधे ॥ उत्कृष्टी स्थिति बांधेरे ॥ ध० ॥ भिन्न ग्रंथिने आगम न्याने ॥ स्थिति उत्कर्ष न मानेरे ॥ ध० ॥ २५ ॥ इणीपरें भेद मतांतर जाणे ॥ पण संदेह न आणेरे ॥ ध० ॥ निःशांकित तुज वयण आराधे ॥ न्यायें तस गुण वाधेरे ॥ ध० २६ ॥



॥ढालचोथी विनयवहोसुखकार अथवा सालिभद्रभोगीरहो एदेशीछे.॥

॥ दर्शन मोह विनाशथीजी ॥ जेनिर्मल गुणठाण ॥ ते समकित ओघे कह्युंजी ॥ ते भवियण हित आणरे ॥ जिन जी तुज आणासुरंग ॥ मुझ नगमे मिथ्यासंगरे ॥ जि० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ मिच्छा दरसण मोहनीजी ॥ उपशमि उपशमजाण ॥ धुरग्रंथी भेदे कह्युंजी ॥ उपशमश्रेणी प्रमाणरे ॥ जि० ॥ २ ॥ नाश उदीरण मिच्छनोजी ॥ अनुदीरण समठाम ॥ क्षयउपशमथी उपजेजी ॥ क्षयोपशमिका नाम रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ त्रिविधि मोह विनासथीजी ॥ त्रीजुंक्षायिकनाम क्षपकश्रेणी चढतांहुएजी ॥ जेहथी शिवपुर ठामरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ विपाक प्रदेशें वेदवुंजी ॥ द्विविध उदय विष्कंभ ॥ उपशमतुं तेहने कहेजी ॥ आगममां थिरथंभरे ॥ जि० ॥ ५ ॥ नाश विपाकोदय थकी जी ॥ वेदन तेहनुंरे नाम ॥ उपशमि ते नवि संभवेजी ॥ क्षा-

योपशमिक ठामरे ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिच्छा पुद्गल वेदवाजी ॥ शुद्ध अशुद्ध तिहां दोय ॥ विपाक प्रदेशोदय थकीजी ॥ अनुक्रमे समजी जोयरे ॥ जि० ॥ ७ ॥ अण चउ दुग मिच्छा तणाजी ॥ पुंज खपावीरे होय ॥ शुद्धपुंज खपतां तिहांजी ॥ अंतिम पुद्गल होयरे ॥ जि० ॥ ८ ॥ तस वेदन तेहने कह्युंजी ॥ वेदक चोथुंरे नाम ॥ उपशम वमतां पांचमुंजी ॥ सासादन गुण धामरे ॥ जि० ॥ ९ ॥ अंतरमुहूरत एकनी जी॥ उपशम स्थिति उवेख ॥ उत्कर्ष षट आवली जी ॥ जघन्य समय होय शेषरे जि०॥१०॥ अशुद्धपुंज जावा तणीजी ॥ इच्छायें तिहां तास ॥ अण कसाय उदयें हुयेजी ॥ जेहथी उपशम नाशरे ॥ जि० ॥ ११ ॥ उपशमथी पडताथकाजी ॥ न गयो मिच्छा रे जाव ॥ तावत सासादन कह्युंजी ॥ उपशम स्वाद सहावरे ॥ जि० ॥ १२ ॥ अंतरमुहूरत कालनीजी ॥ उपशम स्थिति गुणखाण ॥ सासादन षट आवलीजी ॥ वेदक समय प्रमाणरे ॥ जि० ॥ १३॥ स्थिति सागर तेत्रीसनीजी ॥ साधिक क्षायक जाण ॥ वमणी स्थिति एहथी कहीजी ॥ क्षायोपशमिक ठामरे ॥ जि० ॥ १४ ॥ उपशम सासादन कह्युंजी ॥ आभव वेलारे पंच ॥ वेदक एक वेला हुयेजी ॥ तिमहिज क्षायक संचरे ॥ जि० ॥ १५॥ वार असंख्य उत्कर्षथीजी क्षायोपशमिक होय ॥ हवे तस गुणठाणा कहुंजी ॥ सांभलजो सहु कोय रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ उपशम अडगुण ठाणमांजी, अविरत गुण पदरेख ॥ क्षायक गुणठाणे सवेजी ॥ आदिम त्रणविणशेषरे ॥ जि० ॥ १७ अविरति गुणठाणा थकीजी ॥ जावत सत्तम ठाण ॥ एक वेदक बीजु इहांजी ॥ क्षायोपशमिक जाणरे ॥ जि० ॥ १८ ॥ सा-

सादन सासादनेजी ॥ भाखे अंग उवंग ॥ न्याये शिवसुख ते लहे जी ॥ जशतुज आण अभंगरे ॥ जि० ॥ १९ ॥

॥ ढाल पांचमी शांतिसुधारस कुंडमां तुंरमे मुनिवर ए देशी. ॥

धन धन शासन ताहरुं ॥ माहरुं जिहांमन लीनरे ॥ क्षण पण तसविण नविरहे ॥ जिमजल भर विण मीनरे ॥ धन० ॥ १ ॥ देश विरति दरशणथकी ॥ पलिय, पहुत्तमां जाणिरे ॥ अनुक्रमे चरण-श्रेणीबिहुं ॥ संख्यसायर गुण खाणिरे ॥ धन० ॥ २ ॥ तेहिज भवें हुए तेहने ॥ जेहनेसत्तगखीणरे ॥ चउतियभव उत्कर्षथी ॥ पुव्वबद्धा उये पीणरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ बद्धायु सुर नगरनुं ॥ तेहने तियभव तंतरे ॥ आउ असंख्यनर तिरितणु ॥ तसपण चउभवें अंतरे ॥ धन० ॥ ४ ॥ समकित स्थितिहोए ओगथी ॥ अंतरमूहूरत एकरे॥ साहिय खओवसमासिरी ॥ सायर छासट्ठि छेकरे ॥ धन० ॥ ५ ॥ इग अ-थवा बहु आसरी ॥ दरसणनो उपयोगरे ॥ जघन्य उत्कृष्ट थकी कह्यो ॥ अंतरमूरत भोगरे ॥ धन० ॥ ६ ॥ दरसणलब्धि शुभ सुर-लता ॥ क्षयोपशमादिक रूपरे ॥ अंतरमूहुरत माननी ॥ जघन्यथी कहेजिनभूपरे ॥ धन० ॥ ७ ॥ छासठ सायर सविमली ॥ नरभव हिय उतकृष्टरे ॥ तेहथी उर्द्ध जो नविदिए ॥ समकित रयणने पृष्टरे ॥ धन० ॥ ८ ॥ ने निश्चय शिवपदलहे ॥ ए एकजीवने योगरे ॥ जीवनानाश्रित सर्वदा ॥ दरसणनो उपयोगरे ॥ धन० ॥ ९ ॥ अंत-रमुहुरत एकनुं ॥ जघन्य अंतरमन आणरे ॥ अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनुं

॥ तस उत्कृष्ट परिमाणरे ॥ धन० ॥ १० ॥ जीव नानाश्रित नवि होए ॥ समकित अंतर लेशरे ॥ तत्र आवश्यक वृत्तिमां ॥ ए अधिकार विशेषरे ॥ धन० ॥ ११ ॥ दशविध सहज उपदेशथी ॥ उपशम प्रमुख जे पंचरे ॥ अहव निसग्ग रुइ भेदथी ॥ दशविध तस परपंचरे ॥ धन० ॥ १२ ॥ निसग्गुवएस आणारुइ ॥ सुत्त बीयरुइ अभिरामरे ॥ अभिगमा भोग किरियारुई ॥ संखेव धम्म रुइ नामरे ॥ धन० ॥ १३ ॥ गुरुउपदेशविण सहेजथी ॥ जिनवयणे परतीतरे ॥ जेहने तेहने जाणजो ॥ प्रथम निसर्ग रुचि रीतरे ॥ धन० ॥ १४ ॥ तेसवि गुरुउपदेशथी ॥ सद्दहे जे जण आपरे ॥ ते उपदेशरुचि नर कह्यो ॥ इम तुज आगम थापरे ॥ धन० ॥ १५ ॥ कारण प्रमुख अजाणतो ॥ मुझ जिन आणज खेमरे ॥ तइय आणरुचि तुं कहे ॥ भाख तूपादिक जेमरे ॥ धन० ॥ १६ ॥ सूत्र भणतो समकितलहे ॥ प्रसन्न प्रसन्न परिणामरे ॥ गोविंद वाचकनीपरे ॥ सुत्तरुई तसनामरे ॥ धन० ॥ १७ ॥ देशरुई खओवसमथी ॥ सव्वरुई विस्तारिरे ॥ उदकमां तेलबिंदुपरे ॥ बीयरुइ भवतारिरे ॥ धन० ॥ १८ ॥ अभिगम रुई सुअनाणने ॥ अरथथकी अवगाहेरे ॥ अंगपइन्न प्रमुखजे ॥ शास्त्र सव्वेनिरवाहेरे ॥ ॥ धन० ॥ १९ ॥ द्रव्यना भाव जाण्याजिणे ॥ सर्व्व प्रमाणे असेसरे ॥ सर्वनयेतिम तसकह्युं ॥ विच्छार रुई अकलेशरे ॥ धन० ॥ २० ॥ दंशणनाण चारित वली ॥ तिमतिन यो त्तम कामरे ॥ सुमति गुपतिकिरियारुचे ॥ तेकिरिया रुइनामरे ॥ धन० ॥ २१ ॥ आगम कोविद नवीहुए ॥ कुमय कुदिट्ठीवि जुत्तरे ॥ संखेवरुई तेहने कह्युं ॥ जिमचिलातिय पुंत्तरे ॥ धन० ॥ २२ ॥ धम्म

धम्म प्रमुख द्व्व ॥ चरण सुय धम्मना भेदरे ॥ जेजिन भाषित
हे ॥ तेधम्मरुई निरवेदरे ॥ धन० ॥ २३ ॥ एदशविध दरशण
हुं, उत्तराध्ययनमजाररे ॥ अध्ययने अडवीसमें ॥ न्याय सागर
खकाररे ॥ धन० ॥ २४ ॥



ढालछट्ठी माइ धन्नसुपनतुंदेशी.

जडजलपणपोते सिंच्युकाठनबोले ॥ तससंगतिलोहुं तेहनेपण
सतोले ॥ तेम हुं गुणहीणो तोपण दास तुमारो ॥ अवगुणउवेखी
भुजी पारउतारो ॥ १ ॥ तुं गुणमणि दरिओ उद्धरिओं जगजेणे ॥
जकांइनतारयो तुज संगतिनही तेणे ॥ अलगो तहिंविलगो तुंमुझ
देलथीदेव ॥ अविचलपदआपो ॥ ढीलतणीसीटेव ॥ २ ॥ नहीता मुझ
ावे नहीमुकुंकरुंसोर ॥ जालीदिलभीतर धालीकरसुंजोर ॥ जासो
केम दीधा, विणशिवसुखजिनराज ॥ सहेजे जो देशो तो रहेशे तुम
ाज ॥ ३ ॥ अविनयमुझखमजो हुंछुं मूढअयाण ॥ करतांनविआवे
ीनतडीजिनभाण ॥ बालक जेमबोले कालोगहिलोबोल ॥ तेमात
पितामन, लागे, अमृततोल ॥ ४ ॥ इणिपरे प्रभुस्तविओ समकित
लेशविचारे ॥ आगमअनुसारे मुझमतिने अनुहारे ॥ संवतरुतुरसमुनि
चंद्रसंवत्सरजाणी ॥ १७६६ ॥ भादरवेमासे सीतपंचमीगुणखाणि ॥
॥ ५ ॥ श्रीतपगच्छनायक श्रीविजयरत्नसूरिंद ॥ सुरगुरुजश आगलें
करजोडेमतिमंद ॥ तसराजेपंडित उत्तमसागरसीस ॥ कहेन्यायसागर
प्रभु पूरोसंघजगीस ॥ ६ ॥



अथ श्री पंडित उत्तम विजयजीकृत संयम श्रेणीनुं स्तवन.

॥ ढाल पहेली प्रथम गोंवालातणेभवेजी एदेशी. ॥

केवल ज्ञान दिवाकरूजी ॥ सिद्ध बुद्ध सुखदाय ॥ आतम संपद भोंगवेजी ॥ वर्द्धमान जिनराय ॥ गुणोदधि शासन नायक वीर ॥ मेरू महिधर धीर ॥ गुणो० ॥ शास० ॥१॥ एआंकणी ॥ अनुक्रमि संयम फरसतोजी ॥ पाम्यो क्षायक भाव ॥ संयमश्रेणी फूलडेजी ॥ पूजुं पद निष्पाव ॥ गु० ॥ २ ॥ वाचक जशविजयें रच्योजी ॥ संखेपें सज्जाय ॥ विस्तरि जिन गुण गावतांजी ॥ जीहां पावन थाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ बारकषाय खय उपशमेजी ॥ सरव विरति गुणठाण ॥ तेना आदिम ठाणमांजी ॥ पर्यवनुं परिमाण ॥ गु० ॥ ४ ॥ सरवाकाश प्रदेशथीजी ॥ अनँत गुणा अविभाग ॥ बृहतकल्पना भाष्यमांजी ॥ भाखे तुं महा भाग ॥ गु० ॥ ५॥ भाग अनंते आदिथीजी ॥ बीजे ठाणे वृद्धि ॥ इम अनंत भागुत्तरेजी ॥ थानकनि होय सिद्धि ॥ गु० ॥ ६ ॥ अंगुल भाग असंखमांजी ॥ जे आकाश प्रदेश ॥ तेता थानक नीपजेजी ॥ कंडक तास निवेस ॥ गु० ॥ ७ ॥ बीजा कंडक ठाणमांजी ॥ आदि असंख्यांस जाण ॥ तदनंतरनंत भागनाजी ॥ थानक कंडक माण ॥ गु० ॥ ८ ॥ इम नंत भाग वृद्धिनेजी ॥ कंडक कंडक मध्य ॥ ठाण असंख्यांस वृद्धिनाजी ॥ कंडक माने लद्ध ॥ गु० ॥ ९ ॥ ते आगेंनंत भागनाजी ॥ थानक कंडक मात

॥ तदनंतर संख्य भागनुंजी ॥ थानक एक विख्यात ॥गु० ॥१०॥ ते ऊपर द्वय वृद्धिनाजी ॥ जेता ठाण अतीत ॥ ते कीधे संख्यभाग-नुंजी ॥ बीज्युं ठाण पवित्त ॥ गु० ॥ ११ ॥ इम वृद्धि द्वय अंतरेजी ॥ कंडक माने इट्ठ ॥ अंससँख्यातें वृद्धिनाजी ॥ थानकजिनवर पुट्ठ ॥ गु० ॥ १२ ॥ वलि पूरव द्वय वृद्धिनाजी ॥ थानक सरव करेह ॥ आगल गुण संख्यातनुंजी ॥ थानक एक धरेह ॥ गु० ॥ १३ ॥ इम त्रिक वृद्धिने अंतरेजी ॥ गुण संख्यातना ठाण ॥ कंडक माने नीपजेजी ॥ जाणे तुं वर नाण ॥ गु० ॥ १४ ॥ पुनरपि त्रिक वृद्धी तणाजी ॥ पूरी थानक सर्व ॥ असंख्यात गुण वृद्धिनुजी ॥ थानक एक अगर्व ॥ गु० ॥ १५ ॥ चउरंतर चउरंतरेंजी ॥ थानक कंडक मेय ॥ असंख्यात गुण वृद्धिनाजी ॥ पंडीत वीर्य वरेय ॥गु०॥१६॥ उपर वली चउ वृद्धिनाजी ॥ फरसे थानक सार ॥ तदनंतरनंत गुण नुंजी ॥ थानक एक उदार ॥ गु० ॥ १७ ॥ पंच पंच वुद्धी विचेंजी ॥ ठाण एक इक जोय ॥ इम अनंत गुण वुद्धिनाजी ॥ कंडक माने होय ॥ गु० ॥ १८ ॥ उपर वली पंच वृद्धिनाजी ॥ फरसे संयम ठाण ॥ प्रवचन अनुसारें कह्युंजी ॥ षट थानक परिमाण ॥ गु० ॥ १९ ॥ असंख्य लोकाकाशनाजी ॥ प्रदेश ने परिमाण ॥ इक षट थानक ऊपरेंजी ॥ ऊठे वलि षट ठाण ॥ गु० ॥ २०॥ ए संयम गुण ठाणमांजी ॥ जे वरते मुनि सोय ॥ वंद्य अपर भजनापणेंजी ॥ भाष्यकल्पमां जोय ॥ गु० ॥ २१ ॥ षट थानक संयम तणाजी ॥ कहेतां स्तवतां वीर ॥ क्षमाविजय जिन भक्तिथीजी ॥ उत्तम लहे भव तीर ॥ गु० ॥ २२ ॥

ढाल बीजी सुरतीमहीनानीदेशी.

वस्तु स्वभाव प्रकाशक भाशित लोगालोग ॥ वीर जगत गुरु भोगवे रत्नत्रयीनो भोग ॥ संयमना षट थानिक सूक्षम बुद्धि गम्य ॥ स्व पर बिबोधन हेतें थापुं यंत्र सुरम्य ॥ १ ॥ भाग अनंतह वृद्धिना ठाणछे कंडक सार ॥ छे यद्यपि ते असंख्यात ठवुं तस बिंदु चार ॥ असंख्य भाग वृद्धिनुं थानक आगल एक ॥ तस ठामें ठवुं एको मन धरी अतिहि विवेक ॥ २ ॥ चउ चउ विंदु अंतर इम होय एकाचार ॥ तदनंतर चउ बिंदु सघलां वीस उदार ॥ आगल भाग संख्यातह वृद्धिनो बीओ जाण ॥ इम चउ बिया ठवतां मींडां शत परिमाण ॥ ३ ॥ चउ बीआ वीस एका मींडा शत समुदाय ॥ भागनी वृद्धि मांहे थयां हवे गुण वृद्धि कहाय ॥ संख्यात गुणनी वृद्धिमां तीओ आदि उदार ॥ इम सवि मींडां अंका विच ठवि तिआ चार ॥ ४ ॥ वीस बीआ शत एका पण सय विंदु मान ॥ असंख्यात गुण वृद्धि नो चोको धुरि मंडाण ॥ इम चउ चोका आणतां तिक वीस द्विक शत जोय ॥ पण सय एकडा मींडा पंचवीससें होय ॥ ५ ॥ हवे अ-नंत गुण वृद्धि पदे ठवि पंचक चंग ॥ पुनरपि पूरव रीतें मींडां अंक सुरंग ॥ तिवार पछी पंचक इम पंचक चउ जब थाय ॥ आगें पण पंचवीससें मींडां अंक कराय ॥ ६ ॥ पांचडा चोगडा त्रगडा बगडा एकडा बिंदु ॥ षट थानकनां यंत्रनी संख्या कहे जिनचंदु ॥ चउ वीस सय पणसय पंच वीस सय सार ॥ अंका मींडा गणतां साढा बारहजार ॥ ७ ॥ संयम श्रेणिमां श्रेणि क्षपक लहि सुक्क ध्यान ॥

घाती करमनो क्षयकरी पाम्यो पंचम ज्ञान ।। प्रवचनसारनी वृत्तिमां यंत्रनी ठवणा दीठ ।। क्षमाविजय जिन वयणथी उत्तम चित्त पविठ्ठ।।८।।

ढाल त्रीजी एकवीसानी देशी.

आतम रामीरे, शिव विसरामी नित्यनमु ।। प्रभुजी स्तवतांरे पाप पोताना निगमु ।। षटथानिकरे जे अह ठाण परूपणा ।। सुणो प्रदणारे वयणा कलपनी भाष्यना ।। १ ।। त्रूटकः—आदि असंख अंस वृद्धिथी कह्यो ।। भाग अनंत अंस केटलां ।। हेठथानिक एम पूछत ।। कइयें कंडक जेतलां ।। भाग संख्या तह गुण संख्याते असंख अनंतह गुण वली ।। तस प्रथमथी कहे अथ अनंतर ।। कंडक माने केवली ।। २ ।। इत्यनंतरमार्गणा एकांतररे मार्गणा सुणो सवि अंतरे ।। भाग संख्यातेंरे मूल थानकथी तंतरे ।। हेठे थानिकरे भाग अनंतना भाखीयें ।। एककंडकरे कंडक वर्गते दाखीयें ।। ३ ।। त्रूटक ।। दाखीयें गुण संख्यातथी वली ।। असंख अनंत गुणथी तथा ।। प्रथम ठाणथी एक अंतर ।। कंडक वर्ग कंडक यथा ।। इति एकांतर मार्गणा ।। एक अंतर मार्गणा कही ।। सुणो द्व्यंतर मार्गणा ।। संख्यात गुणथी हेठथानक अनंत भागना सुभमना ।। ४ ।। कंडक घनरे, कंडक वर्ग दु, गुणो करो ।। एक कंडकरे तस संख्या मनमां धरो ।। दुग अंतररे असंख्य अनंत गुणथी लह्यां ।। अथ स्थानकरे पूरव परें जाणो कह्यां ।। ५ ।। इति द्विकांतरमार्गणा त्रूटकः—त्रिके अंतर कोई पूछे ।। आदि असंख्य गुण वृद्धिथी ।। हेठें भाग अनंत केरां ।। ठाण कहो गुरु वयणथी ।। कंडक वर्गनुं वर्ग कीजे ।। कंडक घन त्रिक उपरें

॥ कंडक वर्ग त्रिक एक कंडक ॥ होए ते मनमां धरे ॥ ६ ॥ छट्टी वृद्धिनारे पहेला ठाणथी हेठलां ॥ बीय वृद्धिनारे थानक पूरव जेतलां ॥ इति त्रिकांतर मार्गणा, चउरंतररे अनंतगुणा दिम ठाणथी ॥ हेठ थानकरे भाग अनंत ना मानथी ॥ ७ ॥ त्रूटक, परिमाणथी ते अष्ट कंडक ॥ वर्गवर्गा षट घना ॥ चार कंडक वर्ग आगल ॥ एक कंडक सोभना ॥ इति चतुरंतर मार्गणा, पर्यवसाननी मार्गणा ते ॥ षट थानिक पूरे करे ॥ मूलथी संयम ठाण फरसी ॥ वीर विभू केवल वरे ॥ ८ ॥ उपर मध्यथीरे संयम थानिक जे भजे ॥ नियमारे हेठ उतरी पुनरपी सजे ॥ अंतर्मुहूर्त्तनीरे वुद्धी हानि ठाणमां ॥ होय मुनि नेरे ज्ञानीदेखे ज्ञानमां ॥ ९ ॥ त्रूटक ॥ अप्पबहुअ विचार करतां अनंत गुणना थोडला ॥ तेहथी गुणह असंख्य केरा ॥ कंडक वर्ग कंडक भलां ॥ पच्छानुपूर्वि वुद्धि उत्तर एहन्यायें भावीयें ॥ क्षमाविजय जिन चरण उत्तम भक्तिभावें पावीये ॥ १० ॥

ढाल चोथी रागधन्याश्री कलसरूप.

गायो गायोरे भलें वीर जगतगुरू गायो ॥ एआंकणीछे संयम श्रेणी थानक षटविधठवणा यंत्र बनायो ॥ अह ठाण परूपण करतां ॥ मनुज जनम फल पायोरे ॥ भलें० ॥ १ ॥ शुद्ध निरंजन अलख अगोचर ॥ एहिज साध्य सुहायो ॥ ज्ञानक्रिया अवलंबी फरसो ॥ अनुभव सिद्धि उपायोरें ॥ भलें० ॥ २ ॥ श्रद्धा ज्ञान लह्यां छे तोपण ॥ जोनवि जाय पमायो ॥ वंध्य तरु उपमते पामे ॥ संयम ठाणजो नायोरे भले० ॥ ३ ॥ जम खर चंदन भारनो वाहक ॥

भारनो भागी कहायो ॥ तिनिपरें ज्ञानी संयम हीनो ॥ सदगतीयें नविजायोरे ॥ भलें० ॥ ४ ॥ आश्रव त्यागें संवर परिणति ॥ अविरति सरव उठायो ॥ स्व स्वरूपमां थिरता तेहिज ॥ संयम शुद्ध ठहरायोरे ॥ भलें० ॥ ५ ॥ अनुभव सुरतरु फलने काजे ॥ कीजें आत्म अमायो ॥ सन मुखभावें जेह प्रवर्त्तन ॥ तेह निवर्त्त निदायोरे ॥ भलें० ॥ ६ ज्ञानक्रिया दुग चक्रें शोभित ॥ संयम रथ सुखदायो ॥ अनुभव धोरी युत शिव नगरे ॥ जाता विघ्ननथायोरे ॥ भलें० ॥ ७ ॥ रायसिद्धारथ वंश विभूषण ॥ तिसलाराणीजायो ॥ अजअजरामर सहेजानंदी ॥ ध्यान भूवनमां ध्यायोरे ॥ भलें० ॥८॥ संवत नंद निधि मुनि चंद्रे ॥ देव दयाकर पायो ॥ प्रथम जिनेसर पारण दिवशे ॥ स्तवना कलश चढायोरे ॥ भलें० ॥ ९ ॥ विजयदेवसूरीस पटोधर ॥ विजयसिंह सवायो ॥ सत्यशिष्याधार कपूरविजयबुध ॥ क्षमाविजय पुण्य पायोरे ॥ भलें० ॥ १० ॥ सूरतमांहे सूरय मंडण ॥ श्रीजिन विजय पसायो ॥ विजयदयासूरिराजे जगपति ॥ उत्तम विजय मल्हायोरे ॥ भलें० ॥ ११ ॥

अथ श्रीतारंगगिरितीर्थमंडन श्रीअजितनाथजिन स्तवन.

ढाळ १ ली.

राग—मेडी उपर मेह झरोखे वीजळी हो लाल—ए देशी.

आणंद अधिक उच्छाह धरी दिलमां घणो हो लाल धरो०
बहुदिननो उमाह सफळ थयो मुझतणो हो लाल सफळ० ॥ १ ॥
भवतारण तारंग अचल जव निरखीओ हो लाल अचल०

भवतारण तारंग अचल जब निरखीओ हो लाल अचल०
हीयडुं हेज विलास धरी घणुं हरखिओ हो लाल धरी० ॥ २ ॥
दंड कलस अभिराम ध्वजाश्युं सोहतो हो लाल ध्वजा०
गगनशुं मांडे वाद प्रासाद मन मोहतो हो लाल प्रासाद० ॥ ३ ॥
कुमारपालनरिंद परमश्रावक कर्यो हो लाल परम०
धन्य धन्य हेमसूरींद जेणे नृप उद्धर्यो हो लाल जेणे० ॥ ४ ॥
तेणे कीधो कुमारविहार नामे देवकुल भलो हो लाल नामे०
महीयलमांहि जयंत जाणे त्रिभुवनतिलो हो लाल जाणे० ॥ ५ ॥
बेठा अजितजिणंद गजांक मनोहरु हो लाल गजांक०
विजयामात मल्हार सोभागी सुंदरु हो लाल सोभागी० ॥ ६ ॥
षटऋतुनी वनराजि विराजे बहुपरे हों लाल विराजे०
कोडिशिला जिहां दीठे भविजन मन हरे हो लाल भवि० ॥ ७ ॥
तारणदेवीनाम अछे रखवालिका हो लाल अछे०
ए गिरिनी मनोहार भविक सुखदायिका हो लाल भविक० ॥ ८ ॥
चार पाजे चढी चउगति दुःख निकंदीये हो लाल दुःख०
भेटी अजितजिनंद सदा आणंदीये हो लाल सदां० ॥ ९ ॥
तोरण थंभ उत्तंग केगरनी कोरणी हो लाल केगरनी०
पूतळीरूप अनूप शोभा अतिउगणी हो लाल शोभा० ॥ १० ॥
सिद्धाचलसम एह आनंदपुर पासथी हो लाल आनंद०
सफळ करो अवतार सुदर्शनवासथी हो लाल सुदर्शन० ॥ ११ ॥

ढाळ २ जी.

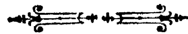
राग—नणदलनी देशी.

साहिब अजितजिणंद अवधारीये, दासतणी अरदास हो;
सा० श्रीतारणगिरिमंडणो, महीमां महिमनिवास हो ॥सा०॥१२॥
सा० गुण अनंत छे ताहरे, तो कां न दिओ एक हो;
सा० तिणगुणथी तुझने मिल्यो, भक्तितणे सुविवेक हो ॥सा०॥१३॥
सा० रयणायर एक रयणडे, देतां न होय हाणि हो;
सा० तिणे नाशे लोकनी आपदा, वाधे सुजसनी वाणी हो॥सा०॥१४॥
सा० सुनजरथी होइ, सेवक शुद्ध सुवोध हो;
सा० तरणिप्रभा पण दुरथी, करे कमलाकरबोध हो ॥सा०॥१५॥
सा० गिरुआ गुणवंता जिके, होय ते समभाव हो;
सा० न्हानां म्होटां नवि गणे, सविने तारे नाव हो ॥सा०॥१६॥
सा० हाथे दोय कुसुमांजली, वासे वाम अवाम हो;
सा० चंद्रज्योति सघळे समी, उंच नीच गुणधाम हो ॥सा०॥१७॥
सा० मेह महीतले वरसतां, न गणे ठाम कुठाम हो;
सा० चंदन निजवासे करी, तरुवर परिमल धाम हो ॥सा०॥१८॥
सा० फलदल जाया बहु करे, पंथीजन विश्राम हो;
सा० वाटे जे सुरतरु फळ्या, उपगारी गुणधाम हो ॥सा०॥१९॥
सा० न्हाना सामुं विशेष जे, साहिबने चित्त होय हो;
सा० निर्गुण पण गुणवंत ते, लोक कहे सहुकोय हो ॥सा०॥२०॥
सा० इम जाणीने तारीये, वीनतडी दिल आण हो;

सा० आवी लाग्या पाउले, तेहने शी करो ताण हो ॥सा०॥२१॥
सा० लोचन लटके ताहरे, तरीया सेवक लाख हो;
सा० कहो तेणे श्युं आपीयुं, ते प्रभु मुजने दाख हो ॥सा०॥२२॥
सा० चित्त धरश्यो तो पूरशो, ए निश्चयमहाराज हो;
सा० सेवक पण सुखीयो होये, वधशे साहिब लाज हो ॥सा०॥२३॥
सा० ज्ञानविमल तेजे तपे, प्रभुतासुंदरी साथ हो;
सा० महेर धरीने मानीये, वीनतडी जगनाथ हो ॥सा०॥२४॥

कलश.

भवभ्रांतिवारण जगततारण, तारंगगिरिवरमंडणो,
श्रीअजितजिनवर नाणदिणयर, दुरिततिमिरविहंडणो;
चउतीस अतिशय रयण मणिगण, भवणवण रयणायरो,
श्रीज्ञानविमलसूरींदवंदित, सकलमंगल सुहंकरो. ॥ २५ ॥



अथ श्रीराणकपुरतीर्थनुं स्तवन.

ढाळ १ ली.

राग—डुंगरवारु—ए देशी.

प्रहसमे प्रणमी प्रेमशुं रे लाल, गाउं ऋषभजिणंदरे; मनमोहन म्हारा.
सफल मनोरथ माहरोरे लाल, उल्लस्यो अंगे आणंदरे मन. ॥प्रह.॥१
त्रिभुवनतिलक सोहामणो हो लाल, मोटो पुहवि प्रासाद रे मन०
उन्नत उंचपणे करी रे लाल, करे गगनशुं वादरे मन० ॥प्रह०॥२॥

सिद्धनिलयने पहोंचवा रे लाल, उभाव्यो मानुं थंभ रे मन०
जोतां तृप्ति न पामीये रे लाल, छुटीजे भवदंभरे मन० ॥प्रह.॥३॥
नलिनीगुल्मविमाननी रे लाल, मांडणी एह अचंभरे मन०
पूतळी मिसे मानु आवीने रे लाल, जोवा थिर थई रंभरे मन. ॥प्रह.४॥
मोटो देश मेवाड छे हो लाल, जिहां राणिकपुर अभिराम रे मन०
पोरवाड तिहां परगडोरे लाल, धन्नोशा जस नामरे मन. ॥प्रह.॥५॥
धन्य धानलदे तेहनीरे लाल, तरुणी पुण्यप्रधान रे मन०
धर्मकारज करी मोटिकारे लाल,अविचल राख्युं नाम रे मन. ॥प्रह.॥६
अट्ठमपोसहे आदरी रे लाल, धरतां धर्मनुं ध्यान रे मन०
सुधर्मवासी सुर कहेरे लाल, वांछित देउं दानरे मन. ॥प्रह.॥७॥
वर मांग्यो देवलतणोरे लाल, अनोपम अतिहि उद्दाम रे मन०
पट्ट आलेखी आपीयोरे लाल, सुरविमान उपमान रे मन.॥प्रह.॥८॥
देपा शिलावटने दियोरे लाल, कोरणी वितथ न होय रे मन०
पत्थरखाण कही तिहां रे लाल, विघन नहि ईहां कोयरे मन.॥प्रह.॥९

ढाळ २ जी.

राग—कोइ लो पर्वत धुंधलो रे लोल—ए देशी.

संवत चौदपंचाणुमां रे लोल, शुभमुहूरते शुभवाररे जिणंदराय.
मोटे मंडाणे मंडावीयो रे लोल, धरणे ऋषभविहार रे जिणंदराय.
॥ आवो आवो श्रीजिन वंदीयेरे लोल ॥ १० ॥ आंचली०॥
भ्रह्मांड मांडी मांडणी रे लोल, कीधां वळी पंचमेर रे जिणंद०
प्रौढो प्राकार चिहुं दिशेरे लोल, मानुं मोहने करवा जेररे जिणंद०
॥ आवो० ॥ ११ ॥

देहरी चोराशी दीपतीरे लोल, चिहुं दिशे पोळ छे चाररे जिणंद०
लखचोराशीयोनिमे रे लोल, मानुं चौगइभ्रमण निवाररे जिणंद०
॥ आवो० ॥ १२ ॥

उन्नत शिर थांभा भला रे लोल, चौदसयां चौवीश रे जिणंद०
तोरणओलि सोहामणीरे लोल, एक एक दिशे बत्रीसरे जिणंद०
॥ आवो० ॥ १३ ॥

विविधप्रकारे कोरणी रे लोल, पूतळी गणीय न जाय रे जिणंद०
मंडप चार चिहुंदिशेरे लोल. रंगमंडप सुखदाय रे जिणंद०
॥ आवो० ॥ १४ ॥

सहस्रकूट तेमां सोहीये रे लोल, अष्टापद प्रतिबिंबरे जिणंद०
नवनिधिपरे नव भूहरां रे लोल, तिहां अनेकजिनबिंबरे जिणंद०
॥ आवो० ॥ १५ ॥

रायणतळे प्रभुपादुका रे लोल, मानुं त्रिहुं भूमि उत्तंगरे जिणंद०
॥ आवो० ॥ १६ ॥

स्वर्गे शाश्वत देहरां रे लोल, तिम पुहवीतळे एह रे जिणंद०
ए समवड जे आणीये रे लोल, तेहवो न दीठो कोयरे जिणंद०
॥ आवो० ॥ १७ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—धोरणीमां—ए देशी.

संवत चौदसत्ताणुए रे, शुदि पंचमी शुभ योग;
मासवैशाखतणी भली रे, आणी बहुविध रंग रे.
॥ श्रीजिन सेवीये ॥ १८ ॥

सुविहिततपगच्छ यतिपति रे, श्रीसोमसुंदरसूरि;
करे प्रतिष्ठा अतिभली रे, वाजते मंगलतूर रे ॥ श्री० ॥ १९ ॥
मूळनायक श्रीऋषभजी रे, चउमुख थापे रे तेह;
समवसरणनी थापना रे, चउगतिवारक तेह रे ॥ श्री० ॥ २० ॥
परिकरयुत त्रिहुं भूमिका रे, त्रिभुवननो उद्धार;
चउवीससहसने माजनेरे, बिंबप्रतिष्ठा तेणीवाररे ॥ श्री० ॥ २१ ॥
नाटक विविधप्रकारनां रे, ओछव अतिघणा थाय;
संघ आवे दशदिशितणा रे, भेटी पावन थाय रे ॥ श्री० ॥ २२ ॥
अचल हुओ अवनीतळे रे, तीरथ महिमावंत;
धरणविहार मनोहररे, जस गुणनो नहि अंतरे ॥ श्री० ॥ २३ ॥
आजलगे तेह चैत्यनी रे, पूजा भक्ति विशेष;
दिन दिन थाये दीपती रे, थापे पुण्यनी रेख रे ॥ श्री० ॥ २४ ॥
चिहुं दिशना संघ सामटा रे, जो आवे समवार;
पण संकटता नवि हुवेरे, एहवो चैत्यविस्ताररे ॥ श्री० ॥ २५ ॥
शाश्वत चैत्य ते सांभरे रे, दीठे हणि प्रासाद;
जन्म सफल तेहनो हुवेरे, नाशे सवि विषवाद रे ॥ श्री० ॥ २६ ॥
चार प्रासाद पासे अछे रे, पुण्यतणा ते ठाम;
आजलगे थाता अछे रे. बिंबप्रासादना काम रे ॥ श्री० ॥ २७ ॥
तेहनुं ध्यान सदा धरे रे, समकित निर्मळ थाय;
ज्ञानविमल सुखसंपदा रे, पामे सुजस सवाय रे ॥ श्री० ॥ २८ ॥



अथ श्रीजिनपूजाविधिनुं स्तवन.

दुहा.

श्रीजिनवदननिवासिनी, समरी शारदमाय;
पंचमअंग धुरे भणी, ब्राह्मीलीपी कहेवाय ॥ १ ॥
देशविरतिनी मांडणी, होइ समकित शुद्ध;
जिनपूजाथी योग शुभ, बांधे निर्मल बुद्ध ॥ २ ॥

ढाळ १ ली.

प्रणमिय पासजिणंद पाय, पभणुं पूजाविधि;
प्रथम भविकजन भावशुं, ए जोइ भूमि शुद्ध ॥
अंत्यज मालन दुगंछनीय, कुल संगति वरजे;
जे जिनभक्ति हीण होय, तेहने पण तरजे ॥ ३ ॥
शुभस्थानक जोइ करी, दूषण सवि छंडे;
धरे पेसतां वामभागे, देरासर मंडे ॥
भूमिथकी दोढ हाथ उंच, सिंहासन स्थापे;
समचोरस संठाण जोइ, जिम शिवसुख आपे ॥ ४ ॥
शुक्र वत्स ने राहु परिघ, शूल योगिनी काल;
वैधृत ने व्यतिपात लात, इत्यादिक टाळे ॥
शुभमुहूर्त्ते गुरुशाखश्युं, धुरि कलश चढावे;
ओच्छवशुं जिनराज बिंब, घरमां पधरावे ॥ ५ ॥
तारा राशि नक्षत्र योनि, गण नाडीवर्ग,
मिलते नामे आपणे, होय जे जिनवर्ग ॥

चैत्रमासे होइ शोक रोग, जेठे धन हाणि;
आषाढे तिम भाद्रमासे, होय शूनुं ठाण. ॥ ६ ॥
आश्विन कार्तिक मास होय, क्लेशादिक दुःख;
माघे भय होय अग्निनो, मागशरे धन सुख ॥
श्रावण ने वैशाख पोष, फागुण सुखकार;
ए मासे जिनराजबिंब, ठवतां जयजयकार. ॥ ७ ॥
दीपोत्सव विजयादि दिवस, जेह लोकप्रधान;
तिण दिवसे पण थापना, कीजे सावधान ॥
काष्टलेप पाषाण चित्र, लोह दंतनी दाखी;
देरासरे मूलबिंब ते. स्थापन नवि राखी ॥ ८ ॥
अंगोपांगे हीन होय, खंडित विणपरिकरे;
नासिका दोषे दुष्ट जेह, नवि तेह देरासरे ॥
पूरवे चौपद नाश होय, इशाने भमंता;
अग्निकुणे भय अग्निनो, वायुकूणे संचित ॥ ९ ॥
नैऋते निर्धन कार जाणो, उत्तरे होय हाणि;
जिनवर सन्मुख टाळवी, दिशि विदिशि प्रमाण ॥
दक्षिण पश्चिम सन्मुखे, जिनवर बिंब स्थापे;
सुख संपत्ति संतान सुख, जगमां जस व्यापे ॥ १० ॥
वास्तुकशास्त्र प्रमाण जाण, बकवटतपयंत्र;
ग्रंथ विवेकविलास देखी, तिम स्थापन मंत्र ॥
शंका कंखा दोष पोष, न धरे मिथ्यात;
इम देरासर घरे ठवे, धन तेहनी मात ॥ ११ ॥

दुहा.

हवे जिणविधि पूजा करे, श्रावक निर्मळभक्ति;
संक्षेपि ते विधि कहुं, जेहनी जेवी शक्ति ॥ १२ ॥

ढाळ २ जी.

राग—रत्नमाळानी देशी.

प्रथम पूरवदिशे अहवा उत्तरदिशे, सन्मुख स्नान भवि आचरे ए;
शूद्धनिर्मळजळे तेलमर्दन करे, यतनाशुं नीर तिहां वावरे ए ॥१३॥
केशे दिये कांकशी भक्ति मनमां वशी, बेसी परनालिय बाजठे ए;
पोतिक पहेरीने जीवयतना होइ, तिणपरे स्नानजल परठवेए ॥१४॥
चरणे चाखडी ठवे मुखे जिनगुण स्तवे, निर्मळ धोतिक पहेरतोए;
एकपट निर्मळ उत्तरासंगनुं, आठपडकोश मुखे धारतो ए ॥ १५ ॥
वस्त्र दोय जिनवर पुजतां नर धरे, नारीने वस्त्र त्रण दाखीये ए;
नारी नरवस्त्रनो पालटो नवि करे, तान जिनभक्तिशुं राखीयेए १६
मन वच काय धन वस्त्रने भुमिका, पूजा उपगरण शुद्धि सातनी ए;
साचवे पाचवे कठिननिजकर्मने, भविकजन सिद्धिसाधन भणीए॥१७॥
बिधिथकी चंदन ओरसीये घसी, भरी धुरि रजतकचोलडीए;
जिनवरबिंबने पुंजणी पुंजीने, पछी न्हवे कनकजलकलसलेए ॥१८॥
अंगलुहणां तिहां दोय हर्षे धरे, चंदन वाटकी करी करे ए;
शुद्धकर्पूरमांहि मेळवी भेळवी, हिंगुल केशरशुं भरे ए ॥ १९ ॥
तेल जावेल मोगरेल चूआ अति, अरगजा अबीर तिहां विस्तरेए;
पुर्व उत्तरदिशे मुखे जिनपूजतो, भविकनर एणीपरे भवतरेए ॥२०॥

दक्षिणसन्मुखे मरणनो भय कहे, अग्निसंतापभय संभवे ए;
नैऋते विन्घ संतानसुख पश्चिमे, वायु चोथे ठामे सुत हरे ए ॥२१॥
पूर्वदिशे संपदा उत्तरे फळ बहु, इशाने धर्मनी वासना ए;
इणिपरे जाणतो भविकजन पूजतो, छेदतो बंध दुःखपाशनाए॥२२॥
चरण अंगुष्टयुग जानुयुग करयुग, अंसयुग मस्तके निलवटी ए;
कंठे हृदयस्थळे उदर नाभिमंडळे, अंगे नवतिलक दक्षिणवटीए॥२३॥
विविधयुक्तें करी भक्तिशुं नवनवी, भातिनी आंगीय विरचिये ए;
सातनारक नर तिरिगति नवविध, दुःखटळे जो जिन चरचीए ए॥२४॥

दुहा.

तदनंतर जिनवरतणे, कंठे कुसुमचि दाम;
गुणसंयुत गुंथी ठवे, करतो भाव प्रणाम ॥ २५ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—जिनगुण गावे हो नागकुमारी—ए देशी.

जिनगळे ठावे हो कुसुमची माळा, जिनगुण गावे हो भावविशाला.
॥ जिन० ॥

जिन गुण गावे हो देइ देइ ताला,
जिन गुण गावे हो के भावे त्रिकाला,
चंपक केतक दमणो मरुओ जाइ जुइवाला;
नाग पुन्नागप्रियंगु अशोक, मोगर मालतीमाला ॥ जि० ॥२६॥
कृष्णागरु कस्तुरी अंबर, कुंदरुष्क घनसारो;
तुरुष्क सेलारस बाती सुंदर, धूप घटी विस्तारो ॥ जि० ॥२७॥

जिम जिम धूप डझे तिम दुरगति, दोहग दुरमति नाशे;
धूप दशांग करंतां भविने, षरिधलपाप पणासे ॥ जि० ॥ २८ ॥
लोकालोकप्रकाशक दीपक, तुं जिन इम कहे दीवो;
दीपकपूजा करतो भविजन, तुम परे ते चिंरजीवो ॥ जि० ॥२९॥
त्रण पुंज करी इणिपरे मांगे, जिनमारग अनुसरतो;
दर्शन ज्ञान चारित्र त्रण आपो, अक्षतपूजा करतो ॥ जि० ॥३०॥
स्वर्गादिक फल जिनपूजानां, तेह भणी फळ ढोंवे;
श्रीफळ पुगीफळ नाणादिक, परभव दुःखी न होवे ॥ जि० ॥३१॥
विविध सुखडी नैवेद्यपूजा, करतो मने इम राखे;
शिवसुख सुखडली प्रभु आपो, जिम भविबाळक चाखे ॥जि०॥३२॥
दक्षिणदिशे प्रतिमाने दीवो, डावे धूप करीजे;
फल नैवेद्यादिक जिनसन्मुख, भूषण जिनकरे दीजे ॥ जि० ॥३३॥
साठ नव त्रण कर गुरु मज्झिम, जघन्य अवग्रह संगे;
ध्यान चैत्यवंदन नरदाहिण, तिम वामा वामांगे ॥ जि० ॥ ३४ ॥
चंदनविण पूजा नवि दाखी, ते कीजे परभाते;
वासपूजा मध्यान्हे सांजे, धूप दीप बहुभाते ॥ जि० ॥३५ ॥
जिनप्रदक्षिणा दीये भविक जे, त्रण सात एकवीस;
चउगइ भ्रमण न होवे तेहने, ए फळ वीसवावीस ॥ जि० ॥ ३६॥
अष्टप्रकारे जे जिन पूजे, अष्टकर्म होये दुरे;
आठ अनंता गुण ने पामे, शिवसुख होय हजूर ॥ जि० ॥ ३७ ॥
अष्टमंगल तस घरे नित्य होवे, अष्टमहासिद्धि पावे;
आठे प्रवचनमाता सुधी, तेहनी जे जिन गावे ॥ जि० ॥ ३८ ॥

दुहा.

जिन पूजंता चित्त धरो, एह अवस्था तीन;
छद्मस्था ने केवली, सिद्धस्वरुप अदीन ॥ ३९ ॥

ढाळ ४ थी.

राग सामेरी—समवसरण सुरवाजां वाजे–ए देशी.

छद्मस्थाना त्रण प्रकार, जन्म राज्य श्रामण्य उदार;
भाविजे तिम सार, इंद्र उच्छंगे लिए जिम सुरगिरि;
कलश धरी रहे जिणपरे सुरवर, शिर उपरे नीर ठवंत. ॥ ४० ॥
जिणवेलाए कीजे पखाळ, निर्मळनीरे कलश विशाळ;
जन्मावस्था (जन्माअवस्था) सार ॥
चंदन केशरने घनसार, पुष्प चढावे जेणीवार;
राज्यावस्था सार ॥ ४१ ॥
केशरहित शिर मुख पेखीजे, श्रामण्यावस्था जाणीजे;
साधुपणुं भावीजे, जिनमुख निरखी रीजे ॥
बीजी अवस्था केवलीकेरी, चउविध सुर रहे जिनने घेरी;
वाजे मंगल भेरी ॥ ४२ ॥
प्रातिहारज आठ बिराजे, कोडि गमे तिहां वाजां वाजे;
वयरादिक सवि भाजे ॥
रूप्य हेम मणि त्रण गढ सोहे, त्रणभुवननां मनडां मोहे;
परखदा दशदोइ बोहे ॥ ४३ ॥
चउमुख चउविध धर्म प्रकाशे, बार छत्र रहे अधर आकाशे;
चोवीस चामर खास ॥

उभयपासे कंकेलि उदार, कूसुमवृष्टि सुरमाला धार;
धर्मध्वज तिहां चार ॥ ४४ ॥
सहसजोयणनो तस विस्तार, पादपीठ सिंहासन सार;
अतिशय त्रीश ने चार ॥
सुर अमरीवाळे तिहां अंग, अमरकुमर करे नाटक चंग;
भाव अधिक मन रंग ॥ ४५ ॥
सत्तरभेद जब पूजा कीजे, केवली अवस्था इम भावीजे;
समकितनुं फळ लीजे ॥
सिद्ध अवस्था कहीए एह, पर्यंकासन बेठा जेह;
काउस्सग्गे रह्या तेह ॥ ४६ ॥
आप तर्या तेम अमने तारो, अष्टकर्मनो क्लेश निवारो;
समकित देइ सुधारो ॥
जगचिंतामणि तुं जगनाथ, जगबांधव तुं शिवपुर साथ;
जगगुरु तुंहि अनाथ ॥ ४७ ॥
परमपुरुष प्रभु तुं पुरुषोत्तम, दुरे कर्यो तें मोहमहातम;
शरणागत जन शरणो ॥
अजरअमर प्रभु तुं अविनाशी, तिम करो मुजने सुखविलासी;
तो दउं तुम साबाशी ॥ ४८ ॥
चैत्यवंदन करतां भावीजे, गर्भावासे जिम नवि आवीजे;
इणिपरे विनति कीजे ॥
संयमे धीरविमल जिनदेव, इणिपरे जे करे जिननी सेव;
नय कहे ए नितुमेव ॥ ४९ ॥

दुहा.

जे जिनभक्तिये दुमणो, न धरे जिनशुं नेह;
नररुपे ते नारकी, नय कहे तेहनी देह ॥ ५० ॥
भावसहितभक्तिये करी, नवि कीधी जिनसेव;
दासपणुं परभव लहे, नय कहे ते नितुमेव ॥ ५१ ॥

ढाळ ५ मी.

राग आशाबरी—नमो रे नमो श्रीशत्रुंजयगिरिवर—ए देशी.

श्रीजिनपूजा विधिशुं कीजे, शिवसुख स्हेजे लीजेरी;
जिन तुज मुखमुद्रा निरखंतां, मुज तनमन अतिरीझेरी ॥श्री०॥५२॥
पंचवरण वर कुसुमची माला, जे जिनकंठे आरोपेरी;
ते नरने शिववनिता वरबा, वरमाळा गळे ओपेरी ॥ श्री० ॥ ५३॥
कुसुमकलीनो छेद न कीजे, पत्रभंग नवि कीजेरी;
उत्तमस्थानक तरुवरकेरुं, उत्तमगंध ग्रहीजेरी ॥ श्री० ॥ ५४ ॥
कीडे खाधुं कुवसने बांध्युं, पगे लाग्युं भोंये पडीयुंरी;
नाभिथकी जे हेठुं धरीयुं, तिम शिर उपर चढीयुंरी ॥ श्री० ॥ ५५ ॥
वासी राख्युं लोके फरश्युं, कोह्युं करथी खलिउंरी;
गंधविहुणुं ओणुं दुणुं, अवर देवने माळउंरी ॥ श्री० ॥ ५६ ॥
पत्र कुसुम एहवुं वरजीजे, पहेरीजे शुभवेशजी;
उज्वलनिर्मळ वस्त्र अखंडित, जेह सुपोत सुपेसजी ॥ श्री० ॥ ५७ ॥
एणीपेरे विधिशुं जे जिन पूजे, धूजे पातिक तासजी;
नय जिनगुणपूजानो रसीयो, भवेभवे तुमपय दासजी ॥श्री०॥५८॥

वस्तु.

स्नात्र चंदन दीप जल धूप कुसुम नैवेद्य ध्वज चामरे,
वास अक्षत देवद्रव्यवृद्धि वाजिंत्र नाटक गीत थुति;
पत्र छत्र फल अतिप्रसिद्ध ॥
वस्त्रविभूषण अतिघणां, एम एकवीश प्रकार;
नय कहे पूजी विनवो, जिन ! हमने भवजल तार ॥ ५९ ॥

दुहा.

आठ सत्तर एकवीशविध, एकशतने वळी आठ;
एक सहसआठ उपरे, एम पूजाविधि पाठ ॥ ६० ॥
हवे जिनपूजा फळ कहुं, लही ग्रंथनी साख;
जिनप्रतिमा जिनसारिखी, ए गणधरनी भाख ॥ ६१ ॥

ढाळ ६ ट्टी.

राग—कडखानी देशी.

भविकजन भावशुं जिनपपूजा करो, जिम तरो एह भवजलधि सोहिलो;
देशविरतितणुं फल एह मोटकुं, सुगुणमां तेह नर गणिए पहिलो.
॥ भविक० ॥ ६२ ॥
चोथफल देहरे जायवा मन धरे, छठ्ठ फल उद्यमे गमन भणीजे;
सात अठ चरण साहमो होवे जिनघरे, तेहने अठ्ठमनुं फल कहीजे.
॥ भविक० ॥ ६३ ॥
दशमफल अर्धपंथे बारे द्वादशमफल, पक्ष(१५)उपवास फल देव दीठे;
मासफल पूजतां चढत फल एणिपरे, सकल पूजाथकी पाप निठे.
॥ भविक० ॥ ६४ ॥

सोगणुं पुण्य जिनबिंबने पूजतां, सहसगुणुं चंदने लेप करतां;
लाखगणुं कुसुमची माळ आरोपतां, अनंतगणुं पुण्य नाटक करंतां.
॥ भविक० ॥ ६५ ॥

प्रहसमे पूजथी सर्व संकट टळे, मध्यदिने जन्मना पाप नाशे;
संध्यपूजाथकी सात भव पाप सवि, नादपूजाथकी दुःखपणासे.
॥ भविक० ॥ ६६ ॥

नीरपूजाथकी अंगनीरोगता, चंदने सुजश सौभाग्य वाधे;
वस्त्रथी विस्तरे सुतसुतापरिकरा, फळथकी देवताआयु साधे.
॥ भविक० ॥ ६७ ॥

धूपथी परजले पाप संताप सवि, दीपथी दलिद्रनी कोडि जावे;
अक्षते ज्ञानचारित्रधन संपजे, छूटककुसुमथी राज्य पावे.
॥ भविक० ॥ ६८ ॥

वासपूजाथकी धमनी वासना, नाटके तीर्थपद होय हाथे;
पंचवर्णी कुसुमदाम जे गळे ठवे, शिववधू तेहने ग्रहे बाथे.
॥ भविक० ॥ ६९ ॥

मंगलदीपथी मंगलमालिका, आरतीए अरतिउचाट भांजे;
छत्र चामरथकी भविकजन सहजथी, तेजप्रताप महपूर राजे.
॥ भविक० ॥ ७० ॥

ज्ञान लहे द्रव्यपूजाथकी धन घणुं, ध्वजथकी सर्वमांहि मान पामे;
जिनप आभरणपूजाथकी भविजना, चक्रवर्त्यादिपद इंद्र पामे.
॥ भविक० ॥ ७१ ॥

इणीपरे रजते सोवन्न अंगी प्रमुख, जे करे भावशुं लाभ जाणी;
एम बहुफलवती देवपूजा छती, सकलविधि शास्त्रमांहे वखाणी.
॥ भविक० ॥ ७२

श्राद्धदिनकृत्यनी वृत्ति पूजाप्रकरण–प्रमुख बहुग्रंथमां विधि सुणीजे
जाणवारुप संक्षेपथी ए कह्यो, देवपूजा समये ए भणीजे.
॥ भविक० ॥ ७३

अच्छतपगच्छवरगगनदिनमणिसमो, श्रीविजयप्रभसूरींद राजे;
पंडितराय कविधीरविमलतणो, शिष्य नयविमल कहे भविक काजे
॥ भविक० ॥ ७४

ढाळ ७ मी.

राग धन्याश्री.

पूजो रे भवि भाव धरीने पूजो;
शिवसुखदायक त्रिभुवननायक, ए सम देव न दुजो रे ॥भवि०॥१
इच्छा होय जो शिवसुखकेरी, जो भवभयथी धूजो;
तो भक्तिशुं तन मन मेळी, श्रीजिनवरपद पूजो रे ॥ भवि० ॥७
बहुभवसंचित चितमांहेथी, मिथ्यामतरजपुंजो;
श्रीजिनचरण शरण करी अहनिश, कर्मनृपतिशुं झुझोरे॥भवि०॥९
मोहविटंबन महिलामाया, जाळमांहे मम मूझो;
जिम अपरं परभवजंगलमां, ऊवटिनोहे अरुंझोरे ॥ भवि० ॥ ७८
शिवसुखसाधन जिनवर पुजन, कामगवी घरे दुझो;
नय कहे ए हितशीख अम्हारी, मानी भवि प्रतिबुझो रे.
॥ भवि० ॥ ७

कलश (दुहा).

चंद्र (१) वेद (४) भोजन (१७) वरिस (१७४१) विजयदशमी बुधवार;
पुजाफल रचना रची, समीशहेर मोझार. ॥ ८० ॥
वीरचंद्र आग्रह करी, कीधो एह स्तवन्न;
भणतां नवनिधि संपजे, सुणतां चित्त प्रसन्न. ॥ ८१ ॥

॥ इति श्रीजिनपूजाविधिस्तवनं सम्पुर्णम् ॥

अथ श्रीज्ञानपंचमीतिथिनुं स्तवन.

ढाळ १ ली.

राग–फागनी देशी.

प्रणमी श्रीगुरुपदकज, ज्ञाननी प्राप्ति उपाय;
पंचमीतप महिमा कहुं, सुणजो भविसमुदाय ॥
त्रिगडे बेठा मिठा, गिरुया वीरजिणंद;
दे उपदेश अनेकथा, निसुणे सुरनरवृंद ॥ १ ॥
ज्ञानलोचन सुविलासे, लोकालोकप्रकाश;
भक्ति मुक्तिदातार छे, ज्ञान परमसुखवास ॥
ज्ञान विना नर पशु कहे, लहीए कांइ न भेद;
ज्ञानदीपक समज्ञानी, सर्वाराधक वेद ॥ २ ॥
देश आराधक किरिया, ज्ञान विना ते अंध;
ज्ञानसहित जे किरिया, ते सोनुं ने सुगंध ॥
दक्षिणावर्त्तक शंख, दुधे भरियो तेह;

ज्ञानी श्वासोश्वासमां, कठिन करम करे छेह ॥ ३ ॥
ज्ञानसहित कृतकिरिया, ते तरिया भवसिंधु;
महानिशीथमां अक्षरा पंचमी ज्ञानप्रबंध ॥
भगवतीप्रमुख आगममांहि, ज्ञानतणा बहुमान;
पहेलुं ज्ञान अनुभवे, किरिया तास प्रधान ॥ ४ ॥

ढाळ २ जी.

राग—साहेलडीनी देशी.

पंचमीतपविधि सांभळो साहेलडी रे, जिम पामो भवपारतो;
जिनगणधरमुनि उपदिशे ॥सा०॥ भवियण ने हितकारतो ॥ ५ ॥
मागशिर माघ फागुण भला ॥सा०॥ जेठ आषाड वैशाखतो;
षट काती वळी लीजीए ॥सा०॥ शुभदिने सद्गुरु साखतो ॥ ६ ॥
देहरे देव जुहारीये ॥सा०॥ गीतारथ गुरुवंदतो;
पोथी शक्ति पूजीए ॥सा०॥ प्रभावना मांडी नांदितो ॥ ७ ॥
उभयटंक आवश्यक करो ॥सा०॥ देववंदन त्रणे काळतो;
ब्रह्मचर्यने पाळीए ॥ सा० ॥ आरंभसचित्तपरिहारतो ॥ ८ ॥
पंचमीस्तवन थुइ कहे ॥सा०॥ पचखे चोथ उपवासतो;
त्रिविध चउविध गुरुने मुखे ॥सा०॥ अथवा पोषध खासतो ॥ ९ ॥
गीतारथ पासे पठे ॥ सा० ॥ मन धरे तस उपगारतो;
जावज्जीव उत्कृष्टपदे ॥सा०॥ पंच वरस साढा सारतो ॥ १० ॥
जघन्यपदे एम जाणीए ॥सा०॥ अथवा वळी एक वर्षतो;
उजमणे आराधीये ॥सा०॥ जिम पहोंचे मनहर्षतो ॥ ११ ॥

ढाळ ३ जी.

राग–शारद बुद्धिदाइ–ए देशी.

निज शक्तिने सारु, उजमणुं करो वारु;
वित्त खरचो मोटे मने, प्रतिमा भरावो चारु ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र टीका, त्रिणे ज्ञानने पुजे;
पापना पुजीने गुरुपरे काउसग्ग कीजे ॥ १२ ॥

त्रूटक.

पांच एकावन लोगस्सकेरो, पंच पंच वस्तु ढोवे;
पाठा परति रुमाळ ने लेखण, वासकुंपी ने जोवे ॥
पाटी पोथी ठवणी कवली, पूंजणी नोकारवाळी;
दोरा चाबखी थापनाचारज, तिम मुहपत्ति सुंवाळी ॥ १३ ॥
कागळ ने कांठा, खडीआ वत्तरणा कांबी;
झरमर चंदरुआ, वाळाकुंची लांबी ॥
आरती धूपधाणा, मंगलदीप भृंगार;
प्रासाद ने प्रतिमा, तेहना वळी शणगार ॥ १४ ॥

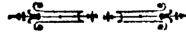
त्रूटक.

सारसार वस्तु जगतमां, ज्ञान दर्शन उपगरणा;
केशर सुखड अगर कपूर, बाती ध्वज अंगलूहणां–
पंच अहव शक्ति पंचवीश, पंचवाटनो दीवो,
फल पकवान धान बहु मेवा, कुसुम प्रमुख बहु सेवा ॥ १५ ॥
पूरव अथ उत्तर, दिशि विदिशि ईशान;

नमो नाणस्सपदने, ध्यावो थई सावधान ॥
साहम्मीवच्छल कीजे, गीतगाने जागीजे;
ए करणी करता, ज्ञानने आराधीजे ॥ १६ ॥

त्रूटक.

साधीजे ईम शिवपद साचुं, जिम गुणमंजरी वरदत्त;
लहे सौभाग्य वळी ज्ञान आराधुं, करी निज निर्मळ चित्त ॥
ते संबंध कथाथी कहेजो, लहेजो वांछितकाज;
ज्ञानविमलगुरु आणा पसाये, अधिक उदय होय आज ॥१७॥



अथ श्रीपंचमीतिथिनुं स्तवन.

दुहा.

प्रणमी प्रेमे पासजिन, पदपंकज अभिराम;
पंचमीतपमहिमा कहुं, सुणतां सीझे काम ॥ १ ॥
अलकाअधिक विराजती, द्वारवती इति नाम;
नेमिजिणेसर आवीया, रैवतगिरि शुभठाम ॥ २ ॥
केशव वंदन आवीया, बेठी परखदा बार;
वरदत्तगणधर तव तिहां, प्रश्न करे सुविचार ॥ ३ ॥
दंसण नाण चरित्तनी, कहो तिथि केही होय;
किणविधि ते आराधीये, जंपे श्रीजिन सोय ॥ ४ ॥
चौदश आठम पूर्णिमा, अमावासी ऐ तिथि चार;

चारित्र पोसह आदरी, लहीये भवजलपार ॥५॥
पंचमी बीज इग्यारसी, ज्ञानतणी तिथि एह;
ज्ञानभक्ति बहु साचवो, जिम होय निर्मल देह ॥ ६ ॥
नवतिथि शेषे कीजीये, दर्शनभक्ति विशेष:
जिनपुजन कल्याणका–दिक साधर्मिक देख ॥ ७ ॥
तेहमांहि वळी निमळी, कार्त्तिकपंचमी जेह;
ज्ञानाराधननी कही, नेमिजिने धरी नेह ॥ ८ ॥
एह दिवस आराधतां, पाम्युं निर्मळ नाण;
वरदत्त ने गुणमंजरी, सुणज्यो तास वखाण ॥ ९ ॥

ढाल १ ली.

राग–दान कहे जगे हुं वडो–ए देशी.

जंबूद्वीपे भरतमां, पद्मपुरी अतिसोहे रे;
सुपमा जेहनी जोयतां, सुरनरना मनमोहे रे.
॥ श्रीजिनवर एम उपदिशे ॥ १० ॥
अजितसेन जस राजिओ, तस घरणी यशोमतीराणी रे;
वरदत्त तेहनो सुत भलो, सकलकळा गुणखाणी रे ॥ श्री० ॥ ११ ॥
आठवरसनो जब थयो, तव मूंक्यो निशाळे रे;
अक्षर मात्र न आवडे, जिम जळमां शेवाल रे ॥ श्री० ॥ १२ ॥
अनुक्रमे यौवन पामीओ, विणठ्युं कोढे देहो रे;
रति नवि पामे केहथी, न धरे कांइ सनेहो रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥
हवे तिणहीजपुरमां वसे, सिंहदास जिनधर्मी रे;

कोटिध्वज व्यवहारीओ, संघमुख्य शुभकर्मी रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥
कपूरतिलका तस गेहिनी, गुणमंजरी तस बेटी रे;
बचने मूंगी वरतनु, रोगतणी छे पेटी रे ॥ श्री० ॥ १५ ॥
सोलवरसनी सा थइ, पण तस कोइ न इहे रे;
मातपिता परिजन सवे, तस दुःखे दुःखीया बीहे रे ॥ श्री० ॥ १६ ॥

दुहा.

एणे समये तत्र एकदा, विजयसेन गच्छनाथ,
चउनाणी गुरुगुण भर्या, मुनिपरिकरे सनाथ ॥ १७ ॥
नागरजन सवि आवीयां, सुतसंयुत नरनाथ
सिंहदास तनया सहित, वंदे श्रीमुनिनाथ ॥ १८ ॥

ढाळ २ जी.

राग—वाडी फुली अतिभली मन भमरारे—ए देशी.

क्लेशनाशिनी देशना हितआणी रे, भाखे श्रीगुरुराज;
॥ सुणो भवि प्राणी रे ॥
ज्ञान आराधन साचवो हि० श्रवणपठनने काजे सुणो० ॥ १९ ॥
ज्ञान विराधे जे मने हित० ते परभवे मनहीण सुणो०
वचने जेह विराधता हित० ते मूंगा दुःखदीण सुणो० ॥ २० ॥
कायाथी जे विराधतां हित० तस कुष्ठादिकरोग सुणो०
त्रिविधविराधन ज्ञाननी हित० जे मूरख करे भोग सुणो० ॥ २१ ॥
पुत्र कलत्र धन मित्रनो हित० तेहने होये नाश सुणो०
आधिव्याधि तसपरभवे हित० निर्विवेक तनु तास सुणो० ॥ २२ ॥

सिंहदास इम सांभळी हित० पूछे उलट आणी सुणो०
कहो भगवन्? किण कर्मथी हि०मुज तनया गुणहीण सुणो० ॥ २३ ॥
गुरु कहे एह संसारमां हित० सुखदुःख कर्मने हाथ सुणो०
कर्मथकी बळिया नहीं हित० चक्री हलधर साथ सुणो० ॥ २४ ॥
एहनो पूरवभव सुणो हित० हृदये विचारो हेव सुणो०
कर्मतणी गति एहवी हित० गुरुभाखे ततखेव सुणो० ॥ २५ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—कंत तमाकु परिहरो—ए देशी.

धातकीखंडे भरतमां, मनोहर खेटकनाम नरराज;
नयरमांहि व्यवहारिओ, धनवंत वसुदेव नाम नरराज.
पूरवभव तुमे सांभळो ॥ २६ ॥
सुंदरी नामे गेहिनी, तस सुत पंच रसाल नरराज
आसपाल पहेलो भलो; बीजो ते तेजपाल नरराज ॥ पू० ॥ २७ ॥
गुणपाल त्रीजो कह्यो, धर्मपाल धर्मसार नरराज;
लावण्यरुपे शोभती, वळी तस पुत्री चार नरराज ॥ पू० ॥ २८ ॥
लीलावती ने शिलावती, रंगावती तिम जाण नरराज;
मृगावती चोथी भली, महिमा गुणनी खाण नरराज ॥ पू० ॥ २९ ॥
पंडित पासे मोकल्या, ते पांचे निजनंद नरराज;
चपलाइ करता घणुं, मांहोमांहि दंद नरराज ॥ पू० ॥ ३० ॥
पंडित मारे तेहने, ते रोये घरे जाय नरराज;
पंडितने उपले हण्यो, जो फरी तुम न सुहाय नरराज ॥ पू० ॥ ३१ ॥

दुःखथकी तिणे भणे शु होवे, शिखवे इणिपरे माय नरराज;
कंठशोष कीधाथकी, शुं अधिकेरुं थाय नरराज ॥ पू० ॥ ३२ ॥
पाटी पोथी प्रमुखजे, परजाळे तिणिवार नरराज;
मूर्खपणाथी तेहने, नवि परणावे नार नरराज ॥ पू० ॥ ३३ ॥
तिणे दुःखे दुःखीओ स्त्रीप्रत्ये, भाखे शेठ वचन नरराज;
अंगज मूरख राखीया, कीधो अहिल जनम नरराज ॥ पू० ॥ ३४ ॥
प्रत्युत्तर तव स्त्री कहे, ए सघळो तुम दोष नरराज;
मर्मथानके उपले हणी, आणी अतिघणो रोष नरराज ॥ पू० ॥ ३५ ॥
ते तुज तनया उपनी, ज्ञानाशातना कीध नरराज;
अंगे पीडी रोगशुं, ए फल तास प्रसिद्ध नरराज ॥ पू० ॥ ३६ ॥

ढाळ ४ थी.

राग—वीरे वखाणी राणी चेलणाजी—ए देशी.

पूरवभव इम सांभळीजी, जातिस्मरण लह्यो ताम;
कहो भगवन् ! हवे एहनुंजी, कर्म छोडणनुं निदान.
॥ ज्ञान आराधन आदरोजी ॥ ३७ ॥
इणे अवसरे वरदत्तनोजी, कर्म पुछे नृप ताम;
गुरु कहे एहिज भरतमांजी, श्रीपुरे शेठ वसु नाम ॥ ज्ञा० ॥ ३८ ॥
वसुसार वसुदेव बिहुं हताजी, तेहना पुत्र गुणवंत;
गुरुतणी देशना सांभळीजी, वनमांहि तेणे एकांत ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥
संजम बेहुजणे आदर्योजी, सूरिमुनिसुंदर पास;
वसुदेव बहुश्रुतगुणथकीजी, सूरिपद ठवे रे उल्लासे ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥

ंचसयसाधुने वाचनाजी, आपतो करतो सज्झाय;
एकदिन पोरिसी सूयतांजी, प्रश्नमां रयणि विहाय ॥ ज्ञा० ॥ ४१ ॥
नेद्रा न करी शके गच्छधणीजी, चिंतवे मनमांहि एम;
धन्य मुरख मुज बांधवोजी, किसीय चिंता नहि तेम ॥ ज्ञा० ॥ ४२ ॥
एहवुं मूर्खपणुं लहुंजी, चित्ते धर्युं जेह अज्ञान;
बारदिन मौन करीं उपन्योजी, ताहरो पुत्र निदान ॥ ज्ञा० ॥ ४३ ॥
वृद्धभ्राता थयो हंसलोजी, मानससरोवरमांहि;
एम सुणी जातिस्मरण लह्युंजी, वरदत्ते देशनामांहि ॥ ज्ञा० ॥ ४४ ॥
भूपति शेठ बेहुं भणेजी, सूरि आगळ करजोडी;
विधि कहो ज्ञान आराधवाजी, जेम पहोंचे मनकोडी ॥ ज्ञा० ॥ ४५ ॥

ढाळ ५ मी.

राग—वीरजिणेसरचरणकमळकमळाक्यवासो—ए देशी.

भाषे तव मुनिनाथ साथ निसुणे चित्त आणी,
उज्वलपंचमी दिवसे जेह आराधे प्राणी
चोथभगत जिन वांदवा पूजा त्रिहुं काळ,
सावद्यकरणी नवि करे ब्रह्मचर्य संभाळे. ॥ ४६ ॥
मास मास एणिपरे करे तिहां पांसठमास,
उजमणुं करे तेहनुं पंच वस्तु प्रकाश;
पाटी पोथी परति पंच ठवणी ने कवली,
नोकारवाळी पूंजणी चाबखा पंचवर्णी. ॥ ४७ ॥
पंच जाति फल पंच पंच, जिनबिंब प्रासाद,

पंच जातिना द्रव्य जेह, टाळो पंच प्रमाद;
मासे मासे न करी शके तो कार्त्तिक पंचमी,
अजूआळी आराधीये जावज्जीव करो एम. ॥ ४८ ॥

कुसुम कपूर सुगंध द्रव्य लेइ पुस्तक पूजे,
ठवणी बाजोठ उपरे थापीने रीजे;
पंचवर्ति दीपक करे तिम स्वस्तिक पूरे,
पंचवर्ण फल सुखडी धन ढोवे अदूर. ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं नमोनाण(स्स) जाण गुणे सहसज दोय.
उत्तर सहामो शुद्ध वस्त्र धरे निर्मळ होय;
गुरूमुखे लइ पच्चख्खाण रुपानाणुं मूके,
जावजीव इम उचरे पछे विधि नवि चूके. ॥ ५० ॥

जो पोसहने कारणे ए विधि न करी शके,
तो बीजे दिन साचवेतो कीर्त्ति झलके;
रोग सोग संताप दुःख जावे संपद थावे,
अनुक्रमे सुरसुख भोगवी अजरामर थावे. ॥ ५१ ॥

ते तप वेहुं जणे आदर्यों थया तेह नीरोग,
तिणे सैागाग्यनी पंचमी कहे ते ऐहवुं लोग;
ऐम उजमणुं वरिस करे वरदत्त शिक्षा,
सहस (१०००) कन्या परणी तिहां अनुक्रमे लिये दीक्षा. ॥५२॥
गुणमंजरी पण थइ नीरोग गुणचंद्रे परणी,
पचमी तपनी विधि अनेक कीधी निर्मल करणी;

अंते संयम आदरी बिहुं विजयविमाने;
बत्रीशसागर आयुमान पहोता शुभध्याने. ॥ ५३ ॥

ढाळ ६ ठी.

राग—शारद बुद्धिदाइ—ए देशी.

जंबूपुर्वविदेहे विजयपुष्कलावती नाम,
पुंडरीकिणीनयरी अमरसेननृप धाम;
गुणवती तस राणी तस कुखे उपन्न,
वरदत्तजीव सुरना गुण लक्षण संपुन्न.

त्रूटक.

गुणलक्षण संपुन्नो पेखी शूरसेन दिओ नाम,
बार वरसनो एकशतकन्या परणाव्यो अभिराम;
तीर्थंकरमुखथी पूरवभव निसुणी चारित्र लेइ,
वर्ष सहस एक पाळी केवळ सिध्या कर्म खपेइ. ॥५४॥

हवे रमणीविजये नरसिंहभूपतिगेहे,
अमरावतीकुखे गुणमंजरीजीव तेह;
उपन्नो आवी सुग्रीव ठविउं नाम,
बहु कन्या परण्यो राजतेज बहुधाम.

त्रूटक.

बहुधा सुख विलसंतां हुआ पुत्र चोराशीहजार,
थापी पुत्र राज्ये लेइ संयम केवळ पाम्या सार;
पूर्वएकलख भवि प्रतिबोधी पाम्या अविचळ सुख,

सौभाग्यपंचमीनो तप करतां जाये दुर्गतिदुःख. ॥५५॥
एह संबंध निसुणी ज्ञान आराधो प्राणी,
आशातना टाळो जिम थाओ गुणखाणी;
एम जाणी नाणी सुणीये ए हित आणी,
श्रीजिनवरगणधरनी एहवी उत्तम वाणी.

त्रूटक.

उत्तमवाणी जिननी सुणीने प्रतिबुज्या भविप्राणी,
पंचमनाण लहेवा कारणे ए साची सहिनाणी;
श्रीविनयबिमलकविराजसुसेवक धीरविमलकबिराय,
नयविमल तस शिष्य कहे एम ज्ञाने सुजस सवाय. ॥५६॥

अथ श्रीमौनैकादशीतिथिनुं स्तवन.

ढाळ १ ली.

राग—शांतिजिन एक मुज बिनति—ए देशी.

देश सोरठ द्वारापुरी, केशव हरिनरिंदुए;
यादवकुलनभदिनमणी, सौम्यगुणे जिम चंदुए. ॥ १ ॥
॥ दृढमने धर्म समाचरो ॥ आंकणी ॥
नेमिजिणंद समोसर्या, मुनिवर सहसअढारु (१८०००) ए;
रैवतगिरि सुणी आवीया, वंदे हरी सुखकारुए ॥ दृढ० ॥ २ ॥
निसुणी देशना पुछीउं, एकादशीफल सारुए;
ज्ञाननी तिथि आराधतां, आपे शिवसुख सारुए ॥ दृढ० ॥ ३ ॥

दाखे सुव्रतमुनिकथा, निसुणे परखदा बारुए;
पुण्यविशेषथकी फले, विधिथी शुभ आचारुए ॥ दृढ० ॥ ४ ॥
घातकीदक्षिणभरतमां, विजयपुरी सुविशाळुए;
पश्चिमदिशि ईषुकारने नृप नामे पृथिवीपाळु ॥ दृढ० ॥ ५ ॥
चंद्रवती तेहनी प्रिया, नगरशेठ सूरनामए;
पुत्र अनेक छे तेहने, सकलकळा गुणधामए. ॥ दृढ० ॥ ६ ॥
जिनधर्मे बहुनेहीओ, आवश्यकव्रतधारुए;
एकदिन गुरूमुखे ज्ञाननो, सुण्यो महिमा हितकारुए ॥ दृढ० ॥ ७ ॥
तव गुरु धवल एकादशी, दिन आराधन भाख्योरे;
ज्ञानबळे तस हित भणी; विधि सघळो तिहां दाख्योरे ॥ दृढ० ॥ ८ ॥

ढाळ २ जी.

राग—पुण्य प्रशंसीए ए देशी.

मौनपणे पोसह करे रे, अहोरत्तो चौविहार;
पठन गुणन जिन नामनां रे, करतां धर्म विचार रे.
॥ भवि व्रत आदरो ॥ ९ ॥
पारणे उत्तरवारणे रे, एक भक्त आहार;
उभयटंक आवश्यकं रे, करे सचित्तपरिहार रे ॥ भ० ॥ १० ॥
ज्ञानतणी पूजा करे रे, साहम्मिवात्सल्य सार;
जिन आगळ ढोणुं करे रे, पूजा विविधप्रकार रे ॥ भ० ॥ ११ ॥
संविभागव्रत साचवी रे, पारण एम करंत;
बारवरस पूरे थये रे, उजमणु मनखंत रे ॥ भ० ॥ १२ ॥

जिनवरने नव भूषणां रे, प्रत्येके अग्यार;
धान पकवान प्रमुख बहुरे, लखावे अंग अग्याररे ॥ भ० ॥ १३ ॥
संघभक्ति बहुविधि करेरे, ज्ञानोपगरण सार;
ठवणी कवली चाबखी रे, पाठा प्रमुख अग्यार रे.
विटांगणा तिम सार रे ॥ भ० ॥ १४ ॥
एणिपरे बहुविधि साचवेरे, एक वरस ते सर्व;
अग्यार अग्यारस उजळी रे, कीधुं पूरण पर्व रे ॥ भ० ॥ १५ ॥
उजमणाना दिनथकी रे, पन्नरमें दिने तेह;
शूलरोगे मरी सुर थयोरे, आरणकल्पे गुणगेहरे ॥ भ० ॥ १६ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—आदिकरण श्रीआदिजिनजी—ए देशी.

तिहांथी चवि आ भरतमांजी, शौरीपुरे पुण्यवंतजी;
समुद्रदत्तव्यवहारियोजी, प्रीतिमतीनो कंतजी.
॥ भावे भवियण व्रतधरोजी ॥ १७ ॥
तसकुखे सुर उपन्योजी, नालनिक्षेपण ठामजी;
निधि प्रगटये महोत्सव करेजी, सुव्रत दीधुं नामजी ॥ भा० ॥१८॥
साधुसमीपे संग्रहेजी, समकित तिम व्रत बारजी;
योवनवये परणावियोजी, कन्या अग्यार उदारजी ॥ भा० ॥ १९ ॥
संयम जनके आदर्योजी, साधे आतमकाजजी;
सुव्रत घरस्वामी थयोजी, कोडि अग्यार धन साजजी ॥भा०॥२०॥
धर्मघोषसूरि आवीयाजी, कहे तिहां पर्व विचारजी;

जातिस्मरणथी ते ग्रहेजी, पूरवळ्यो आचारजी ॥ भा० ॥ २१ ॥
एक दिन पोसह आदर्योजी, मौनी निशि परिवारजी;
ते निसुणी चोर आवियाजी, धन लेवा तेणीवारजी;
कीधो प्रदीप प्रचारजी ॥ भा० ॥ २२ ॥
दीठा काउस्सग्गे रह्याजी, लेवे धननी कोडिजी;
थंभे शासनदेवताजी, नहीं कोइ धर्मनी जोडिजी ॥ भा० ॥ २३ ॥
लोके राय जणावीओजी, आवीयो चोकीदारजी;
थंभाणा सवि ते तिहांजी, अचरिज एह अपारजी ॥ भा०॥ २४ ॥

ढाळ ४ थी.

राग—हमचडीनी देशी.

मन थिर करीने पोसह पारे, विधि सघलो आराधे;
राजा पण तेहने घरे आव्यो, भेटे भगति बहु साधे रे.
हमचडी. ॥ २५ ॥
अभयदान मांगी मूकाव्या, तस्कर व्यसनथी वार्या;
शेठपदे राजाए थाप्यो, तसपरिजन सत्कार्या रे हमचडी. ॥ थ६ ॥
वळी एकदा अग्यारसदिवसे, सपरिवार व्रतधार;
लाग्यो अग्नि ज्वलतुं पुर देखी, धर्मशरण करे साररे हमचडी ॥२७॥
धर्मशाखा सुव्रतगेहादिक, मूकी अवर सवि जलीउं;
देखी नरपति बोले एहने, धर्मे विघन सवि टळीउंरे
हमचडी. ॥ २८ ॥
एकशतबहोंतेर पुत्र थया तस, सघळीए नारीकेरा;

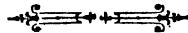
कोडिनवाणुं धन सवि मूकी, लीये संयम थई शूरारे हमचडी. ॥२९॥
जयशेखरचउनाणी गुरुथी, अंग अग्यार अभ्यासे;
छट्ठ अठ्ठम शत चार छम्मासी, एक तिम चार चउमासी रे.
हमचडी. ॥३० ॥
एम तप करतां सुव्रतमुनिने, मौनएकादशीदिवसे;
अंग पीडा बहु उपजावी, पण स्थिरतागुण विकसेरे हमचडी ॥३१॥
एक मिथ्यासुर क्षोभण काजे, परमुनिने मुखे आवी;
श्राद्धगृहे जइ भेषज लावे, तो वेदना शमावे रे हमचडी ॥ ३२ ॥
कहे व्यंतर जो वसतीने बाहिर, जावे तो सुख पावे;
कह्यो न मान्यो मस्तके हणीओ, पण निजमन न डगावे रे.
हमचडी. ॥ ३३ ॥
एणिपरे घातिकर्म खपावी, पामी केवलनाण;
सिद्ध थयो सुरवृंद मळीने, ओच्छव करे विहाणरे हमचडी. ॥३४॥
वनिता पण अग्यारे संयम, लेइ निरतीचार;
माससंलेखण शिवगति पामी, वळी बहु तस परिवार रे.
हमचडी. ॥ ३५ ॥

ढाळ ५ मी.

राग—बे करजोडीने जिनपाये लागुं—ए देशी.

नेमिजिणंदे केशव आगे, एह संबंध कह्यो चित्तरागे;
सांभळी कृष्ण ए दिवस आराधे, क्षायिकसमकितना गुणगावे ॥३६॥

अरजिनव्रत नमिजिनवर ज्ञान, मल्ली जन्म व्रत केवलज्ञान;
एकचोवीशीमां पंचकल्याण, त्रणचोवीशीना पन्नर कल्याण ॥३७॥
एकक्षेत्रे एम भणीजे, दशक्षेत्रे दोढशो जाणीजे;
अतीत अनागत ने वर्त्तमान, पंचास पंचास एम प्रमाण ॥ ३८ ॥
नेवुंजिनना नाम गणीजे, एक त्रणने एकज लीजे;
अढारमो ओगणीश ने एकवीश, वर्त्तमान जिन ए निशदीश ॥३९॥
सातमो चोथो छट्ठो एह; अतीत अनागतना जिन जेह;
मोटुं पर्व कह्युं तिण हेते, जिनशासनने वळी शैवसंकेत ॥४०॥
मागशर शुदी अग्यारस पाळे, ते सर्वि कर्मना मेल खपावे;
जावज्जीव कीजे शुभभावे, भवभवनां तेम संकट जावे ॥४१॥
श्रीज्ञानविमलसूरि एणीपरे भाखे, एह चरित्रतणी छे साखे;
आराधे जे जिनकल्याण, होवे तस घरे कोडि कल्याण ॥ ४२ ॥



अथ श्रीवीशस्थानकतपनुं स्तवन.

दुहा.

श्रीजिनमुखकजवासिनी, ब्रह्माणी श्रुतदेवी;
थानकतपमहिमा विधि, हुं पभणुं नितमेव. ॥ १ ॥
जिन सिद्ध पवयण गुरु थिविर, बहुश्रुत तपसी जेह;
वात्सल्य कीजे एहनुं, बहुनाणोपयोगे तेह. ॥ २ ॥
दंसण विनय आवश्यके, शीले निरतीचार;
प्रमादि क्षण पण नहीं. तप अनाशंस विचार. ॥ ३ ॥

अतिथिसंविभागे करी, चउविध दान आहार;
वैयावच्च तस दाखीये, उपसर्गादि निवार. ॥ ४ ॥
चउविध संघ समाधिनुं।अपूर्वज्ञान अभ्यास;
श्रुतभक्ति तीर्थप्रभावना, ए वीश पुण्यनिवास. ॥ ५ ॥

ढाल १ ली.

राग—बे करजोडीने जिन पाये लागुं—ए देशी.

हवे थानकतप जेणिपरे कीजे, तेहतणो विधि इम निसुणीजे;
समकितधारी जे नरनारी, सचित्तपरिहारी ने ब्रह्मचारी ॥ ६ ॥
उत्तरपारणे एकाहारी, त्रिहुं विधि जिनपूजे निरधारी;
आवश्यक दुगवेल संभाळे, यतना रुडी जीवनी पाळे ॥ ७ ॥
गुरुभक्ति वळी विधिनो रागी, धर्मसक्त ने विषयनो त्यागी;
सज्जनसंगी कपटे न लिंगी, तत्त्व त्रणनो जे अतिरंगी ॥ ८ ॥
एहवा लक्षणनो जे प्राणी, अमृतपरे मीठी जस वाणी;
ते ए तप करवा उजमाळ, जिनपद बांधे पुण्यविशाल ॥ ९ ॥
गुरुमुखथी फल एहनां निसुणी, विधि अनुसारे करतो करणी;
दोयसहस पदनुं करे गणणुं, लेशथी चरित्र एहनु हवे पभणुं ॥१०॥
साधु श्रावक ए तपने धारे, चोथ छट्ठमासभगत उदार;
प्रथम अंतिमजिन सर्व आराध्यां, शेषे इगदुग पूर्वभवे साध्या॥११॥
श्रावक पोसह करी आराधे, मुलगविधियेतो जिनपद बांधे;
बीजे दिने पूजादिक करणी, साचवतो विधिशुं जिम वरणी ॥१२॥
यद्यपि काउसग्ग ग्रंथे न दाख्या,पणसुविहितमुनिये विधिमां राख्या;

एहथी दर्शनशुद्धि विशेषे, तप चारित्रतणे पण लेखे ॥ १३ ॥
एक नवकारने काउसग्गे, पलिय सुरायु बंधे सग्गे;
ओगणीशलाख ने सहस त्याशी, दुगशत सडसट्ठ सहस पांत्रीश आणो;
दुसय दुसट्ठि पल्योपम आय, वांधे सुरनुं करी मन ठाय ॥ १५ ॥
तेहभणी काउसग्ग छे जुत्त, त्रिकरणयोगशुं विधि सुपवित्त;
सामायिक करीने जो कीजे, तो सहेजे संसार तरीजे ॥ १६ ॥
थानक थानक काउसग्ग करवा, सामायिके भवजलधि तरवा;
नाम ठाम हवे एहनां दाखे, ग्रंथ विचारामृतनी साखे ॥ १७ ॥

ढाळ २ जी.

राग मारुनी–चेतन चेतीये रे—ए देशी.

जिनपूजाविधि ग्रंथांतरथी जाणज्यो रे, कहेतां वाधे विस्तार;
जे विशेषपदारथ जगमां जाणीये रे, तेहनी भक्ति उदार,
ते तिहां जोडीये सार ॥ १८ ॥
जिनवर पूजीये रे, पामी नरभवयोग;
धर्म अतुल छे जगमां श्रीजिनवरतणोरे, आराध्ये शिवयोग.
॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥
नमोअरिहंताणं गणीए प्रथमपदे भलुंरे, तेपण अड सत्तर प्रकार;
पूजा कीजे वळी प्रासाद करावीये रे, तस आशातना वार॥जि० ॥१९॥
तस प्रत्यनीकनी संगति सहजे वारीयेरे, काउसग्ग चोवीश वा बार;
अवर्णवाद आच्छादन जस थुति गाइये रे, भक्ति बहुमान उदार.
॥ जि० ॥ २० ॥

देवपालभूपालपरे त्रीजे भवे रे, पामे जिनपद जेम:
मनोरमा तस घरणी गणधरपदवी लहीरे, प्रथम थानकने प्रेम.
॥ जि० ॥ २१ ॥
भक्ति करो भवि बीजे थानके सिद्धनीरे, बिंब भरावो खास;
मणीरूप्यसोवन धातुतणी बहुरे, सिद्धगुण कीर्त्तिने राश ॥जि०॥२२॥
नमोसिद्धाणं दोय सहस जपीये सदारे,पूरव विधि सवि होय;
काउसग्ग अड अथ पन्नर लोगस्सतणोरे,तन्मयध्याने जोय॥जि.॥२३॥
अरिहंतने पण बीजुं पद ए मान्य छेरे, तोशी अवरां वात;
एहने ध्याने सिद्धस्वरुपीआतमारे,सादि अनंत हुइ जात ॥जि०॥२४॥
महातीर्थ पुंडरीक अष्टापद रैवतारे, श्रीसम्मेतादिक ठाम;
विधिशुं कीजे यात्रके पट्ट भरावीयेरे,बांधे जिनपद ताम ॥जि० ॥२५॥
हस्तिपालनृप चित्रप्रधानतणीपरे रे, त्रीजे भवे जिन थाय;
मंत्री गणधरपद पामी शिव जावश्येरे,बीजापद सुपसाय ॥जि० ॥२६॥
त्रीजे थानके प्रवचनभक्ति कही भली रे, प्रवचन चउविह संघ;
श्रमणादिक छे आगम मुख्यतारे, कीजे न तस्स उल्लंघ ॥जि०॥२७॥
समकितवंता शासनभक्ता जे भविप्राणीया रे, कीजे तास सहाय;
बाळग्लान नवदीक्षित वृद्धादिकतणोरे,अनुग्रह करे निरमाय ।जि.२८।
'नमो पवयणस्स' गणीये काउसग्ग कीजीयेरे,लोगस्स चउ अथवा बार;
चिंतन करता जिनदत्तशेठतणीपरे रे,हीरप्रभा तस नार ॥जि०॥२९॥
शेठने जिनपद गणधरपद वळी नारीनेरे, पामी लहे शिवसुख;
त्रीजे थानके भक्ति करो एम भावशुं रे, महिमा मोटिम लख्ख.
॥ जि० ॥ ३० ॥

ढाळ ३ जी.

राग—पारधीयानी देशी.

चोथे थानके कीजीये रे, शक्ते गुरुनी भक्ति रे गुणरसिया;
आचारी आचार्यनीरे, छत्रीशगुणनी व्यक्ति रे चित्तवसिया ॥३१॥
' नमोआयरियाणं ' गणोरे, छत्रीस लोगस्स काउसग्गरे गुण०
त्रिकरण विनये सेवना रे, अति उच्छाह अथग्ग रे चित्त० ॥३२॥
पुरुषोत्तमनृपनी परे रे, जिनपद लहीए सार रे गुण०
अन्न पान वसती ने वेयावच्चेरे, पूजाने सत्कार रे चित्त० ॥३३॥
पद पंचमे वळी थिविरनी रे, सेवा बहूविध होय रे गुण०
श्रुतपर्यायवयथी वळी रे त्रिविध लोकोत्तर जोय रे चित्त० ॥३४॥
सीदाता सम संयमे रे, थिर करतां होय थेर रे गुण०
' नमोथेराणं ' ध्याइए रे, काउसग्ग त्रण पण तेर रे चित्त० ॥३५॥
पद्मोत्तरनृपनी परे रे, जिनपद लहीए क्षेम रे गुण०
छठ्ठे बहूश्रुतने नमो रे, उपाध्यायपद प्रेम रे चित्त० ॥३६॥
'नमोउवज्झायाणं' जपोरे, काउसग्ग लोगस्स पचवीशरे गुण०
विविधभक्ति तस साचवोरे, बहु श्रुतनी सुजगीश रे चित्त. ॥३७॥
महेंद्रपालनृपनी परे रे, जेम सुतशीलप्रधान रे गुण०
जिनगणधरपद पामश्ये रे, जेहनी मोटी माम रे चित्त० ॥३८॥
तपसी साधुपद सातमे रे, भक्ति करो द्रव्यभाव रे गुण०
'नमोलोएसव्वसाहूणं'रे, सगवीश लोगस्स खास रे चित्त० ॥३९॥
वीसामण वातसल्यथी रे, प्रमुख करो घणी सेव रे गुण०

वीरभद्रमुनिनी परे रे, जिनपद लहे स्वयमेव रे चित्त० ॥४०॥
ज्ञानोपयोग प्रतिक्षणे रे, चिंतवो आठमे ठाण रे गुण०
'नमोनाणस्स'पद काउसग्गे रे, पण एकावन मानरे चित्त० ॥४१॥
ज्ञानोपगरण ज्ञानने रे, ज्ञानीने बहुमान रे गुण०
जयंतदेवराजा परे रे, बांधे जिनपद नाम रे चि० ॥४२॥

ढाळ ४ थी.

राग—मेडी उपर मेह झरुखे वीजळी हो लाल झरुखे—ए देशी.

नवमुं थानक दर्शनपदनुं ध्याइए हो लालके पदनुं०
'नमोदंसण(स्स) करी जापके पाप पलाइए हो लालके पाप०
पण अथवा सडसठ लोगस्सने चिंतीए हो लाल लोग०
सुगुरु सुदेव सुधर्म ए दर्शनमंतीए हो लाल ए दर्शन० ॥४३॥
दर्शनना उपगरण वधारो बहुपरे हो लाल वधारो०
निःशंकादि दोष निवारी चित्त धरो हो लाल निवारी०
जिम हरिविक्रमभूप जिनेंद्रपदवी लहे हो लाल जिनेंद्र०
दर्शनथी वळी ज्ञानचारित्र गुण गहगहे हो लाल चारित्र० ॥ ४४ ॥
दशमुंपद 'नमोविनयस्स' गणी आराधीए हो लाल गणी०
गुणिपद तेरनो विनय चउभेदे साधीये हो लाल चउ०
एहवा दशविध भेद विनय काउसग्ग करो हो लाल वि०
दश अथवा बावन्न लोगस्स करी भवतरो हो लाल लोग० ॥४५ ॥
दर्शन ज्ञान चारित्र ने तप उपकारीनो हो लाल के तप०
मोक्ष विनय पण भेद ए जैनाचारनो हो लालके जैना०

धनश्रेष्ठिपरे तेह मुनिव्रत आदरी हो लाल मुनि०
बांधे जिनपद नाम करी किरिया खरी हो लाल करी० ॥४६॥
उभयकाळ आवश्यक षड्विध साचवे हो लालके षड्०
सामायिक बहुवार करी पाचवे हो लाल करी०
'नमोचरित्त'पद जाप सत्तर अथ पांचनो हो लाल सत्तर०
करे काउसग्ग दश सामाचारी संचनो हो लाल सामा० ॥४७॥
निरतीचारे भक्ति करे चारित्रनी हो लाल करे०
सर्वविरति देशविरति करे चित्त चित्रथी हो लाल करे०
अरुणदेवभूपालपरे ते जिन होये हो लाल परे०
बारसमुं हवे ठाण शीलव्रतनुं कहे हो लाल शील० ॥ ४८ ॥
चिंतामणिपरे लील शील जे आदरे हो लालके शील०
नवविधवाडी विशुद्ध अढार भेदे धरे हो लाल अढार०
व्रतधारीनी भक्ति साधुश्रावकतणी हो लाल साधु०
लोगस्स नव वा अढार काउसग्गे भणी हो लाल काउ० ॥ ४९ ॥
'नमो बंभवयधारिणं' पाठ जपे सदा हो लालके पाठ०
चंद्रवर्मनृप जेम लहे जिनपद मुदा हो लाल लहे०
तेरमे थानके एह प्रमाद क्षण नवि करे हो लाल प्रमाद०
'नमोकिरियाणं' जाप करी भवजल तरे हो लालके करी० ॥ ५० ॥
वळी पिंडस्थ पदस्थ रुपस्थ रुपातीतनु हो लालके रुपा०
ध्यान धरे वळी धर्म शुकलनी रीतिनुं हो लाल के शुकल०
करे प्रमादपरिहार आचार अनुमोदना हो लाल आचा०

काउसग्ग तेर पणवीस अक्रिय आल्हादना हो लाल अक्रि० ॥५१॥
निरतिचार क्रिया साधे विकथाबाधिने हो लालके विकथा०
हरिवाहननृप. जेम ते जिनपद साधीने हो लालके जिन०
चौदमे स्थानके बाह्य अभ्यंतरतप धरे हो लाल अभ्यं०
'नमोतवस्स' गणे पाठ लोगस्स द्वादश करे हो लाल लोग० ॥५२॥
अनाशंस अनिदान करी चित्त निर्मलुं हो लाल करी०
कंचनकेतुनृप जेम लहे जिनपद भलुं हो लाल लहे०
पनरमे थानके एह उचित अशनादि ने हो लाल उचित०
शुद्ध अतिथिसंविभाग करे पूजादिके हो लाल करे० ॥ ५३ ॥
तेह भणी 'नमोगोयम' गणीये काउसग्गे हो लाल गणी०
एकादश लोगस्स सुपात्रादिक वगे हो लाल सुपात्रा०
रत्नकनकरूप ताम्र ने मृन्मय पात्र छे हो लाल के मृन्म०
जिनमुनिश्रावक समकिति मिथ्यात्विमात्र छे हो लाल मि० ॥५४॥
एणिपेरे पात्र विचार संविभाग व्रत धरे हो लाल संवि०
नरवाहननृप जेम थइ जिन भव तरे हो लालके थइ०
मन वय काय विशुद्ध एहवुं जे आदरे हो लाल एह०
ज्ञानविमळगुणराशि भुवनमां विस्तरे हो लाल भुव० ॥ ५५ ॥

ढाळ ५ मी.

राग—मुनि मन सरोवर हंसलो—ए देशी.

वैयावच्चपद सोलमुं, भवि तुमे भावे आराधो रे;
जिनसूरिवायगमुनि गुणी, दशविध भेदथी साधो रे. ॥ ५६ ॥

श्रीजिनवर एम उपदिशे ॥ ए आंकणी ॥

उपसर्गादिक टाळवे, वैयावच्च विशेष रे;
ते भणी अपडिवाइ कह्युं, प्रवचने उचित संपेख रे ॥श्रीजि०॥५७॥
जिन उत्कृष्ट गुणीमांहि, ते 'जिणाणं' गणीयेरे;
काउसग्ग पांच लोगस्सनो,अधिगत गुरुमुखे सुणीयेरे॥श्रीजि०॥५८॥
जिमूतकेतुनृपतिपरे, तीर्थंकरपद फरसे रे;
राणीयशोमती तेहनी, गणधरपदे भव तरसे रे ॥ श्रीजि० ॥ ५९ ॥
पद समाधि हवे सत्तरमुं, द्रव्यभावे उपजावे रे;
सूरिमुख चउविह संघने, सुपरेशुं सुविधि सिखावेरे ॥श्रीजि०॥६०॥
संघमां उत्तम मुनिवरा, ते भणी 'नमोचारित्र' जपीए रे;
विघननिराकरवे करी, पण लोगस्स कर्म खपीएरे ॥श्रीजि०॥६१॥
श्रीपुरंदरनृपनी परे, जिनपद लहे सुखकार रे;
बंधुमती तेहनी प्रिया, होशे तस गणधार रे ॥ श्रीजि० ॥ ६२ ॥
पद अढारमे आदरो, अपूर्व ज्ञाननुं ग्रहण रे;
अंगानंग आवश्यके, भणीये करी योगोवहाण रे ॥ श्रीजि० ॥६३॥
तत्त्वज्ञाननी चिंतना, 'नमोनाणस्स' पद जाप रे;
काउसग्ग पण अथ बारनो, ज्ञानथी टळे सवि पापरे॥श्रीजि०॥६४॥
सागरेंदुनृपनी परे, तीर्थंकरपद पामे रे;
आदर करीने आशातना, टाळतो सवि दुःख वामे रे॥श्रीजि०॥६५॥
हवे श्रुतपद ओगणीशमुं, श्रुत ते गणधरे रचियु रे;
चौदपूरवी दशपूरवी, प्रत्येकबुद्धबुद्धि खचिउ रे ॥ श्रीजि० ॥ ६६॥

विधिशुं ग्रहेवुं देयवुं, प्रत्यनीकता टाळे रे;
अंग अनंग लखावीए, शक्ति शासन अजुआळेरे; ॥ श्रीजि०॥६७॥
'नमोसुयस्स' पद ध्याइए, चउ अथ पणयालीश रे;
लोगस्स काउसग्ग कीजिये, धरीये भक्ति अशेष रे ॥श्रीजि०॥६८॥
शतक अध्ययनपद पाहुडा, उद्देशादिक चूला रे;
धारीये अंगने पूर्वना, तो वाधे श्रुतलीला रे ॥ श्रीजि० ॥ ६९ ॥
रत्नचूडनृपनी परे, स्याद्वादे नहीं शंका रे;
जिनपद लही शिवगति लहे, पावे पुण्यनी लंका रे ॥श्रीजि०॥७०॥
प्रवचनतीर्थप्रभावना, वीशमुं स्थानक जाणो रे;
विद्यानिमित्त उपदेश तपे, उन्नति करे सुप्रमाणो रे ॥श्रीजि०॥७१॥
तीर्थप्रतिष्ठायातरा, साहमिवत्सल आदि रे;
धर्मकथा विधिशुं करे, टाळी सयलप्रमाद रे ॥ श्रीजि० ॥ ७२ ॥
'नमोनीन्थस्स' पद चिंतिये, काउसग्ग लोगस्स चार रे;
मेरुप्रभनरपतिनी परे, पामे जिनपद सार रे ॥ श्रीजि० ॥ ७३ ॥
पूर्वस्थानक सवि एहमां, मागे तिणे करी बळियो रे;
एक एकमां वधता विधे, करतां पातिक टळियो रे ॥श्रीजि०॥७४॥
अंगे न आवे तेहने, वीश असमाधिना ठाण रे;
वीशस्थानकतप सेवतां, श्रीज्ञानविमलप्रभु ज्ञाणेरे ॥श्रीजि०॥७५॥

ढाळ ६ ठ्ठी.

राग—शांतिजिन भामणे जाउं—ए देशी.

स्थानक वीशे इम आराधो, पोसह करी भवि प्राणीजी;

सूरिवाचमसुनि चरितपदे चउ, सर्वविरति सहीनाणीजी. ॥ ७६ ॥

बलिहारी ए जिनतणी ॥ आंचळी. ॥

एहनो पार न पामीए, कांइ कहेतां गुणसमुदायजी;
उजमणां उलट धरी कीजे, निजधनने अनुसारेजी;
धन लही तप नवि उजमे, कांइ तेहनो अफल जमवारोजी॥ब०॥७८॥
सूरतबंदर सुंदर श्रावक, स्थानकतप आदरताजी;
नेहतणो विधि जाणण हेते, प्रबळ पुण्य अनुसरताजी ॥ब०॥७९॥
ग्रंथ विचारामृतथी निसुणी, ज्ञानविमल गुरुवाणीजी;
समकितअनुभव उल्लसे एहथी, अवर न एह समाणीजी ॥ब०॥८०॥
संवतरसऋतुमुनिविधु(१७६६) मासे, पोषवदी आठम बुधवारेजी;
भणवा काजे स्तवन कर्युं ए, नितु नितु मंगळचारजी ॥ब०॥८१॥

अथ श्रीसत्तरिसय (१७०) जिन स्तवन.

राग—गोडी.

ढाल १ ली.

जंबूद्वीप विदेहमां एकेकी विजये;
बत्रीश जिनवर विचरता, उत्कृष्टे समये ॥ १ ॥
प्रेम धरीने प्रणमीए, ॥ आंचली० ॥
श्रीजयदेव कर्णभद्रजी, लक्ष्मीपति अनंत
विशाल गंगाधरूं प्रियंकर अमरदत्त ॥ प्रेम० ॥ २ ॥
कृष्णनाथ गुणगुप्त छे पद्मनाभ जलधारः

युगादित्य वरदत्तजी चंद्रकेतु महाकाय सार ॥ प्रेम० ॥ ३ ॥
अरण्यवास हरिहर नमुं अमरकेतु रागेंद्र
शांतिदेव अनंतकृत गजेंद्रप्रभ सागरचंद्र ॥ प्रेम० ॥ ४ ॥
लक्ष्मीचंद्र महेश्वर ऋषभजी सोमकांति नेमिभद्र;
अजितभद्र महिमाधर श्रीराजेश्वरचंद्र ॥ प्रेम० ॥ ५ ॥
अजितनाथ इहां भरतमां, ऐरवते सुचंद;
चोत्रीश जंबूद्वीपना, जिन ज्ञानदिणंद ॥ प्रेम० ॥ ६ ॥

ढाळ २ जी.

राग—वीरजिणेसर चरणकमल.—ए देशी.

प्रथमविदेहे धातकीखंडे जिन कहीए,
विचरता ए जिनवरा प्रणमी शिव लहीए;
वीरसेनने वच्छसेन नीलकांतिक लहीए,
मुंजकेशी रुक्मिकनाथ क्षेमंकर लहीए;
श्रीमृगांक मुनिमूर्ति विमल आगमिक दुष्कृतहर,
वसुधाधिप महल्ल वर्णदेव बलमित्र सुहंकर. ॥ १ ॥
अभृतवाहन पूर्णिमेन्दु रेवांक्ति कल्पशाख,
नलिणीदत्त विद्यापति सुपार्श्व भानुनाथ विशेष;
विशिष्ट प्रभंजन जलप्रभ मुनिचंद ऋषिपाल,
कुंडग महावीर भूतानंद तीर्थेश रसाल. ॥ २ ॥
बीजे विदेहे धातकीखंडे जिनबत्रीश,
धर्मदत्त भूमिपती मरुदत्त मुनीश;

सुमित्र नंदीषेण प्रभानंद पद्माकर नामे,
महाघोष चंद्रप्रभ भूमिपाल प्रणाम ॥ ३ ॥
सुमतिसेन अच्युतदेव तीर्थभूत ललितांग,
अमरचंद्र समाधिदेव मुनिचंद्र एकांग;
श्रीमहेंद्रने शशांक जगदीश्वर देवेंद्र,
श्रीगुणनाथ नारायणेंद्र उद्योतजिनेंद्र.
श्रीकपिल प्रभाकरु जीनदीक्षित सकल,
श्रीशिलारजिन वज्रधार सहस्राक्ष जिन अमल;
अशोकाख्य बत्रीशमा ए त्रीजीविजये जाणो,
कर्पटनाथ सिद्धांतनाथ भरते दोइ आणो ॥ ५ ॥
श्रीजयनाथने पुष्पदंत ऐरवते दोय कहीए,
एम अडसठ्ठजिनवरा धातकीमांहे लहीए;
महसमे प्रेमे प्रणमतां होय समकित शुद्ध,
साते सुख सहेजे मळे ज्ञानविमलनीवृद्धि. ॥ ६ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—भैरवी.

मेघवाहन जीवरक्षकस्वामिरे,
श्रीमहापुरुषने पापहर नामरे;
श्रीमृगांक सूरिसिंह जगत्पूज्य वंदीरे,
सुमति महामहेंद्रने अमरभूति वंदीरे. ॥ ७ ॥
कुमारचंद्र वीरषेण श्रीरमणनाथरे,

स्वयंभू अचळ मकरकेतु सिद्धार्थरे;
श्रीसफल विजयदेव नरसिंह शतानंदरे,
वृंदारक चंद्रातप चित्रगुप्ति वंदीरे. ॥ ८ ॥
दृढरथ महायश उष्मांक प्रद्युम्ननाथरे,
महातेज पुष्पकेतु कामदेव सनाथरे;
समरकेतु ए पुष्करवरआर्द्धेरे,
प्रथम विदेहे करे धर्मनी वृद्धिरे ॥ ९ ॥
श्रीप्रसन्नचंद्र महसेन वज्रनाभरे,
सुवर्णबाहु कुरुवंद वीर्यनाभरे;
विमलचंद्र यशोधर महाबल साररे,
वयरसेन विमलबोध भीमनाथ तारए ॥ १० ॥
मेरुप्रभ भद्रगुप्त दृढसिंह सुव्रत धाररे,
हरिचंद्र अतिश्रेय प्रतिमाधर धाररे;
कनककेतु अजितवीर फल्गुमित्र जाणीरे,
ब्रह्मदत्त हितकर वरुणदत्त आणिरे. ॥ ११ ॥
जसकीर्त्ति नागेंद्र श्रीमहिमधरदेवरे,
कृतब्रह्म महेंद्र वर्द्धमान सुरेंद्रदत्त सेवीरे;
बीजे विदेहे पुष्करे बत्रीशदेवरे,
प्रभास प्रभावक दोय भरतमां सेवरे. ॥ १२ ॥
श्रीअग्राहि बलभद्रजिन दोयरे,
ऐरवते दोय एम अडसट्ठि होयरे;
समय उत्कृष्टमां वंदीये क्षेमरे ॥ १३ ॥

ढाळ ४ थी.

कडखानी देशी.

प्रहसमे जिनतणां नाम संभारीये, वारीए कर्मनी कोडि हेला;
विघ्नसंघात सवि दुश्मन दरद सवि, दूर जेम पवनथी अर्कतूला;

॥ प्र० ॥ १४ ॥

जिनतणा नामनो यंत्रविधि पूजता, शुद्ध समकित होइ सुयश वाधे;
संकट निकट आवे नहिं तेहने, ज्ञानचारित्रना योग साधे

॥ प्र० ॥ १५ ॥

ज्ञानविमलाजिगुणरयणरयणायरा, सुगुरुपसायथी एह पामी;
भावना पावना करो तुमे भविजना,सिद्धिसुंदरीतणा थाओ स्वामी

॥ प्र० ॥ १६ ॥

अथ श्रीशाश्वतीजिनप्रतिमास्तवन.

विधुमंडल परे निर्मली, श्रुतदेवी गुणखाण;
प्रणमी जे आगम धुरे, बंभीलीपि जिनवाण. ॥ १ ॥

ते आगममां भाखीया, त्रिहुं लोके सुखदाय;
जिनपडिमा जिनघर वळी, सासयभाव कहाय. ॥ २ ॥

उर्ध्वलोक मांहे चैत्य छे, निर्मल अंक के शंख;
त्रिहुं द्वारे करी सोहीए, सवि विमानना संख. ॥ ३ ॥

ढाल १ ली.

राग—सामेरी जयो जयोनी देशी.

र्मदेवलोक पहेलुं जाण, बत्रीशलाख विमान चेइ जाण;
ां प्रतिमा परिमाण तो, भविक वंदो उलट आण ॥ आंचली० ॥
डे सत्तावनने साठलाख, इशाने अट्ठावीशलाख;
र विमाननी शाखतो, ॥ भवि० ॥ ४ ॥
ासकोडि चालीशलाख प्रतिमा, श्री जीनवरनी सोहे सुखमां;
अर कृत बहु महिमातो, ॥ भवि० ॥ ५ ॥
लाख चेइ सनत्कुमारे, एकवीशकोडि साठलाख उदार;
रप्रतिमा सुखकारतो, ॥ भवि० ॥ ६ ॥
द्रे चेइय आठलाख, बिंब चउदकोडी चालीशलाख;
ृत सुरतरुशाखतो, ॥ भवि० ॥ ७ ॥
लाख चेइय ब्रह्मदेवलोके, सातकोडि वीशलाख विवेके;
ामा वंदु छेकतो, ॥ भवि० ॥ ८ ॥
सपचाश लांतके जिनभवन, नेवुंलाख पडिमा गुणसदन;
ो हरखित वदनतो, ॥ भवि० ॥ ९ ॥
; चालीशसहस्स जिनगेह, बहोंतेरलाख प्रतिमा नमुं नेहे;
ायभावे जेहतो, ॥ भवि० ॥ १० ॥
ा सहस्सषट छे सहस्रारे, ऐंशीसहस दशलाख उदार;
माने करुं जुहारतो, ॥ भवि० ॥ ११ ॥
नत प्राणत दो देवलोक दीसे, दो दो शत चेइ जिनबिंब दीशे;
ोश छत्रीश सहस्सतो ॥ भवि० ॥ १२ ॥

दोढशो दोढशो आरण अच्युते, चेइबिंब सगवीशसहस्स युत;
दीशे अति अद्भूतता, ॥ भवि० ॥ १३ ॥
बारदेवलोके एकसोअेंशी, बिंब चैत्यप्रते छे सुजगीशी;
उपरे एकशोवीशना ॥ भवि० ॥ १४ ॥
प्रथम ग्रैवेयकत्रिके चैत्यसार, एकशोअग्यार तिहां बिंब उदार;
त्रणशेंवीश तेरहजारतो (१३३२०) ॥ भवि० ॥ १५ ॥
मध्यत्रिके चैत्य एकशोसात, बारसहस्स अठशत विख्यात;
चालीश अधिक बिंब जाततो ॥ भवि० ॥ १६ ॥
एकशत चैत्य उपर त्रिके आण, बारसहस्स तिहां बिंब प्रमाण;
ग्रैवेयके इम जाणता, ॥ भवि० ॥ १७ ॥
पंचानुत्तरे पांच प्रासाद, छसय बिंब प्रणमुं आल्हाद;
नमतां टळे विषवादतो, ॥ भवि० १८ ॥
लाखचोराशी सहसत्ताणुं, त्रेवीश उपरे चैत्य प्रमाण;
उर्द्धलोक मांहे जाणुंतो, ॥ भवि० ॥ १९ ॥
एकशोबावनकोडि लाखचोराणुं. सहस्सचुंमालीश उपरे आणुं;
सातसेंसाठ बिंब जाणुं तो, ॥ भवि० ॥ २० ॥
उर्द्धलोके ए संख्या लहीए, तेह तणी आणा शिरवहीए;
प्रणमी भवभयगमीएतो ॥ भवि० ॥ २१ ॥
उंचा बहोंतेरयोजन जेह, लांबा शत विस्तारे तेह;
पचासयोजन जिनगेहतो ॥ भवि० ॥ २२ ॥
सवि वैमानिके जिनवर गेहि, प्रतिमा सगकर माने देहि;
अध पणमय धनुषि तेहतो ॥ भवि० ॥ २३ ॥

रायपसेणी प्रमुख सूत्र साखी, जिनप्रतिमा जिनसरीखी दाखी;
ज्ञानी गणधरे भाखी तो ॥ भवि० ॥ २४ ॥

ढाळ २ जी.

उलालानी देशी आध एकवीशो.

तिर्यग्लोकेरे सासयजिनघर जिनवरु,
तस संख्यारे भाखुं सुणजो सुखकरु;
पंचमेरुएरे पंच्यार्शी प्रासाद छे;
दशसहस्सजरे वसें अधिक प्रतिमा रुचे. ॥ २५ ॥
गजदंतारे विषे वीश प्रासाद छे,
चोवीशशयरे बिंब नमो (जेम) अघछेद छे;
वखारगिरिरे अेंशीप्रासाद सोहामणा,
छन्नुसयरे बिंब नमी लउं भामणां ॥ २६ ॥
यमकाचलेरे दश प्रासाद कह्या तिहां,
जिनपडिमारे बारशें वंदी जे तिहां;
वर्षधरगिरिरे त्रीश चैत्य बिंब छत्रीसशें,
चित्रविचित्रेरे पण पण चेइ बिंब छशें छशें ॥ २७ ॥
कुरुक्षेत्रेरे दशचेई प्रतिमा बारशें,
इक्षुकारेरे चउ चेइ बिंब अेंशी चारशें;
वृत्तवैताढयेरे वीशप्रासाद नमीजीए,
जिनपडिमारे चोवीशशें वळी लीजीये ॥ २८ ॥
दीर्घवैताढयेरे चैत्य एकशोसत्तरि कह्या,

वीशसहस्सारे चारशें बिंब जिननां कह्यां;
चैत्य चालीशरे दिग्गजकूटे जाणीए,
चारसहस्सारे आठशें बिंब वखाणीए ॥ २९ ॥
दशतरुरे जंबूप्रमुख जे शाश्वता,
अग्यारशेंसत्तरिरे प्रासाद तिहां मनभावता;
तिहां प्रतिमारे एकलख चालीशसहस्सरे,
चारशें उपरेरे प्रणमीजे सुजगीशरे. ॥ ३० ॥
कंचनगिरिरे सहस्सएक छे देहरां,
तिहां एकलखरे वीशसहस्स वळी जिनवरा;
त्रणशेंअेंशीरे कुंड तणा प्रासाद छे,
पणयालीशरे सहस्सछसय जिन बिंब छे ॥ ३१ ॥
द्रहे अेंशीरे जिनघर सुंदर सोहीए,
तिहां प्रतिमारे छन्नुसय मनमोहीए;
महानदीएरे सत्तरि (७०) जिनघर दाखीए,
तिहां प्रतिमारे सहस्स चोराशी भाखीए ॥ ३२ ॥
सखालेरे मनुष्यलोके चेइहरा,
एकत्रीशशतरे ओगण्याशी उपरे वरा;
तिहां प्रतिमारे त्रणलख एकाशीहजाररे,
चारशेंअेंशीरे उपरे होइ सुखकाररे ॥ ३३ ॥
चार प्रासादरे मानुषोत्तरगिरि जाणीये,
तिहां प्रतिमारे चारशें एशी वखाणीये;

चारकुंडलेरे चारशें छन्नु विंवरे,
चार रुचकेरे चारशें छन्नु अविलंबरे. ॥ ३४ ॥
नंदीश्वररे दीपे बावन जिनहरा,
चोसठसयरे विंब अडतालीश मनोहरा;
राजधानीरे सोल प्रासाद छे फुटरा,
विंब एकसहस्सरे नवशतवीश उपरे वरा ॥ ३५ ॥
नंदीश्वररे आठ इम जिणघर कह्यां,
आठसहस्सारे त्रणशत अडसठि विंब लह्यां;
सरवाळेरे जिणगर कह्यां तिर्च्छालोकनां,
बत्रीशशयरे ओगणसाठ सवि रत्ननां. ॥ ३६ ॥
तिहां प्रतिमारे त्रणलख सहसएकाणुया,
त्रणशत वळीरे वीश उपरे परमाणुया;
हवे रुचकेरे कुंडलनंदीसर जिनघरा,
चउबारारे साठे ए अवर त्रिबारे वरा ॥ ३७ ॥
त्रिबारेरे एकशोवीश प्रतिमा कही,
बारे द्वादशरे एकशतआठ मांहे लही,
एकसो चोवीशरे सोळ हुवे चार बारणे,
अष्ठोत्तरशोरे मध्यसिद्धसिंहासणे. ॥ ३८ ॥
तिर्च्छालोकेरे पांचशे धनुष प्रतिमा हुवे,
धन्य ते जनरे पूजे प्रणमेने जुवे;
गजदंतारे वखारा कुरु मेरुवने,
इक्षुकारेरे मानुषोत्तरे जिनभवनने. ॥ ३९ ॥

पचासजोयणरे दीर्घ विस्तारे पचवीश छे,
छत्रीश जोयणरे उंचा सवि भविमने रुचे;
एम असुरनीरे जेह निकाये जिनघरा,
सवि जाणोरे एह प्रमाणे भविवरा. ॥ ४० ॥
मेरुचूलारे यमक कंचन नदी कुंड द्रहे,
दोइ वैताढयेरे दिग्गजकूट तरुवर जहे,
कोशदीहारे अर्द्धकोश विस्तार छे,
चौदशेंचालीशरे धनु उंचा सवि चेइअ छे. ॥ ४१ ॥
कल्याणकरे श्रीजिनना सुरवर करे,
अट्ठाइमहोत्सवरे नंदीश्वर हर्षभरे;
इंद्राणीरे राजधानीए आवी मली,
करे नाटकरे भावना भावे मनरुली. ॥ ४२ ॥
शाश्वतचैत्येरे षट्थानक हुवे अतिभला,
रंगमंडपरे मुखमंडपमणिपीठ भला;
थूभ अशोकतरुरे वापी निर्मलजल भरी,
चैत्यध्वजरे प्रतिचैत्ये होइए खरी. ॥ ४३ ॥
एम महिमारे विस्तारे आगमे घणा,
जीवाभिगमेरे जंबुपन्नत्तीप्रमुखे सुण्या;
बहु देवारे देवी भक्ति करे घणी,
हित सुख निवृत्तिरे धर्मकाजे समकितधणी. ॥ ४४ ॥

ढाळ ३ जी.

देशी ललनानी.

अधोलोके जिनभवन जे, भवनपतिमां सार ललना;
चेइ चोसठलाख छे, असुरनिकाय मझार ललना.
॥ शाश्वता जिनवर वंदीए ॥ ४५ ॥
एकशोपंदरकोडि उपरे, बिंब अछे वीशलाख ललना.
चुलशीलख नागकुमारमां, चैत्य ए प्रवचनशाख ल० ॥ शा० ४६ ॥
बिंब तिहां वळी जाणीये, एकशोएकावनकोडी ललना.
वीशलाख वळी साधिका, प्रणमीजे करजोडि ल० ॥ शा० ॥४७॥
बहोंत्तेरलाख सुवर्णकायमां, जिनघरचेइ प्रमाण ललना.
एकशोओगणत्रीशकोडि छे, साठलाख उपरे जाण ल० ॥शा०॥४८॥
विद्युत् अग्नि द्वीप उदधिमां, दिशि थणीयकुमार ललना.
ए षट् असुरनिकायमां, सरीखा चेइ जुहार ल० ॥ शा० ॥ ४९ ॥
बहोंत्तेरलाख जिनघर भला, प्रत्येके सुखकार ललना.
एकशोछत्रीशकोडि बिंब भला, एशीलाख मनोहार ल०॥शा०॥५०॥
छन्नुलाख जिनघर भला, वायुकुमारनिकाय ललना०
एकशोबहोंत्तेरकोडि बिंब छे, अेंशीलाख सुखदाय ल० ॥शा०॥५१॥
सातकोडिबिहुंत्तरिलख्खा, सविचेइ अहोलोक ललना०
तेरशेंनव्यासीकोडि छे, साठलाखबिंबनो थोक ल० ॥शा० ॥ ५२ ॥
चैत्य चैत्य प्रतिबिंब छे, एकशोअेंशी प्रमाण ललना.
सातहाथ उंचा उत्सेधांगुले, वंदीजे सुविहाण ल० ॥ शा० ॥ ५३ ॥

नवनिकाय नागादिके चेइ, पचबीश योजनदीह ललना.
साढाबार पहुलपणे, अठदस उंचा लीह ल० ॥ शा० ॥ ५४ ॥
तास अर्द्धमाने कह्या, व्यंतरमां जिनगेह ललना.
असंख्यात ते जाणीये, प्रणमुं आणी नेह ल० ॥ शा० ॥ ५५ ॥
असंख्यात जिनघर अछे, ज्योतिर्षीमां गुणधाम ललना.
मान तेहनुं नवि कह्युं, पूरव ग्रंथ प्रमाण ल० ॥ शा० ॥ ५५ ॥
व्यंतर ज्योतिषी भवनमां, शाश्वत चैत्ये होय ललना.
अशीअधिकएकशतवली, बिंब सभा मिली जोय ल० ॥शा० ॥५७॥
उत्पाद अभिषेक अलंकृते, व्यवसाय सुधर्मा नाम ललना,
सभा पांच त्रिबारणे, चउ चउ प्रतिमामान ल० ॥ शा० ॥ ५८ ॥
साठबिंब सभा पांचना, एकशोवीश प्रासाद ललना,
एम मली एकशोएंशी हुवे, प्रणमुं मन आल्हाद ल० ॥ शा०॥५९॥
वैमानिक जिनघर परे, दीर्घपृथु उच्चमाण ललना.
रुचककुंडलनंदीसरे, चैत्यतणा परिमाण ल० ॥ शा० ॥ ६० ॥
ऋषभचंद्रानन नामथी, वारिषेण वर्द्धमान ललना.
षड्द्रव्यतणी पेरे शाश्वती, जिनप्रतिमा परिमाण ल० ॥ शा० ॥६१॥

ढाल ४ थी.

राग—माइ धन सुपनांतरे ए देशी.

हवे सघला शासय चैत्य संख्या कहुं सार,
त्रिभुवनमां जे छे दीठे जयजयकार;
आठकोडिसत्तावनलाखबिसयने ब्यासी,

वंदे वळी पूजे जे होइ समकितवासी ॥ ६२ ॥
पन्नरसयकोडि बेंतालीस वली कोड,
तेम लाखअट्ठावन छत्रीशसहस्स तेम जोडि;
ऐंशी वली साधिक प्रतिमा त्रिभुवनमांहि,
ए शासयभावे प्रणमुं मन उच्छांहि. ॥ ६३ ॥

एहथी वली अधिक कुंड नदी तरु शैले,
प्रमुख वली संभव वृद्ध कहे धरी स्नील;
तिहां हवे नहीं कोइ बहुश्रुतवचनप्रमाण,
पण गाथासंख्या ए सवि स्थानक जाण ॥ ६४ ॥
वली समहिम तीरथ अवरजिके केइ नामी,
शत्रुंजय अष्टापद समेत अबुदगिरि नाम;
जिहां जिनकल्याणक चंपा पावा नाम,
सावत्थी गजपुर राजगृहे अभिराम ॥ ६५ ॥
पुरपट्टण गामे नामे विविधप्रकार,
भक्ति (१) मंगल (२) निश्राकृत (३) अनिश्राकृत (४) चार;
त्रिभुवनमां वली छे जिनवरना आकार,
तस वंदन करतां बोधिबीज विस्तार ॥ ६६ ॥
समकितशुद्ध करवा मोटो एह उपाय,
शुभयोग निमित्ते जिनपूजा शिवदाय;
निक्षेपा चारे जिनना एकणिरूप,
ध्याता भवि होवे निरावरण निज रूप ॥ ६७ ॥

वीतरागनी बुद्धि वीगरागता आणी,
जिनप्रतिमा जाणो जिनसरीखी भविप्राणी;
श्रीज्ञानविमलप्रभु प्रणमे जे जनवृंद,
तस उदय अनोपम अनुभव परमाणंद ॥ ६८ ॥

अथ श्रीसिद्धचक्रनुं चैत्यवंदन.

श्रीसिद्धचक्र आराधतां, सुखसंपत्ति लहीए;
सुरतरु सुररमणी थकी, अधिकज महिमा कहीए. ॥ १ ॥
अष्टकर्म हाणी करी, शिवमंदिर रहीए;
विधिशुं नवपद ध्यानथी, पातिक सवि दहिए. ॥ २ ॥
सिद्धचक्र जे सेवशे, एक गना नरनार;
मनवांछित फळ पामशे, ते सवि भुवन मजार. ॥ ३ ॥
अंगदेश चंपापुरी, तस केरो भूपाल;
मयणा साथे तपतपे, ते कुंवर श्रीपाल. ॥ ४ ॥
सिद्धचक्रजीना नमणथी, जस नाठा रोग;
तत्क्षण त्यांथी ते लहे, शिवसुख संजोग. ॥ ५ ॥
सातसें कोढियाहता, हुवा निरोगी जेह;
सोवनवाने जलहले, जेहनी निरुपम देह. ॥ ६ ॥
तेणे कारण तमे भवि जनो, प्रह उठी भक्ते;
आशो मास चैतर थकी, आराधो जुगते. ॥ ७ ॥
सिद्धचक्र त्रण कालना, वंदो वळी देव;

पडिक्कमणुं करी उभयकाल, जिनवर मुनि सेव. ॥ ८ ॥
नवपद ध्यान हृदे धरी, प्रतिपालो भवि शील;
नवपद आंबिल तपतपो, जेम होय लीलम लील. ॥ ९ ॥
पहेलुं पद अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान;
बीजुं पद वळी सिद्धनुं, करीए गुणग्राम. ॥ १० ॥
आचारज त्रीजे पदे, जपतां जय जयकार;
चोथुं पद उवज्झायनुं, गुण गाउं उदार. ॥ ११ ॥
सर्व साधु वंदुं सही, अढीद्वीपमां जेह;
पंचमपदमां ते सही, धरजो धरी सनेह. ॥ १२ ॥
छठे पदे दर्शन नमुं, दर्शन अजवाळुं;
ज्ञानपद नमुं सातमें, तेम पाप पखालुं. ॥ १३ ॥
आठमुं पद रुडे जपुं, चारित्र सुसंग;
नवमेपद बहु तप तपो, जिम फल लहो अभंग. ॥ १४ ॥
एही नवपद ध्यानथी, जपतां नाठे कोढ.
पंडित धीरविमल तणो, नयवंदे करजोड. ॥ १५ ॥ इति० ॥

अथ श्रीसिद्धभगवाननुं चैत्यवंदन.

सिद्ध सकल समरुं सदा, अविचल अविनाशी; थाश्ये छे वळी थाय छे, थया अडकर्म विनाशी ॥ १ ॥ लोकालोकप्रकाश तास, कहेवा कोण शूरो; सिद्ध बुद्ध पर पारगत, गुणथी नहि अधूरो ॥ २ ॥ अनंत सिद्ध एणीपेरे नमुं ए, वळी अनंत अरिहंत; ज्ञानविमल गुण संपदा. पाम्या ते भगवंत ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीअतीतचौवीशीजिनचैत्यवंदन.

अतीतचौवीशी प्रथम देव, जिन केवलज्ञानी; निर्वाणी सागर महा—जस विमल अभिधानी ॥ १ ॥ सर्वानुभूति श्रीधर सुदत्त, दामोदर सुतेजा, स्वामी सुव्रत सुमतिने, शिवगती सुहेजा ॥ २ ॥ अस्ताघ नेमीश्वर अनिल, यशोधर कृतार्थ जिणेश; शुद्धमति ने शिवंकरो, स्यंदन संप्रति कहेश ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीवर्तमानचोवीशीजिनचैत्यवंदन.

ऋषभ अजित संभव अभि—नंदन, आराधुं सुमति; पद्मप्रभने सुपास चंद्र—प्रभ ध्याउं सुविधि ॥ १ ॥ शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमलनाथ अनंत; धर्म शांति ने कुंथुनाथ, अर मल्लि भगवंत ॥ २ ॥ मुनिसुव्रत नमि नेमजी, पार्श्व वीर चौवीश; धीरविमलपंडित तणो, कहे ज्ञानविमलसूरीश ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीअनागतचौवीशीजिनचैत्यवंदन.

पद्मनाभ पहेला जिणंद, श्रेणिक नृपति जीव; सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक जीव ॥ १ ॥ श्रीसुपास त्रीजा वली, जीव कोणिक उदाइ; स्वयंप्रभ चोथा जिणंद, पोट्टिलमुनि भाइ ॥ २ ॥ सर्वानुभूति जिन पांचमा, दृढायुश्रावक जाण; देवश्रुत छठ्ठा जिणंद, कार्तिकशेठ वखाण ॥ ३ ॥ श्रीउदयजिन सातमा, शंख श्रावक जीव श्रीपेढाल जिन आठमा, आनंदमुनि जीव ॥ ४ ॥ पोटिल नवमा वं

दिए, जीव जेह सुनंद, शतकीर्त्ति दशमा जिणंद, शतकश्रावक आणंद ॥ ५ ॥ सुव्रतजिन अगीयारमा, देवकीराणी जाण, अममजिनवर बारमां श्रीकेशव गुण खाण ॥ ६ ॥ निष्कषाय जिन तेरमा, सत्यकीविद्याधर; निष्पुलाक जिन चौदमा, बलभद्र सोहंकर ॥ ७ ॥ श्रीनिर्मम जिन पंदरमा, जीव सुलसा श्राविका; चित्रगुप्त जिन सोलमा, रोहिणी जीव भाविका ॥ ८ ॥ श्रीसमाधि जिन सत्तरमा, रेवती श्राविका जाण; श्रीसंवर जिन अढारमा, जीव सताली वखाण ॥ ९ ॥ श्रीयशोधर ओगणीशमा, जीवकृष्णद्वीपायन; विजयनाम जिन वीशमा, जीवकर्ण सहायण ॥ १० ॥ एकवीसमा श्रीमल्लिनाथ कृष्ण नारद कहीए; अंबड श्रावक जीव देव, बावीसमा लहीए ॥ ११ ॥ अनंतवीर्य तेवीशमा, जीव अमरनो जेह; श्रीभद्र जिन चोवीशमा, स्वातिबुद्ध गुणगेह ॥ १२ ॥ ए चौवीशे जिणवरा, होशे आवते काले; भाव सहित ते वंदिए, करजोडी भाले ॥ १३ ॥ लंछन वर्ण प्रमाण आयु, अंतर सवि सरिखा; संप्रति जिन चौवीशी परे, चडते सवि निरखा ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक तेहना ए, होशे एहीज दिवसे; धीरविमलगुरुनो कहे, ज्ञानविमलसूरीश ॥ १५ ॥ इति ॥

अथ श्रीवीशविहरमानजिनचैत्यवंदन.

पहेला जिनवर विहरमान, श्रीसीमंधर स्वामी, युगमंधर बीजा नमुं; मुज अंतरजामी ॥ १ ॥ त्रीजा बाहु जिनेसरु, प्रणमुं भगवंत; चोथा जिन श्रीसुबाहु, वंदु वली जुगते ॥ २ ॥ श्रीसुजात पंचम

जिन ए, छट्ठा स्वयंप्रभ स्वामी; ऋषभानन जिन सातमा, हुं प्रणमुं शिरनामी ॥ ३ ॥ अनंतवीर्य जिन आठमा, सूरप्रभ छे नवमा; श्री-विशाल दसमा जिणंद, जस मोटो महिमा ॥ ४ ॥ श्री वज्रधर अगीयारमां, बारमा चंद्रानन; चंद्रबाहु जिन तेरमा, जसवर्णो कंचन ॥ ५ ॥ भुजंगस्वामी जिन चौदमा, वंदु उलट आणी; श्रीइश्वर जिन पंदरमा, नर्माए नित्य सुखिहाण ॥ ६ ॥ नेमिप्रभ जिन सोलमा, सुखदायक जेह; सत्तरमा श्रीवीरसेन, वंदु धरी नेह ॥ ७ ॥ महाभद्र अढारमा, देवजशा ओगणीस; अजित वीर्यजिन बीशमा, ज्ञानविमल-सूरीश ॥ ८ ॥ इति० ॥

अथ श्रीसाधारणजिनचैत्यवंदन.

चउजिन जंबुद्वीपमां, अडधातकी खंडे; पुष्कर अर्ध आठ जाण, एम विशेष अखंडे ॥ १ ॥ अडपणवीस चउवीस नवम, विजये विचरंता; बाल तरुण नृप पद पणे, वली अपर अरिहंता ॥ २ ॥ सित्तेरसो उत्कृष्टथी ए, भरहेरवय प्रमाण; ज्ञानविमल जिनराजनी, शिर धरीये शुभ आण ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीशाश्वतजिनचैत्यवंदन.

लाख बहोत्तेर कोडी सात, अधो लोक प्रासाद; तिहां प्रतिमा वळी वंदिए, मनमां धरी आल्हाद ॥१॥ तेरसेकोडि नव्याशी कोड, साठ लाख सोहावी; व्यंतर ज्योतिषीमां प्रासाद, तस संख्या भावी

॥ २ ॥ भवनपतिमां ए कह्यां ए, सासय जिनवर गेह; ज्ञानविमलथी जाणीए, आगम निःसंदेह ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीशाश्वतजिनप्रतिमासंख्याचैत्यवंदन.

तिर्च्छालोके त्रण सहस, बेसय ओगणसाठ; जिनघर ए छे शाश्वतां, तिहां बिंब उकिठ ॥ १ ॥ सहस एकाणुं लाख त्रण, त्रणसय ने त्रेवीश; प्रणमुं अवर अशाश्वता, बहुलां जे दीशे ॥ २ ॥ अधोलोके सगकर मितिए, धनुष पंचशत मान; तिर्च्छा लोके वंदिए, ज्ञानविमल चित्त आण. ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीऊर्ध्वलोकस्थितशाश्वतजिनचैत्यवंदन.

ऊर्ध्वलोके सौधर्म आदि, अनुत्तर जारेह; सहससताणुं चुलशी, लख तेवीस जिनगेह ॥ १ ॥ एकसोकोड बावनकोडि, वली चोराणुं लाख; सहस चुंमालीस सातसें, उपर सत्रि भाख ॥ २ ॥ सगकरमाणे अच्चुत लगे, एकशतएंशी जिन बिंब; एक शतवीस अनुत्तर लगे, ज्ञानध्यान अविलंब ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीशाश्वतजिन चैत्यवंदन.

लाख सतावन कोडिने, अठ्ठसय ब्यासी नित्य; चैत्य जुहारुं शाश्वतां, प्रतिमानी भक्ते ॥ १ ॥ कोडिपन्नरसय उपरे, बेंतालीस कोडि; अठ्ठावनसहस बत्रीस, उपरे एशी जोडि ॥ २ ॥ एम त्रिभु-

वनमां शाश्वता ए, चैत्यबिंब जिनराय; भाव धरीने प्रणमतां, ज्ञानविमल सुख थाय ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीपंचतीर्थादि चैत्यवंदन.

शत्रुंजय रैवतगिरि समेत, अर्बुद अष्टापद; पावा चंपा राजगेह, मथुरादिक जिनपद ॥ १ ॥ जिहां जिन पंच कल्याणक, स्थानक सुविशेष; लघु अंगुठ प्रमाण बिंब, जिनना जिहां लेखे ॥ २ ॥ नाम स्थापना द्रव्यथीए, भाव निक्षेपे सार; ते सविओने वंदना, ज्ञानविमल जयकार ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीचोवीशजिनगणधरादिसंख्यामय चैत्यवंदन.

एकसहसने चारसें, बावन वळी जाणो; सविजिनना पुंडरीक आदि, अंते गौतम आणो ॥ १ ॥ अडवीशलख अडयालसहस, मुनि जिनकर दीशा; लखचुंमालीस सहसछियाल, चउसय पट शिष्या ॥ २ ॥ ए साहुणी जिनवर तणी, ए सविहुंती जाण; शुद्धसंयम आराधतां, ज्ञानविमल गुणखाण ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीउत्कृष्टकालना केवलिसाधुओनी संख्यामय चैत्यवंदन.

उत्कृष्टे काले हुवे, केवली नव कोड; साधु वळी नवसहसकोड, संमति नवि खोड ॥ १ ॥ बेकोडि केवलधरा, मुनि दोय कोडि सहस; संयम गुणमणि ज्ञान ध्यान, जे हुवा ने होशे ॥ २ ॥ ते स-

त्रिउं ने वंदना ए, ज्ञानविमल करि भाव; गुणिजन मुनिजन वंदना भवजल तरवा नाव ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअढारदूषणवर्जनगर्भित जिनचैत्यवंदन.

दान लाभ भोगोपभोग, बल पण अंतराय; हास्य अरति रति भय दुगंछा, शोक षट कहेवाय ॥ १ ॥ काम मिथ्यात अज्ञान निद्रा, अविरति ए पांच; राग द्वेष दोय दोष, ए अढारस संच ॥ २ ॥ ए जेणे दूरे कर्या ए, तेने कहीये देव, ज्ञानविमलप्रभु चरणनी, कीजे अहनिश सेव ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअढारदोषवर्जनगर्भित जिनचैत्यवंदन.

क्रोध मान मद लोभ माया, अज्ञान अरति रति; हिंसादिक अनंग ते, मत्सर अप्रीति ॥ १ ॥ शोक भी तणे प्रीति रति, क्रीडा प्रसंग; दोष अढार प्रकट निकट, नहि जेणे अंग ॥ २ ॥ देव सवे शिर सेहरो ए, ते कहिए निरधार; ज्ञानविमलप्रभु भुवननो, पुण्य तणो भंडार. ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीआठप्रातिहार्यगर्भितजिन चैत्यवंदन.

बार गुणो तनुथी अशोक, देव दुंदुभी वाजे; चामर विंझे चिहुं दिशे, बार छवि राजे. ॥ १ ॥ सिंहासन सपादपीठ, भामंडल दीपे दिव्यध्वनि मीठासथी, अमृतरस जीपे ॥ २ ॥ कुसुम वृष्टि पंचवर-

णनीए, प्रातिहार्यअड एह; ज्ञानविमळसूरि इम कहे, छे तेहशुं मुज नेह. ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअतिशयगर्भितजिनचैत्यवंदन.

अतिशय चार अति भला, होय जन्मथी साथे; रोग शोग मल स्वेद रहित, जस अंग सनाथ ॥ १ ॥ पंकज परिमल सासोश्वास, गोखीर सरिखा; रुधिर मांस आहारनिहार, नहि केणे निरखा॥२॥ घातिकर्मक्षयथी हुवे ए, अतिशय वळी अगीयार; ओगणीस सुरकृत इम चोत्रीस, अतिशय ज्ञान भंडार ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीपंचपरमेष्ठिगुणगर्भितजिनचैत्यवंदन.

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमी जे भावे; सिद्ध आठ गुण समरतां, दुख दोहग जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण छत्रीस, पचवीश उवज्झाय; सत्तावीस गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अ-ष्टोत्तर सय गुणमळी ए, इम समरो नवकार; धीरविमलगुरुनो कहे, ज्ञान विमल सुखकार ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीशरीरवर्णगर्भितजिनचैत्यवंदन.

पद्मप्रभने वासुपूज्य, दोय राता कहीये; चंद्रप्रभने सुविधिनाथ, दोय उज्वल लहीये ॥ १ ॥ मल्लिनाथने पार्श्वनाथ, दोय नीला नि-रख्या; मुनिसुव्रतने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥ २ ॥ सोले जिन

कंचन समा ए, एहवा जिन चउवीस; श्रीरविमल गुरुराजनो. कहे ज्ञानविमलसूरीश ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीशरीरप्रमाणगर्भितजिनचैत्यवंदन.

पंचसया धनुमान जाण, श्रीप्रथम जिणंद; पंचास उणा करो; शत सुविधि जिणंद ॥ १ ॥ दश उणा करतां हुवे, जा अनंत पंचास; पंचोणुं दश धनुप तेम, नव करे छे श्रीपास ॥ २ ॥ सात हाथ तनु वीरजी ए, एहवा जिन चौवीश; भाव धरीने वंदना. करे ज्ञानविमलसुरीश. ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीलांछनगर्भितचिनचैत्यवंदन.

वृषभ गज हय कपि क्रौंच, कमल स्वस्तिक शशि मच्छ; श्रीवच्छ खड्गि जीव महिष. सुयर तिम अच्छ ॥१॥ सेण वज्र मृग छागलो जाति नंदावर्त्त; कुंभ कच्छप नीलुं कमल, शंख फणि सिंह अदंत ॥ २ ॥ रुषभादिक जिनवर तणाए, एहवा जिन चउवीश; ज्ञान विमल प्रभु सेवतां, सुख लहे विश्वावीस ॥ ३ ॥

अथ श्रीभवगणनागर्भित जिन चैत्यवंदन.

प्रथम जिणंद तणा भला, भव तेर कहीजे; शांति तणा भव बार सार, नव भव नेम लहीजे ॥ १ ॥ दश भव पास जिणंदना, सत्तावीश श्रीवीर; शेषतीर्थंकर त्रिहुं भवे, पाम्या भवजलतीर ॥ २ ॥

जिहांथी समकित फरसीयुं ए, तिहांथी गणीए एह, धीरविमल पंडित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीभवगणनागर्भितजिनचैत्यवंदन.

सत्तरिसय ठांणे कह्या, ए भव जिनवरना; बीजे ग्रंथे दाखिया, नव मुनिसुव्रतना ॥ १ ॥ चंद्रप्रभना आठ भव, नव भव सुविधिजिणंद, ऋषभ तेर ने शांति बार, नवभव नेमिजिणंद ॥ २ ॥ दश पास शेष ने त्रिहुं. वीर तणा सगवीश; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, वंदो जिन चउवीश ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीदीक्षातपगर्भितजिनचैत्यवंदन.

सुमतिनाथ एकासणुं, करी संयम लीध; मल्लि पास जिनराय दोय, अट्ठमे सुप्रसिद्ध ॥ १ ॥ छट्ठ भक्ते करी अवर सर्व, लीये संयम भार; वासुपूज्य करी चोथ भक्त, थया श्रीअणगार ॥ २ ॥ वर्ष अंते पारणुं करे ए, इक्षु रसे रिसहेश; परमान्ने बीजे दिने, पारणुं अवर जिनेश ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीदीक्षास्थानगर्भितजिनचैत्यवंदन.

विनीता नगरीए लीये, दीक्षा प्रथमजिणंद; द्वारामतीए नेमिनाथ सहसावन वृंद ॥ १ ॥ शेषतीर्थंकर जन्मभूमि, लीये संयम भार; अणपरण्या श्रीमल्लिनाथ, तेमज नेमिकुमार ॥ २ ॥ वासुपूज्य पास वी-

रजीए, भूप थया नवि एह; अवर राज्यभोगवी थया, ज्ञानविमल गुणगेह. ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीदीक्षापरिवारगर्भितजिनचैत्यवंदन.

चार सहस्सथी ऋषभदेव; श्रीवीर एकाकी; त्रण शत साथे मल्लि पास, सहस्स साथे बाकी ॥ १ ॥ षट्शत साथे वासुपूज्य, लीये संयम भार; मणपज्जव जिहां उपजे, सविने सुखकार ॥ २ ॥ एम चउवीशे जिनवराए, संभारे सुख थाय; ज्ञानविमलसुरि एम कहे होजो जिनसुपसाय ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीमोक्षगमनपरिवारगर्भितजिनचैत्यवंदन.

एकाकी श्रीवीर पास, तेत्रीश मुनि साथे; पंचशया छत्रीश नेमि नवशत शुं शांति ॥ १ ॥ पणसय शुं मल्लि सुपास, अडसय शुं धर्म; षटशत मुनि शुं वासुपूज्य, लह्यां जे शिव मर्म ॥ २ ॥ अनंतनाथ-जिन सहस्सशुं ए, ऋषभ ने दश हजार; पद्मप्रभने आटशें, उपर त्रण उदार ॥ ३ ॥ विमलनाथ षटसहस्सशुं, सिद्धा सुखकार; ऋष-भदेव अष्टापदे, नेमीश्वर गिरनार ॥ ४ ॥ चंपा वासुपूज्य वीर—पा-वापुरी सार; अष्टकर्मनो क्षय करी, पाम्या भवजल पार ॥ ५ ॥ शेष वीश संमेत गिरिए, शिवसुख लह्यां उदार; ज्ञानविमल सुख संपदा, जेने अचल अपार ॥ ६ ॥ इति. ॥

अथ श्रीसीमंधरजिनचैत्यवंदन.

पहेला प्रणमुं विहरमान, श्रीसीमंधर देव; पूर्व दिशे इशान कुणे, वंदु हुं नित्यमेव ॥ १ ॥ पुक्खलवइ विजया तिहां, पुंडरीकिणी नयरी; श्रीश्रेयांस राजा भलो, जीत्या सवि वयरी ॥ २ ॥ देहमान धनुष्य पांचशें, माता सत्यकी नंद; रुक्मिणी राणी नाहलो, वृषभ लंछन जिनचंद ॥ ३ ॥ चोराशीलाखपूरव आय, सोवनवरणीकाय; त्रीश लखपूरव कुमार वासि, तेम तेसठ राय ॥ ४ ॥ गणधर चोराशी कह्या ए, मुनिवर एकसो कोडि; पंडितधीरविमल तणो, ज्ञानविमल कहे करजोडी ॥ ५ ॥ इति. ॥

अथ श्रीनवपदनुं चैत्यवंदन.

दर्शन ज्ञानचारित्र भेदे, पण पण पण पंदर; तप सग पण बावीश ए, शत एक अट्ठ अवर ॥ १ ॥ तेरसहस्य गुणुणुं गणी, नवपद आराधो; लब्धि सिद्धि विद्या निधान, सहेजे शिवपद साधो ॥ २ ॥ बांधो एम भवकर्मने, पामो सिद्धपर्याय; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, शुद्धद्रव्य होइ जाय ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीमेरुगिरिचैत्यवंदन.

जंबु पूर्व कुरुक्षेत्र मांहि, वडो मेरु सुदर्शन; लाखजोयण उन्नत प्रमाणे, शत सघळो वनि कंचन ॥ १ ॥ भद्रशाल नंदनवने, सुमनस पांडुक नाम; चार चार जिनगेह त्यां, चूलाए एक धाम ॥ २ ॥

सत्तर प्रासाद एम शाश्वताए, पांचे मेरु मझार; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, ते वंदो निरधार ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीधातकीखंडपुष्करार्द्धगतमेरुगिरिचैत्यवंदन.

धातकीखंडे मेरु दोय, एक विजय बीजो अचल; पुष्करार्द्धे पण दोय मेरु, मंदर विद्युतप्रभ ॥ १ ॥ सहस्स चोराशी जोयणमान, मेरु सघळा जाणुं, सत्तर प्रासाद छे एम मली, पंचाशी वखाणुं ॥२॥ कंचनवर्णए शाश्वता ए, जीवाभिगमविचार; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, धन्य जे करे दीदार ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीज्योतिश्चक्रस्थितजिनचैत्यवंदन.

समभूतलथी उपरे, ज्योतिश्चक्र कहीजे; आठ प्रदेशनो मेरुनो, मध्यसमभागलहीजे ॥ १ ॥ सगसयनवति (७९०) जोयणे, उंचा छे तारा; आठसये पुरा थया, रविमंडल सारा ॥ २ ॥ अंशीजोयण उपरे ए, शशि ऋख बुध गुरु मंद; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, ए ज्योतिश्चक्र अमंद ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीज्योतिश्चक्रस्थितशाश्वतजिनचैत्यवंदन.

नवसें जोयण ज्योतिश्चक्र, पुष्करार्द्ध लहीये; पुष्करार्द्धथी ज्योतिश्चक्र, स्थिरभावे कहीए ॥ १ ॥ असंख्यद्वीप अने समुद्र, शाश्वती जिनप्रतिमा; जीवाभिगमे ए विचार, मोटो जस महिमा ॥ २ ॥

नामाकारद्रव्यभावथीए सवि क्षेत्रे सर्वकाल; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, जिनबिंबुं ए सवि आल ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीजन्माभिषेकस्थानगर्भितजिनचैत्यवंदन.

पांडुकवन चारे शिला, एक दक्षिण उत्तर; दोय शिला वली जाणीये, एक पूरव एक अपर ॥ १ ॥ पूर्व पश्चिम दोय दोय, सिंहासन होय; दक्षिण उत्तर एक एक, सिंहासन जोय ॥ २ ॥ जन्म समय दशवीशनो ए, अेकण समये जन्म; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, ते वंदु शुभसद्म ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीबीजतिथिनुं चैत्यवंदन.

दुविध धर्म आराधवा, भविजन बीज आराधो; जेम अंतर परमातमा, संप्राप्ति फल साधो ॥ १ ॥ अभिनंदन जिन सुमतिनाथ, वली शीतलस्वामी; इत्यादिक बहुजिनवरे, केवलसिरि पामी ॥ २ ॥ जन्म दिवस पण केइकनाए, केइक लह्या निर्वाण; ज्ञानविमलगुणथी वधे, जो कीजे तप मंडाण ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीबीजतिथिनुं चैत्यवंदन.

दुविधबंधनने टालीए, जे वली रागने द्वेष; आर्त्तरौद्र दोय अशुभ ध्यान, नवि करो लवलेश ॥ १ ॥ बीजदिने वली बोधि बीज, चित्त ठांणे वावो; जेम दुःख दुर्गति नवि लहो, जगमां जश चावो

॥ २ ॥ भावो रुडी भावना ए, वाधो शुभ गुणठाण; ज्ञानविमल तपतेजथी होय कोडिकल्याण ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीज्ञानपंचमीतिथिनुं चैत्यवंदन.

शामलवाने सोहामणा, श्रीनेमिजिणेसर; समवसरण बेठा कहे, उपदेश सोहंकर ॥ १ ॥ पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण; पांच वरस साढा तथा, ए छे तपपरिमाण ॥ २ ॥ जेम वरदत्तगुण मंजरीए, आराध्यो तप एह; ज्ञानविमलगुरु एम कहे, धन्य धन्य जगमां तेह ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअष्टमीतिथिनुं चैत्यवंदन.

आठत्रिगुण जिनवर तणी, नित्य कीजे सेवा; वहाली मुज मन अतिघणी, जिम गज मन रेवा ॥ १ ॥ प्रातिहाराज आठ शुं, ठकुराइ छाजे; आठे मंगल आगले, जेहने वली राजे ॥ २ ॥ भांजे भय आठ मोटकांए, आठ करम करे दूर; आठमदिन आराधतां, ज्ञान विमल भरपूर ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअष्टमीतिथिनुं चैत्यवंदन.

राजसिद्धारथ कुलतिलो, त्रिशलादे मात; हरिलंछन कंचनवाने, सात हाथ सोहात ॥ १ ॥ आयु बहोंतेर वरस मान, सकलारथ साधी, शिवपद पाम्या धरीय ध्यान, संजम आराधी ॥ २ ॥ आठे

मद छंडी करीए, प्रणमो वीरजिणंद, ज्ञानविमलप्रभु सेवतां, नित्य नित्य आनंद ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअग्यारशतिथिनुं चैत्यवंदन.

अंग अग्यार आराधीए, एकादशीदिवसे; एकादशप्रतिमा वहो, समकित गुण विकसे ॥ १ ॥ एकादशी दिवसे थया, दीक्षाने नाण; जन्म लह्या केइ जिनवरा, आगम परिमाण ॥ २ ॥ ज्ञानविमल गुण वाधतां ए, सकलकलाभंडार; अग्यारश आराधतां, लहीये भवजल पार ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीअग्यारशतिथिनुं चैत्यवंदन.

आज ओच्छव थया मुज घरे, एकादशी मंडाण; श्रीजिननां त्रणशें भला, कल्याणक घर जाण ॥ १ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरघट, कल्पवेली फली माहरे; एकादशी आराधतां, बोधिबीज धणुं चित्त ठारे ॥ २ ॥ श्रीनेमिजिणेसर पूजतांए, पहोंचे मनना कोड; ज्ञान विमळगुणथी लहो, प्रणमो बे करजोडी ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीचौदशतिथिनुं चैत्यवंदन.

चउसुपन लहे मावडी, सवि जिनवर केरी; ते जिन नमतां चौदराज–लोके न होय फेरी ॥१॥ चौदरत्न पति जेहनां, प्रणमे पद आवी; चौदविद्याना थया जाण, संजमसिरि आवी ॥ २ ॥ चौदरा

जशिर उपरे, सिद्ध सकलगुणठाण; ज्ञानविमल प्रभुध्यानथी, होय अचल अहिठाण ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीचौदशतिथिनुं चैत्यवंदन.

चौदभुवन वशकारणे, विद्यावर्द्धमान, वर्द्धमान सुख आपवा, एह परमनिधान ॥ १ ॥ वर्धमानजिनराजनो, करो भक्तिका ध्यान; चौदपूरव भेद जीवना, ए यतना प्रधान ॥ २ ॥ चौद पूरबनो सार छे ए, चौदशीए जिनराज; ज्ञानविमलथी जाणीए, एना सकल दीवाज ॥ ३ ॥ इति. ॥

अथ श्रीचंदकेवलिना रासमांथी चैत्यवंदन.

श्रीरागेण गीयते.

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेसर श्रीजिनराज नमो; प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अरिहंत० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परममहोदय, अविनाशी अकलंक नमो; अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि. प्रवचनजलधिमयंक नमो ॥ अरिहंत० ॥ २॥ तिहुयण भवियण जणमण वंछिय–पुरण देवरसाल नमो; ललि ललि पाय नमुं हुं भाले–करजोडीने त्रिकाल नमो ॥ अरिहंत० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन–नयनानंदन देव नमो; सकलसुरासुर-नरवरनायक, सारे अहनिश सेव नमो ॥ अरिहंत० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तुं निष्कारण बंधु नमो; शरणागत जीवने हित

वत्सल, तुंहि कृपारससिंधु नमो ॥ अरिहंत ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो; नाशित सकळकलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अरिहंत० ॥६ ॥ जग चिंतामणि जगगुरु जगहित—कारक जगजननाथ नमो; घोर अपार भवोदधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अरिहंत० ॥ ७ ॥ अशरण शरण निरागी निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो; बोधि दीयो अनुपम दानेसर, ज्ञानविमलसूरीश नमो ॥ अरिहंत० ॥ ८ ॥

अथ श्रीचतुर्विंशतिजिन चैत्यवंदन.

आदिनाथप्रभु प्रथमदेव, सेवे सुखकारण,
बीजा अजितजिणंददेव, भवपापनिवारण ॥ १ ॥
त्रीजा संभव सुखकरु, ए वांछितदातार;
अभिनंदन चोथा नमुं, जिम पामुं भवपार ॥ २ ॥
सुमतिनाथ सुपरि नमुं. जिन पंचम कहीए;
पद्मप्रभ छट्ठा जिणंद, जपतां सुख लहीए ॥ ३ ॥
जिनसुपाससामी सातमा ए, सेव्ये संपत्ति कोडि;
श्रीचंद्रप्रभप्रभु आठमा, नमता नावे खोडी ॥ ४ ॥
सुविधिनाथ शिवतणो साथ, नवमा भगवंत;
दशमा शीतलनाथसामी, सेव्ये भवअंत ॥ ५ ॥
श्रेयांसजिन अग्यारमाए, जगजंतुजयकार;
बारमा श्रीवासुपूज्य, पूज्ये सुख सार ॥ ६ ॥

तेरमा श्रीविमलनाथ, भवभावठ भंजे;
अनंतनाथजिन चउदमा, दुर्गति दुःख गंजे; ॥ ७ ॥
धर्मनाथप्रभु पन्नरमाए, प्रणम्ये परमानंद;
शांतिजिणेसर सोलमा, समरये नित आणंद ॥ ८ ॥
सत्तरमा भावे नमो; भवि कुंथुकृपाल;
अढारमा अरनाथदेव, अरिहंत दयाल ॥ ९ ॥
मल्लीनाथ ओगणीशमाए, शिवसंपददातार;
मुनिसुव्रतजिन वीशमा, विश्वतणो आधार ॥१०॥
एकवीशमा नमिनाथजी निरख्ये निधि लहीए;
नेमिनाथ बावीशमा, जस ध्याने रहीये ॥११॥
पार्श्वनाथ तेवीशमाए, जस नामे दुःख जाय;
वर्द्धमानजिन चोवीशमा. समरंता सुख थाय ॥१२॥
अतीत अनागत वर्त्तमान, जे जिनवर कहीए;
स्वर्गमर्त्यपातालमांहे, जिनप्रतिमा लहीए ॥१३॥
ते सवि वंदो भावशुए, भविका मन उल्लास;
ज्ञानविमल प्रभुनामथी, जिम लहो शिवपुरवास ॥१४॥

अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन.

नमदेव नागेंद्र मंदार माला, मरिंद छटाधौत्तपादारविंदं ॥ परा-नंद संदर्भ लक्ष्मी सनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ तमो राशिवि त्रासने वासरेशं, हतक्लेशलेशं श्रियांसं निवेसं ॥ क्रमा-

लीन पद्मावती प्राणनाथं, स्तुवे देव चिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ २ ॥ नव श्री निवासं नवां भोदनीलं, नतानां श्री दानदानेसलीलं, त्रीलोकस्यपूज्यं त्रीला स्यनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ३ ॥ हत व्याधि वेतालभूतादि दोषं, कृताशेषपुण्यावली पुण्यपोषं ॥ मुख श्री पराभूत दोपाधिनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ४ ॥ नृपस्या श्वसेनस्य वंसेवतंसं, जना नामनो मानसेराज हंसं ॥ प्रभाव प्रभावाहिश्री सिंधुनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ५ ॥ कलोभाविनी कल्पवृक्षोपमानं, जग त्यात्मने संतति सावधानं ॥ चिरंमेदपाट स्थितं विश्वनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ६ ॥ इति नांग्रेद्रनरामर, वंदित पदांभोज प्रवर्त्तिनेजा ॥ देवपाल कुटकस्थः, सजयति चिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ७ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तोत्र समाप्तः ॥

॥ अथ पर्युषणनुं चैत्यवंदन ॥

सकल पर्व श्रृंगारहार ॥ पर्युषण कहीए । मंत्रमांही नवकार मंत्र ॥ महिमा जग लहिए ॥ १ ॥ आठ दिवस अमार सार ॥ अट्ठाइ पालो ॥ आरंभादिक परीहरी । नरभव अजुवालो ॥ २ ॥ चैत्यपरिपाटी सुद्ध साधु ॥ विधी वंदन जावे । अट्ठम तप संवत्सरी । पडिकमणुं भावे ॥ ३ ॥ साधर्मिक जन खामणांए ॥ त्रिवीधिशुं कीजे ॥ साधु मुख सिद्धांत कांत ॥ वचनामृत रस पीजे ॥ ४ ॥ नव व्याख्याने कल्पसूत्र ॥ विधी पूर्वक शुंणीए ॥ पुजा नव प्रभावना ॥

निजपातक हणीए ॥ ५ ॥ प्रथम वीर चरित्र बीज ॥ पार्श्वचरित्र अंकुर ॥ नेमि चरित्र प्रबंध खंध ॥ सुख संपत्तिपूर ॥ ६ ॥ ऋषभ चरित्र पवित्र पत्र ॥ शाखा समुदाय ॥ स्थविरावली बहु कुसुमपुर ॥ सरिखो कहिवाय ॥ ७ ॥ सामाचारी सुद्धताए ॥ वरगंधवखाणो ॥ शिव सुख प्राप्तीफल सही ॥ सुरतरु समजाणो ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधर श्री भद्रबाहु ॥ जीर्णेकल्प उद्धरियो ॥ नवमा पूर्वथी युग प्रधांन आगम जल दरिओ ॥ ९ ॥

सातवार श्री कल्पसूत्र ॥ जे सुणे भविप्राणी ॥ गौतमने कहे वीरजीन ॥ शीवराणी ॥ १० ॥ कालिक सूरि कारणेये ॥ पजुसण कियां ॥ परणे भादरवा सुदि चोथमां ॥ निज कारज सिद्धां ॥ ११ ॥ पंचमीकरणी चोथमां ॥ जीनवर वचन प्रमाणे ॥ वीर थकी नवसेंअेंसी ॥ वरसे ते आणे ॥ १२ ॥ श्री लक्ष्मीसागर सुरीस्वरूंए ॥ प्रमोदसागर सुखकार ॥ पूर्व पजूसण पालतां ॥ होवे जयजयकार ॥ १३ ॥ इति पर्युषणा चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ पर्युषणानुं चैत्यवंदन बीजुं ॥

॥ देशी विमल केवलनी ॥

पुण्योदयथी आवीयां ॥ पर्व पजुसण सार ॥ उछव रंग वधामणां ॥ मंगल हरख अपार ॥ १ ॥ महीधरमां सुरगिरीवडो ॥ तरुमां सुरतरु जेम ॥ सुरगणमां सुरपति वडो ॥ पर्व पजुसण तेम ॥२॥ अमरपडो वजडावीए ॥ जीव दयाने लाग ॥ सत्य वचन मुख भाखीए ॥ चोरी मैथुन त्याग ॥ ३ ॥ आरंभ मूर्छा छांडिए. नवी रमीए जुगार ॥ कजीओ कलह न कीजीए ॥ हांसीनो परिहार ॥४॥

द्रव्य भावजीन पूजीए ।। निरमल करी निज गात्र ।। विनती करी गुनीराजने ।। दीजे दान सुपात्र ।। ५ ।। सद्गुरु पासे सांभलो ।। कल्पसूत्र मनोहार ।। तीजा ओषधनी पेरे ।। पुण्य पुष्टी करनार ।। ६ ।। एकवीसवार जे सांभले ।। कल्पसूत्र सुखकंद ।। सात आठ भवमां लहे ।। पदवी परमानंद ।। ७ ।। जीनवर चैत्य जुहारीए ।। मुनि वंदन हितकार ।। वरसी पडिक्कमणुं करी ।। आलोइए अतिचार ।। ८ ।। साधर्मिकने खामणां ।। करिए सवि नरनार ।। क्षायक आराधक कह्यो ।। अवर विराधकधार ।। ९ ।। अष्टम तप वली कीजीए ।। सामी वछल रंग ।। लाभ अनेक तो पामीए ।। वरीए शिव सुख चंग ।। १० ।। इण विधपरव आराधिए ।। थीर करी मन वचकाय तो गुण माणेकसे वधा थइ ।। आतम शीव जाय ।। ११ ।। इति चैत्यवंदन संपूर्ण ।।

।। इती श्री जन्म नमस्कार लिख्यते ।।

श्रीसेत्रुंजय मंडणो ।। श्रीआदी जीणंद ।। पद अरविंद नमइ ।। जास सुर असुर नरिंद ।। काया धणुसय पंचउंच ।। वृषभ विराजे ।। गोमुख जक्ष चक्केस्वरी ।। शाशन सुरी छाजे ।। नाभिनर स्वर वंसमां, जाग्यो अभिनवसुर ।। त्रिकरण शुद्धि पुजतां ।। लछी लहो भरपुर ।।१।। पुरव पून्ये पामीए ।। पजुसण पर्व पूजा ।। पोसह करो भावे ।। मुको मनि गर्व ।। जीव अमारी तणो पडह । भावे वजडावो । नव निधि मंगल मालिका ।। जीम संपति पावो ।। पूजाने प्रभावनाए ।। पचखाण उदार । पडिकमणु वली कीजीए । साहमी वछल सार

॥ २ ॥ छठ करो भवि भावसुं ॥ जीन पुजा रचीजे ॥ अठोत्तरने सतर भेद ॥ जहशक्ति करी जे ॥ वइइ कल्प कल्पसूत्र ॥ ओछवस्युं आणी ॥ नाणे सोना रुप्यने ॥ पुजी सुणो प्राणी ॥ प्रथम चरीत्र श्रीवीरनुं ॥ जग जनमन सुखकार ॥ कल्प अछेरा दस कह्यां ॥ भव सत्तावीस सार ॥ ३ ॥ चउद सुपन भवि सांभलो ॥ लक्षण संयुक्त ॥ जन्म हुउ श्रीवीरनुं ॥ त्रिहुं बाधा मूत ॥ छपनदिसि कुंमरि करें ॥ ओछव अभिराम ॥ इंद्र सेवे उछव करे ॥ करे जीन गुणग्राम ॥ श्री सिद्धारथ भुपतिए ॥ जन्मोछव करेय ॥ इंद्र आणंदघनद देव ॥ द्रव्ये घर भरेय ॥ ४ ॥ जीन क्रिडा दीक्षातणां ॥ छे वहु अधिकार ॥ केवलनाण लेइ करी ॥ पाम्या भव पार ॥ त्रीजे दीन श्रीइंद्रभूति ॥ वरनांण संपत्त ॥ इत्यादिक सुणो विस्तरे ॥ श्रीवीर चरीत्त ॥ तेला धर दिवसे करोए ॥ अठम तप मनुहार ॥ नामकेतु श्रावक परें ॥ जीम हुइ जयजयकार ॥ ५ ॥ पुरिसादांणी पार्श्वनाथ ॥ श्रीनेमी चरीत्र ॥ जीनपति केरा आंतरा ॥ सुणी थइ ए पवित्र ॥ ऋषभ चरीत्र थिरावली ॥ यति समाचारी ॥ भावि सुणतां जाव समुद्र ॥ तरस्ये नरनारी ॥ संवछरी दिनेकरोए ॥ महा महोछवसार ॥ कल्पसूत्र सतवार मित ॥ सुणोए सुखकार ॥ ६ ॥ बार बोल पट्टावली ॥ धुरी सोहम स्वामी ॥ पाट परंपर विजयमान ॥ सुरीस सुधांमी ॥ कीजे चैत्य परिपाटका ॥ स्वामी स्वामी जे ॥ पडिक्कमणु करो भावसुं ॥ बहु दानज दीजे ॥ श्रीविजय आणंद सुरीस्वरुए ॥ तपगच्छ तिलक समान ॥ पंडित हंस विजयतणो ॥ धीर करे गुणगांन ॥ ७ ॥ इति जन्म नमस्कार समाप्त ॥

अथ श्री आदीजीन स्तवन.

श्री आदीनाथ आगले वेरे स्तुति करी ते स्तवन ॥
॥ हरियो चालिरे ॥ ए राग ॥

नमो नमो श्रीआदि जीणंदने । करी त्रिविध प्रणाम ॥ पंचाभि गमने नमन करंति । केवलज्ञानि नामे । प्रभुजी प्यारारे ॥ पुन्यथकी मे दीठा ॥ प्राण आधारारे ॥ सरस सुधार्थी मीठा ॥ १ ॥ राज पुरुष उपयोग करावे, कोलाहलने समावे ॥ साचि वाणी ए भावना भावे । सहुने अचरिज थावे ॥ वार्जीत्र नाद बजावे ॥ प्र. ॥ २ ॥ हुंतो कावरी बाबर द्वीपनी ॥ सास भरीए देही ॥ स्वामी बरोबर को नवी दिठो ॥ तुंहि अने हो उदाही ॥ प्र. ॥ ३ ॥ तुं निकलंक अने निरमोही ॥ तुं अद्रोही उदासी ॥ माहारा मनमाहेथी केणीपेरे ॥ कहो हवे केम फरी जासी ॥ प्र. ४ ॥ जीम पंकजमां मधुकर पेसे ॥ तिम मनकजमा पेठा । तुम दरशन पामे नवि हरखे ॥ ते निरगु- णीने धिठा ॥ प्र. ५ ॥ हुं तिर्यचर्णाने वली पक्षिणी ॥ लाखेणी तुम सेवा ॥ पामि एतो अनोपम भावे ॥ जीम भुख्या वरमेवा ॥ प्र. ॥ ६ ॥ भवभव तारी आणाशिर चहिए ॥ होजो अविचल भावे । तेहथी गोरस समकित सुधु । ज्ञानने चरणे जमावे ॥ प्र. ७ ॥ जेम घृत आप स्वभावे निर्मल रस ॥ सोध्यो कहो किम जाण ॥ तिम तुम हेते सुध स्वरुपनुं ॥ निरावरण प्रगटावे ॥ प्र. ८ ॥ इंद्र अनंता जो समकाले । भगति करे जो कबही । तोपण प्रभु गुण समतान

आवे । तो हुं तिर्यंचपणी केही ॥ प्र. ९ ॥ सारिकाणणि परे आदि देवनि । गुण स्तुति करवा लागी । सहु प्रसंगे जुवो ए अचरिज । ज्ञान विमलमति जागी । प्रभुजी प्याराारे ॥ १० ॥ इति आदी जीन स्तवन.

अथ श्री गौडी पार्श्वनाथ जीन स्तवन.

दुहा.

प्रणमीनीत परमेसरु, आंपा अविचल मन ॥
लघुताथी गुरुता करे, तुं सारद शरसत ॥ १ ॥
मुज उपर प्रया धरो, दीजे दोलत देव ॥
गुण गावूं गीरुवा तणा, भवे भवे भगवान ॥ २ ॥
धवल धेंग गोडि धणी, सहुको आवे संघ ॥
महीमदावादी मोटको, नारंगो नवरंग ॥ ३ ॥
प्रतीमा त्रणे पासनी, प्रगटी पाटण मांहि ॥
भगति करुं जे भवीजनां, कुण ते ए कहेवाय ॥ ४ ॥
उत्पत्ति तेहनी उच्चरुं, शास्त्र तणी करि साख ॥
मोटा गुण मोटा तणां, भाखे कवीजन भाष ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

नदि जमुनाके तीर ॥ ए देशी ॥

कासि देस मझारके नगरि वणारसी, एह समोवड कोय नहि लंकाजसी ॥ राज करे तिहां राजके अश्वसेन नरपति, राणी वामा नामके तेहनी दीपति ॥ १ ॥ जन्म्या पास कुमारके तेणे राणीए, ओच्छव कीधो देवके इंद्र इंद्राणीए ॥ जोवन परण्या प्रेमके कन्या प्रभावती, नीत नीत नवला वेस करि देखावती ॥ २ ॥ दीक्षा लेइ वनवास रह्या काउसग्ग जिहां, उपसर्ग करवा काजके मेघमाली आव्यो तिहां ॥ कष्ट देइने तेह गयो ते देवता, पाम्या केवल ज्ञान आवी नर सेवता ॥ ३ ॥ वरस ते सोनो आउखो भोगवी उपन्यां, जोति मांहे मली जोत तिहां केइ सपनां ॥ पाटण माहि मुरत त्रिण्यं पासनी, भरावी भूहरा माही राखी केइ मासनी ॥ ४ ॥ कदि न प्रेतमो तेह गोर्डीनी लेइ करि, पोहोत्या आवास मांहे, तरके लेइ धरी ॥ खाडखणीने मांहि तरके घालि जिहां, मुपनीत प्रते तेह सज्यावाली तीहां ॥ ५ ॥ एक दीन सूहणां मांहि आविने एम कहे, तिणे अवसर ने तरकहियां मांहि सद्दहे ॥ नहितर मारी समरडां सहवेहूं तुजने, ते माटे घर माहेथी काढ मुजने ॥६॥ पारकर मांहेथी मेघोसा इहां आवसे, ते तुज देसे टका पाचजो लावसे ॥ देजे मुरत एहके काढि तेहनी, मत कहेजे कोइ आगल वात केहने ॥ ७ ॥ थासे क्रोड कल्याणके ताहरे आजथी, वाधसे पंचामाहाके नाम ते लाजथी ॥ मनसुबीहीनोतरक थाय ते आकलो, आगले जे थाए वात ते भवियण सांभलो ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ माहरा घणुंरे सवाइ ढोला ॥ ए देशी ॥

लाख जोयण जंबुपरमान, तेहमां भरत क्षेत्रपरधान ॥ माहरा सुगुण सनेहि सुणजो तिहां पारकर देस छे रुडो, जेम नारीने सोने चूडो ॥ १ ॥ मा॰ ॥ सास्त्र मांहे जीम गीता, तेम सतियो मांहे जेम सीता ॥ मा॰ ॥ वाजिंत्र मांहि जेम भेर, तिम परवत मांहि मोटो मेर ॥ मा॰ ॥ २ ॥ देव मांहि जेम इंद्र, ग्रह गुण मांहि जीम चंद्र ॥ मा॰ ॥ बत्रीस सहस ते देस, तिम पारकर देस वीसेसरे ॥ मा॰ ॥ ३ ॥ तिहां भुदेसर नामे नयरी, तिहां रहेता नथी कोइ वयरी ॥ मा॰ ॥ तिहां राज करे खेंगार, ते तो जात तणो परमाररे ॥ मा॰ ॥ ४ ॥ तिहां वणीज करे व्यापारी, जेहने अपच्छरा सरखी नारी ॥ मा॰ ॥ तिहां मोटा मंदीर प्रधान, ते तो चउदसे बावन ॥ मा॰ ॥ ५ ॥ तिहां काजलसा व्यवहारी, सह संघमाही छे अधिकारी ॥ मा॰ ॥ तस पुत्र कलत्र परिवार, जस मानित छे दरबाररे ॥ मा॰ ॥ ६ ॥ ते काजलसानी बाइ, सा मेधोकीध जमाइ ॥मा॰॥ एक दिन सालो बनेवी, बेठां वातो करे एहवी ॥ मा॰ ॥ ७ ॥ इहांथी धन तुमे घणो लइ, लावो वस्तु केइ ॥ मा॰ ॥ गुजरात मांहे तुमे जाजो, जेहमां लाभ आवे ते लेजो ॥ मा॰ ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ बे घडाने ए देशी ॥

सा काजल कहेवात, मेघा भणी दीनरात ॥ सांभली सहदेए, बलतो इम कहे ए ॥ १ ॥ जाइस हुं गुजरात, साथ करि परभात ॥

सकुन भला सहिए, तो चालु वहिए ॥ २ ॥ धन घणो लेइ हाथ, परिवारे कर्यो साथ ॥ कंकु तिलक कीओ ए, सीफल हाथ दीओ ए ॥ ३ ॥ लेइ उंठ कतार, आव्यो चहुटामझार ॥ कन्या सनमुख मलीए, करति रंग रलीए ॥ ४ ॥ मालण आविताम, छाब भरी छे दाम ॥ वधावे सेट भणीए, आशीस दे घणीए ॥ ५ ॥ मच्छयुग ममल्या खास, वेद बोलंतो व्यास ॥ पत्र भणीजोगणीए, वृषभ हाथे धर्णाए ॥ ६ ॥ डाबो बोले सांड, दधिनो भरीओ भांड ॥ खरडावो खरोए, लोक कहे हैये धरो ए ॥ ७ ॥ आगल आव्या जाम, मारग वूंठांताम ॥ भेरव जमणी मलीए, देवडावी वलीए ॥८॥ जीमणी रुपारेल, तारी वांधी तिणवेल ॥ नीलकंठ तोरण कीओ ए, उलस्यो अति हीओ ए ॥ ९ ॥ हनुमंत दीधी हांक, मधुरो बोले काक ॥ लोक कहे सहुए, काम होसे बहुए ॥ १० ॥ अनुक्रमे चाल्या जाय, आव्या पाटण मांहे ॥ उतारो भलो कीयाए, सेठजी आवीयाये ॥ ११ ॥ नीसभर सुतां जीहां, जक्ष आविने त्यांही सुहणुं एम कहे ए, ते सघलो सद्दहे ए ॥ १२ ॥ तरकतणो छे धांम, तेहने घरे जइ जइ ताम ॥ पांचसे रोकडा ए, तुज देसे दोकडा ए ॥१३॥ देसे प्रतिमा एक, पास तणी सुविवेक ॥ तेहथी तुज थासे ए, चिंता दुर जसे ए ॥ १४ ॥ संभलावी जक्षराज, तरक भणी कहे साज ॥ प्रतिमां तुं देजे ए, पांचसे धन लेजे ए ॥ १५ ॥ इम करतां पर भात, तरक भणी कहे वात ॥ मनमां गहगहे ए, अचरीज कुण लहे ए ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥ आसणाराजोगी ॥

तरक भणी दीए पांचसे दाम, प्रतिमा आणी नीज ठामरे पा सजी मुने तुठा ॥ पुर्जी प्रतिमा हरख भराणो, भाव आणीने खरचे नाणोरे ॥ १ ॥ पा० ॥ मुज बखने ए मुरती आवी, मुज आपसे दाम उपाइरे ॥ पा० ॥ दाम देइनेरु तिहां लीधो, मन मान्यो कारज किधो रे ॥ २ ॥ पा० ॥ रुना भरीया उंट ते वीस, आगल रांधण पुर सहु आव्या ॥ दाण लेवा दाणि मली आव्या रे ॥ पा० ॥ गणे उंटने भुले लेखे, एक ओछो अधिको देखेरे ॥ ४ ॥ पा० ॥ मली सहू दाणी वीचारे मनमां, ए कौतक दीसे छे ए मांरे ॥ पा० ॥ मेघा साने दाणी मली पूछे, कहो सेठजी कारण सुं छे रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ सा मेघो कहे सांभलो दाणी, अमे मुरत गोडीनी आणीरे ॥ पा० ॥ ते मुरत ए बखी मांहे, कीम जालवीए बीजे ठांहेरे ॥ पा० ॥ ६ ॥ पारसनाथ तणे सुपसा ये, दाणी मेली दाण घर जायेरे ॥ पा० ॥ जात्रा करि सहुनीज घर आवे, जीन पुर्जी आनंद पावेरे ॥ पा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमे पारकर मांहे आवे, भुदेशर नगर छे ज्यांहीरे ॥ पा० ॥ वधामणी दीधी जेणे पुरुषे, थयो रलीयात घणू हरखेरे ॥ पा० ॥ ८ ॥

॥ ढाळ ॥ राणकपुर रलीयामणोरे लाल ए देशी ॥

संघ आवे मली सामटोरे लाळ, दरीसण करवा काज भवि प्राणीरे ॥ ढोल नगारा दडदडेरे, नादे अंबर गाज ॥ भ० ॥ १ ॥

सुणजो वात सोहामणीरे लाल, ओच्छव मोहोच्छव करि घणोरे लाल ॥ भेटया श्री पारसनाथ ॥ भ० ॥ पुजा प्रभावणा करि घणी रे लाल, हरख पाम्या सहु साथ ॥ भ० ॥ सु० ॥ २ ॥ संवत चउदस त्रीसमारे लाल, कार्तिक सुदनी बीज ॥ भ० ॥ थावर बारे थापीयारे लाल, नरपति पाम्या रीज ॥ ३ ॥ भ० ॥ सु० ॥ एक दिनकाजलसा कहेरे लाल, मेघा साने वात ॥ भ० ॥ नाणुं अमारुं लेइ करीरे लाल, गया हुता गुजरात ॥ ४ ॥ भ० ॥ सु० ॥ ते धन तुमे कीहा वावरयुरे लाल, तेघो लेखो आज ॥ भ० ॥ तव मेघो कहे सेठजीरे लाल, खरच्या धरमने काज ॥ भ० ॥ सु० ॥ ५ ॥ सामीजी मांटे रुपीआरे लाल, पांचसे सिद्धा दाम ॥ भ० ॥ काजल कहे तमे सु कर्युरे लाल, ए पथ्थर कीण काम ॥ भ० ॥ सु० ॥ ॥ ६ ॥ काजल भणी मेघो कहेरे लाल, ए व्पापार सौ भाग ॥ ॥ भ० ॥ ते पांचसे सीर माहरेरे लाल, तेमां नहि तुम लाग ॥ ॥ भ० ॥ सु० ॥ ७ ॥ मेधा सानी भार्या रे लाल, मरगा दे छे नाम ॥ भ० ॥ मेरोने महिओ सारिखोरे, बहु रति जसना काम ॥ भ० ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

सा काज मेघा भणी, बीहुं जण मांहे संवाद ॥ मोरा लाल ॥ तिहां मेघो धनराजने, एक दीन कीधो साद ॥ मो० ॥ सूणजो वात सोहामणी ॥ १ ॥ आ प्रतिमा पूजो तमे, भाव आणीने चित्त ॥

मो० ॥ बार वरस लगे तिहां, पुजी प्रतिमा नीत ॥ मो० ॥ २ ॥ सु० ॥ एक दीन सूहणे इम कहे, मेघासाने वात ॥ मो० ॥ तुं अम साथे आवजे, परवारि प्रभात ॥ मो० ॥ ३ ॥ सू० ॥ वहील लेजे भावल तणी, चारण जात छे तेह ॥ मो० ॥ देवाणंद राइका तणां, दोइ वृषभ छे जेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ सू० ॥ वहेल खेडे तुं एकलो, मत लेजे कोइ साथ ॥ मो० ॥ बांडाथल भणी हांकजे, मुजने राखजे हाथ ॥ मो० ॥ ५ ॥ सू० ॥ एम मेघाने सीखवी, जक्ष गया निज ठाम ॥ मो० ॥ रवी उगमते तीहां, करवा मांडयो काम ॥ मो० ॥ ६ ॥ सु० ॥ वहिल लीधी भावल तणी, वृषभ आण्या दोय ॥ मो० ॥ जोतरी वेहेल सामी तणी, जाणे छे सव कोय ॥ मो० ॥ ७ ॥ तव मेघो ते वेहेलने, खेडी चाल्यो जाय ॥ मो० ॥ अनुक्रमे मारग चालतां, आव्या थलवांडा मांहे ॥ मो० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ अमलीला रंगावो वरमोलीया ॥ ए देशी ॥

तिहां छोटाने मोटा थल घणा, दीसे रुष तणो नहि पारोरे ॥ तिहां भूतने प्रेत व्यंतर घणा, देखी सेठ करे विचारोरे ॥ १ ॥ सा मेघो मन मांहि चिंतवे, हवे कुण करसे माहरी सारोरे ॥ तव जक्ष आवीने इम कहे, तु मत करे फीकर लगारोरे ॥ २ ॥ सा० ॥ तव वेहेल हांकीने चालीओ, आव्यो उजड गोडिपुर गामरे ॥ तिहां वाव कुवा सरोवर नहि, नहि मोहल मंदिरना ठामरे ॥ ३ ॥ क० ॥ तिहां वेडेल थंभाणी चाले नहि, हवे सेठ हुवो दिलगीरोरे ॥ माहरी

पासे नथी कांइ दोकडा, कुण जाणे पराइ पीरोरे ॥ ४ ॥ सा० ॥ तिहां रात पडी रवी आथम्यो, चिंतातुर थइने सुतोरे ॥ तव मेघाने आवी इम कहे, सूहणा मांहे जक्ष एकंतोरे ॥ ५ ॥ सा० ॥ हवे सांभल मेघा हुं कहुं, आवसे गोडीपूर गामरे ॥ माहरो देहरासर करजे जीहां, उत्तम जोइने ठामरे ॥ ६ ॥ सा० ॥ तुं ज्याजे दक्षिण दिस भणी, तिहां पडयूं छे नीलूं छाणरे ॥ तिहां कुवो उमटरये पाणीनो, वलि प्रगटसे पाणीनी खाणरे ॥ ७ ॥ सा० ॥ पासे उग्यो छे उज्वल आकडो, ते हेठल धन छे बहुलोरे ॥ तिहां पुरयो छे चोखा तणो साथीओ तिहां पाणी तणो कुओ पोहलोरे ॥ ८ ॥ सा० ॥

॥ ढाल ॥ सीता तो रुपे रुवडी ॥ ए देशी ॥

सीलावट सीरोही गामे, तिहां रहे छे चतुर छे कामे हो, सेठजी सांभलो ॥ रोग छे तेहने शरिरे, नमणुं करी छांटो नीर हो ॥ १ ॥ सेठ ॥ रोग ज्यासेने सुख थासे, बेठो इहां काम कमासे हो ॥ सेठ. ॥ ज्योतीकनीमीत जीवरावे, देहरा सरपाइओ मंडावे हो ॥ २ ॥ ॥ से० ॥ ते जक्ष गयो इम कहिने, करे सेठजी उध्यम वहिने हो ॥ से० ॥ सीलावटने तेडावी, वली धननी खाण खणावी हो ॥ से० ॥ ३ ॥ गोंडीपुर गाम वसावे, सगा साजनने तेडावे हो ॥ से० ॥ इम करतां बहु दिन वीतां, थयो मेघो जगत्र वदीता ॥ ४ ॥ से० ॥ एक दीन साकाजल आवी, कहे मेघाने वात बनावी हो ॥ से० ॥ ए काममां भाग अमारो, अर्ध ताहरो हो ॥ से० ॥ ५ ॥ इम करि

देहरा सरकरिए, जो जगमां जस वरीए हो ॥ से० ॥ तव मेघो कहे तेहने, हवे दाम जोइए छे केहने हो ॥ से० ॥ ६ ॥ पारसनाथ तणे सुपसाये, घणा दाम छे वली आंही हो ॥ से० ॥ एक दिन केहेतां तुमे, आवे ए पथर कीणे कामे हो ॥ से० ॥ ७॥ क्रोध वसे पाछो वलीओ, आपणापानगरमां भलीओ हो ॥ से० ॥ सा काजळ मन चिंते, मारुं मेघो तो निश्चिते हो ॥ से० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ नेमीसर जगजय करुरे लोल ॥ (ए देशी).

परणावुं पुत्री माहरीरे लोल, तेडीने तेणीवाररे ॥ चतुरनर ॥ नात जमाडुं आपणीरे लोल, खरचीने धन अपाररे ॥ च० ॥ १ ॥ सांभलजो श्रोताजनोरे लोल, जो मेघो मारुं तो सहिरे लो, तो मुज उपजे कराररे ॥ च० ॥ देवल करावूं हुं वलीरे लो, तो नाम रहे नीरधाररे ॥ च० ॥ २ ॥ इम चित चिंतवी वीवाहनोरे लोल, करे काजल ततकालरे ॥ च० ॥ सगा साजनने तेडावीयारे लो, गोरीओ गावे धमालरे ॥ च० ॥ ३ ॥ सा०॥सा मेघा भणी नोतरुंरे लोल, मोकले काजल साहरे ॥ च० ॥ वीवाह उपरे आवज्योरे लो, अवश्य करिने आहिरे ॥ च० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम सांभली मेघो चित वेरे लो, किम करि जइए त्यांहिरे ॥ च० ॥ काम अमारुं छे घणुंरे लो, देहरासरनुं आहिरे लो ॥ च० ॥ ५ ॥ सा० ॥ तव मेघो कहे तेहनेरे लो, तेडी जाओ परिवाररे ॥ च० ॥ काम मेली कीम आवीयेरे लो, ते जाणो नीरधाररे ॥ च० ॥ ६ ॥ सा० मरगा देने तेडीनेरे लोल, पुत्र कलत्र परिवाररे ॥ च० ॥ मेघाना सहू साथनेरे

लो, तेडी आव्यो तेणीवाररे ॥ च० ७ ॥ सा० ॥ सांभल काजल कहे मेघो कीहांरे लो, इहांना आव्या सामाटरे ॥ च० ॥ तो मेघा वीण कीम सरेरे लो, नात तणी ए वाटरे ॥ च० ८ ॥ सा० ॥

॥ ढाल नंद सलूणा नंदनारे लो. ॥ ए देशी ॥

जक्ष कहे मेघा भणीरे लो, ताहरे हवे आवी वनीरे लो ॥ काजल आवसे तेडवारे लो, कुड करी तुने छेतडवारे लो ॥ १ ॥ तु मतजाजे तिहां कणेरे लो, जेहेर देइ तुजने हणेरेलो ॥ तेडया वीण जाये नहिरे लो, तो प्रभू नमण लेजे सहिरे लो ॥ २ ॥ दुध मांहे देसे खरुरे लो, नमण पीधे जासे परुरे लो ॥ ते माटे तुजने कहुंरे लो, माने वचन सुहामणुंरे लो ॥ ३ ॥ गयो जक्ष कहि ते हवेरे लो, काजलसा आव्या ए हवेरे लो ॥ कहे काजल क्रमे सांभलोरे लो, आवो मेली आमलोरे लो ॥ ४ ॥ तुम आव्या विण कीम सरेरे लो; नात जातमां सोभाए किणी परेरे लो, तुम सरीखा आवे सगारे लो; तो अम मन थाए उमगारे लो ॥ ५ ॥ हुं आव्यो धरती भरीरे लो, तो कीम जाउं पाछा फरिरे लो ॥ जो अमने कांइ लेखवोरे लो, तो आडो अवलो मत देखवोरे लो ॥ ६ ॥ हठ करी बेठा तुमेरे लो, खोटी थइ ए छे अमेरे लो ॥ मेघो मन चिंतवेरे लो, अतीताणुं कीम पुखेरे लो ॥ ७ ॥ काजल साथे चालीयोरे लो, अुदेसरमां आवीयोरे लो ॥ नमण वीसारयुं तिहांकणेरे लो, भावीवस्य आवी बनेरे लो ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ काबील रोपाणी लागणो ॥ ए देशी ॥

नात जमाडे आपणी, देइने बहु मान ॥ वर कन्या परणावीयां, दीधां बहुलां दान ॥ १ ॥ काजल कहे नारी भणी, मेघो अमे भेलां ॥ जिमण देजे विष भेलीने, दुधमां मांतिण वेला ॥ २ ॥ दुध तणी छे आखडी, तुमने हुं कहि मरीसे ॥ मेधाने मेलवो नहि, प्रीस्युं जमण पीरस्ये ॥ ३ ॥ तव नारी कहे प्रीउजी, मेघाने मत मारो ॥ कुलमां लांछन लागस्यें, जास्ये पांच माकारो ॥ ४ ॥ काजल ने माने नही, नारि कहीने हारी ॥ मन भांग्यो मोती त्राडयो, तेहने ना लागे कारि ॥ ५ ॥ इम सीखवी नीज नारीने, जीमवा बेहु बेठा ॥ भेला एकण थालीए, हैडे हरखे हेठा ॥ ६ ॥ दुध आण्युं तिण राणीए, प्रीस्युं थाली मांहि ॥ काजल कहे मुज आखडी, पीधो मेघे त्यांहि ॥ ७ ॥ मेघाने हवे ततखीणे, विष व्याप्युं अंगे ॥ स्वामोस्वास रमी गया, पाम्यो गति स्युं रंगे ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ कीहांरे गुणवंतीरे माहरियोगणीरे ॥ ए देशी ॥

आवी मृगादे पीउने देखतेरे, रोति कहे तिणवार ॥ च्यो महीयोने सेरो ते पण बेहुं जणारे, अति घणुं करे पोकाररे ॥ १ ॥ फीटकुल हिणां ए तेसु करयुं रे, नावी लाज लगाररे ॥ मुर्खकिम देखाडिस लोकमांरे, तुजने पडो धिक्काररे ॥ २ ॥ फी० ॥ वीरडा ते न जाणुं मन एहवुं रे, ताहरी भगनीनुं कुणस लुखरे ॥ माहरे नो करमे ए छाज्युं नहि रे, पडि दीसे छे मुज मांचूकरे ॥ ३ ॥ फी० ॥ एहवा

लखीया ए छट्ठी अक्षरारे, तो हवे दीजे केहने दोसरे ॥ नीरधारि मेली गयो नाहलोरे, कहिए न कीधो मुजने रोसरे ॥ ४ ॥ फी० ॥ इम विलवंती मृगादे कहेरे, वीरडा ते तोडि माहरीरे आसरे ॥ तुजने किम उलल्युं एहवुंरे, जीवीस तीन पंचासरे ॥ ५ ॥ फी० ॥ कुड करिने मुजने छेतरीरे, ते कीधो मोटो अन्यायरे ॥ माहरा नानकडा बालुअडारे, केहने मीलस्ये जोइ ध्यायरे ॥ ६ ॥ फी० ॥ अथविच देहरां रह्या आजथीरे, जगमां नाम राख्युं नीरधाररे ॥ नगरमां घरोघर वातो वीस्तरीरे,सहु कोना दील माहि आव्यो खाररे ॥ ७ ॥ फी० ॥ ध्वेश राखीने मेघो मारीओरे, ए तो काजल कपट भंडाररे ॥ मनना मेहेलो दिठो एहवोरे, दुम भणे नरनाररे ॥ ८ ॥ फी० ॥

॥ ढाल ॥ पुरव मात पुण्ये पामीए (ए देशी.)

बेहनो अगनि दाह देइ करी, आव्या सहु निज ठामहो ॥ बेहनी काजल कहे तुं मत रोए, न करुं एहवो कामहो ॥ १ ॥ बेहनी लेख लख्यो ते लाभीए, तो दीजे केहने दोसहो ॥ बेहनी जन्म जरा मरणे भर्यो, तो राखवो शो सोसहो ॥ २ ॥ बे० ॥ ए संसार छे कारमो, खोटी माया जालहो ॥ एक आवे ठाली भरी, जेहवी अरहटनी मालहो ॥ ३ ॥ बे० ॥ सुख दुःख मरज्या पामीए, नहि कोइने हाथहो ॥ बे० ॥ मत करे फीकर तुं आजथी, बहुली आपणी हाथहो ॥ ४ ॥ बे० ॥ खावो पीवो सुख भोगवो, मकरो

फीकर लगार हो ॥ वे० ॥ जे जोइए ते मुजने कहो, न करो दिलमां विचारहो ॥ वे० ॥ ५ ॥ वे० ॥ जीननो प्रासाद करावसूं, महितल राखसु नामहो ॥ इजत आपणा घर तणी, कीम करिओ सुं कामहो ॥ वे० ॥ ६ ॥ वे० ॥ सोढाने हाथे सुपसु, गोडिपुर गामहो ॥वे०॥ चालो आपण सहु मली, हुं लेइ आवूं दामहो ॥ वे० ॥ ७ ॥ वे० ॥ अनुक्रमे आव्या सहु मली, गोडिपुर गाम मोझारहो ॥ जीननो प्रासाद करावीओ, काजलसा तिणवारहो ॥ वे० ॥ ८ ॥ वे० ॥

॥ ढाल ॥ कोरेलणां धडदेरे ॥ ए देशी ॥

देहरे सीखर चढावीओ, थिर न रहे तिणवार ॥ काजल मनमां चिंतवे, हवे करसुं प्रकार ॥ १ ॥ भविकजन सांभलोरे ॥ बीजी वार चढावीओ, पडे हेठो ततकाल ॥ सुहणां मांहे जक्ष आवीने, मेराने कहे सूं वीसाल ॥ २ ॥ भगा तुं चडावे जाइने, थिर रहेस्ये सीर जेह ॥ काजलने जस कीम होवे, मेघो मारयो तेह ॥ भगा. ॥ ३ ॥ सेहरं सीखर चढावीओ, नाम राख्युं जगमांहि ॥ मुरति थापी पासनी, संघ आवे उछांहे ॥ भ. ४ ॥ संवत चौद चौआलमां, प्रतिष्टा कीध ॥ महिओ मेहरो मेघा तणो, तेणे जगमां जस लीध ॥ भ० ॥ ५ ॥ देशी परदेशी घणां, आवे लोक अनेक ॥ भाव धरि भगवंतने, आणी अधिक विवेक ॥ भ० ॥ ६ ॥ खरचे द्रव्य घणां तिहां, राय राणा तिणवार ॥ मानत माने लाखनी, टाले कष्ट अपार ॥ भ० ॥ ७ ॥ नीरधनीआने धन दीए, अपुत्रीयाने पुत्र आपे ॥ रोगीने निवारे रोगी, टाले दालीद्र दे सुत्र ॥ भ० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ अम घर आंबो मोरीओ ॥ ए देशी ॥

आज घर रंग वधामणां, आज त्रुठा श्री पारसनाथ ॥ आज चिंतामण आवी चढयो, आज सफल फली सवीआस ॥ १ ॥ आ० ॥ आज सुरतरु फलीओ आंगणे, आज प्रगटि मोहनवेल ॥ आज वीछडीयां वाला मल्या, आज अम घेर हुइ रंगरेल ॥ २ ॥ आ० ॥ आज अम घर आंबो मोरीओ, आज त्रुठो सोवन धार ॥ आज दुधे वूठां मेहूलां, आज गंगा आवी घरबार ॥ ३ ॥ आ० ॥ आज गायो गोडिपुर धणी, आ नगर ते महियल मांहे ॥ चोमासो कीधो चुपसू, श्री संघ केरे उछांहे ॥ ४ ॥ आ० ॥ श्री हिरविजयसूरिसरु, तेहनां शुभविजय कविसीस ॥ तेहना भावविजय कवी दीपतां, तस सीस नमुं नीस दीस ॥ ५ ॥ आ० ॥ तेहना रुपविजय कविराजनां, तेहना कव्र नमुं करजोड ॥ वली रंगविजय रंगे करी, हुं तो प्रणमुं प्रणत करजोड ॥ ६ ॥ आ० ॥ आगा संवत अढारसतलोतरे, भाद्रवमास उदार ॥ तिथि तेरस चंद्र वासरे, इस नेम विजय जयकार ॥ ७ ॥ आ० ॥

॥ इति गोडी पार्श्वनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री पर्युषणनी स्तुति लि० ॥

पर्व पजुसण पुण्ये पांमी ॥ परिघल परमाणंदजी ॥ अति आडंबर ओच्छव सबला ॥ घरी घरी बहु आणंदजी ॥ सासन अधिपतिजीन पति विरइ ॥ पर्व तणा फल दाख्याजी ॥ आमरति तणा ढंढेरा फेरी ॥ पाप करंता राख्याजी ॥ १ ॥ मृगनयणी सुंदर सुक-

माली ॥ वचन वदे ढंकसालीजी ॥ पुरपनोता मरोरथ माहरां ॥ निरुपम पर्व निहालीजी ॥ विवध भांत पकवांन करीने ॥ संघ सयल संतोषोजी ॥ चोवीसें जीनवर पूजा रचावी ॥ पुज्य पवित्र पंड पोषोजी ॥ २ ॥ सकल सुत्र सिर मुगट नगीनो ॥ कल्पसूत्र जग जाणोजी ॥ वीर पासनेमीसर अंतर ॥ आदो चरीत्र वखांणोजी ॥ थीरावलीने सामाचारी ॥ पटावली गुण गेहजी ॥ इणी पेरेसुत्र सविस्तर सुंणतां ॥ वांन सबल निज देहजी ॥ ३ ॥ इणीपरें पर्व पजुसण पाली ॥ पाप सवि परहरीएजी ॥ छमछरी पडिकमणुं करी ॥ कल्यांण कमला वरीएजी ॥ यक्ष गोमध्य चक्रेसरी देवी ॥ मांणभद्र अंबाइजी ॥ श्री शुभविजय कवि शिष्य अमरनें ॥ निसि दिन करो वधाइजी ॥ ४ ॥ इती पजुसण स्तुति समाप्त ॥

॥ अथ पजुसणनी थोइ लिख्यते ॥

जीन आगममें चोपरवी गाइ ॥ त्रिण्य चोमासां चार अठाइ ॥ पजुसण सवाइ ॥ ते ए सुभ दिन आव्या जांणी ॥ उठो आलस छांडो प्रांणी ॥ धर्मनी नीक मंडाणी ॥ पंचास पडीकमणां करो भाइ ॥ मासखमण पासखमण अठाइ ॥ कल्प अठम सुख दाइ ॥ दान दया पुजा देवसुरीनी ॥ वाचना सुणीए कल्पसुत्रनी ॥ आज्ञा वीर जीनवरनी ॥ १ ॥ सांभली वीरनु चरीत्र विशाल ॥ चउद स्वप्ने जन्मा उजमाल ॥ जनम महोछव उजमाल ॥ आमलकीइ सुरने ने हराव्यो ॥ दीक्षा लेइ केवल उपजायो ॥ अवीचल ठामसें भाव्यो

॥ पासनेमी संबंध सांभलीए ॥ सहु जीननां आंतरां सांभलीए ॥ आदी चरित्रमां भलीए ॥ वीर तणा गणधर इग्यार ॥ थीवरालीनो सुणो अधिकार ॥ एकरणी भवपार ॥ २ ॥ आसाढिथि दिन पंचास ॥ पजुसण पडिकमणुउ दत्रास ॥ एकउणु पणीभास ॥ सांमाचारी साधुनो पंथ ॥ वरतै जयणा एनि ग्रंथ ॥ पाप न लागे अक्ष्य ॥ गुरु आणाए मुनिवर राचै ॥ रागी घरे जइ वस्तु न जाचै ॥ चाले मारग साचे ॥ विगय खावानो संचआणै ॥ आ मम सांभलतां सर्व जाणै ॥ श्री वर्धमांन वखाणै ॥ ३ ॥ कुभार कांनमां कांकरी चंपै ॥ वीडाइ क्षुदत्रक तणु कंपै ॥ मीछामी दुकडं जंपै ॥ इम जे मन आंमलो न वीछोडे ॥ आ भव परभव दुःख बहु जोडे ॥ पडे नरकने खाडे ॥ आराधीक जे खमये खमावे ॥ मन सुद्धे अधिकरण समावै ॥ ते अक्षय सुख पावै ॥ सिद्धा एकासुरीनीध्यकारी ॥ श्री महीमा प्रभसुरी गछधारी ॥ भाव रतन सुखकारी ॥ ४ ॥ इति श्री पजूसणनी थोय समाप्त ॥

॥ अथ श्री पजुसणनी थोय लीख्यते ॥

पुन्यवंत पोसाले आवो ॥ परव पजुसण आवी वधावो ॥ धर्मना पंथ चलावो ॥ घांचीनी घांणी छोडावो ॥ जीव बंधणनी जाल छोडावो ॥ बंधीवानना बंध खोलावो ॥ आठ दिवस लगि अमर पलावो ॥ स्वामी वछल मेहेंल कढावो ॥ जीन सासन दीपावो ॥ पोसा पडिकमणां सक्ति भावो ॥ कांम कषाय अंतरथी टालो ॥ श्री

वीरजीणंदनी पुजा रचावो ॥ १ ॥ पुस्तक लेइ राति जगो किजे ॥ गाजींत्र वाजींत्र गुरुने दीजे ॥ गहुंली सेवक गाइजे ॥ कल्प सुत्र आरंभ वखांणु ॥ वीर जन्म दिन सउको जाणुं ॥ निशाले गरणुं टांणुं ॥ खांडपडा पेंडा पतासां ॥ खांडना रेखडिआना लीयोरीखासां ॥ परभावना उलास्या ॥ वीर तणो पहिलो अधिकार ॥ पासे नेमीजीन अंतर च्यार ॥ आद चारित्र तुमे धारो ॥२॥ जंबुनी पाटें प्रभव्य गुणजन वरिये ॥ श्री संभव गुण उधरीये ॥ जुगल थकीरे उधरीये ॥ स्या घेरें चोमासु रह्या ॥ अखंड सियल दवांमण दिधां ॥ थुली भद्र नाम पण सीधां ॥ पारण गावुं हालरीयां ॥ सांभलतां सुखपातक वरियां ॥ वीर स्वामि शुं वरीयां ॥ इम थीरावली भाषी जेह ॥ सहस समिसतानुं तेह ॥ कल्प मांहे सुणीये एह ॥ ३ ॥ जक्षमस रुपावांरु माहालो ॥ पुजी पोथी ज्ञान विचारो ॥ ठवणी सांज संभालो ॥ इम पुजा कीजे गुरु अंगे ॥ छमछरीमां मन सु रंगे ॥ बारेसें सुणो एक अंगे ॥ सासु जमाइने अली चांडलीआं ॥ छमछरी मांहे सांभलीआ ॥ श्रवणे पापज टलीआं ॥ ए भव परभव किजे करणी ॥ स्वीपद मेहेल चहडणने चडणी ॥ सीधाम्माहा दुःख हरणी ॥ ४ ॥ इति थोय संपूर्ण ॥

॥ अथ कलावतीनी सझाय लीख्यते ॥

नगरीकोसंबीना राजा कहीए ॥ नामे जे संपराय ॥ बेन भणी जेने बेरखडा मोकल्या ॥ कर्मे ते भाइ न कहेवायरे ॥ कला-

वतीरे शीरोमणी नार ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पेलीने रयणी राजा मोले पधारा ॥ पुछे बेरखडानी वात ॥ कहो ने स्वामी तमे बेर खडा गमाव्या ॥ सरखी न राखी नाररे ॥ २ ॥ कलावती० ॥ बीजीने रयणी राजा मोले पधारा ॥ पुछे बेरखडानी वात ॥ कोने तमने बेरखडां गमाव्या ॥ तु नथी सीयलवती नाररे ॥ कला० ॥ ॥ ३ ॥ गणुं जीवोरे जेणे बेरखडां घडाव्या ॥ अबसर आव्यो तेह अवसर जाणी ॥ जेने बेरखडां मोकल्यां ॥ तेमे पेरां छे एजरे ॥ ४ ॥ कलावती ॥ मारे मन तेहने हु तेने मन ॥ तेने मोकल्यां छे एज ॥ रातदीवस मारे हैडे नविसरे ॥ दीठे हरखन मायरे ॥ ५ ॥ कलावती ॥ एणे वचने राजा रोषे भराणो ॥ तेडाव्या सुभट बेचार सुकी नदीमां जइ छेदन कराव्या ॥ कर लइ वेलोरो आयरे ॥ ६ ॥ कलावती ॥ बेरखडां वांची राजा मनमां बीसे ॥ मे कीधो अपराध ॥ वीण अपराधे मेतो छेदन कराव्यां ॥ मे किधो अन्यायरे ॥ ७॥ कलावती ॥ एणे अवसरे राजा धान न खाय ॥ तेडाव्या राय बे चार ॥ रात दिवस राजा मनमां विमासे ॥ जो आवे सीयलवंती नाररे ॥ ८ ॥ कलावती ॥ सुकां सरोवर जळ लेहेरे जाए ॥ वृक्ष नव पलव थाय ॥ करनव आवे ने मा बेटो धवरावे ॥ इमने सीयल तणो महीमायरे ॥ क० ॥ ९ ॥ एणे अवसर महावीरजी पधारा पुछे पुरव भवनी वात ॥ स्यास्या अपराध कीधा हो प्रभुजी ॥ तेमने कहोने आजरे ॥ कलावती० ॥ १० ॥ तुंरे हती बाइ राजानि कुंवरी एहतो सुडानी जात ॥ सेजे सेजेरं तेंतो बाणज मार्युं ॥ भागी सुडानी पांखरे ॥ कलावती० ॥ ११ ॥ तमे तमारी वस्तु संभारो

॥ माहारे संजम केरो भाव ॥ दीक्षा लेसुं माहाविरनी पांसे ॥ पोच्छु मुक्ति मोझाररे ॥ कलावती० ॥ १२ ॥ पुत्र हता ते रायने दीयो ॥ पोते लीधो संजम भार ॥ समय सुंदर मुनी एणी पेरे भणसे ॥ प्रभु आवा गमण निवाररे ॥ उतारो भव पाररे ॥ कलावती०॥१३॥

इति संपूर्ण.

॥ इति चंदन बाला गीत लिख्यते ॥

कौसाम्बिते नगरी पधारीआ ॥ वहोरवा ते श्री महावीर ॥ अभीग्रहोरे इम चींतवो ॥ तमे शुं जाणो जगदीश हो स्वामी ॥ १ ॥ भांमणी एज उहो सठगुरु ॥ कोरंतान दाहाडले ॥ मुनि भमता घर घरबार ॥ सुखडी गेबर ढांकी मेलां ॥ एतो मनमां न आणे लगार हो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ राजाना मोल लुटाइ गया ॥ लुटी ते चंपापोल ॥ निज थानिक आवी रह्या ॥ त्यांतो हाथी घोडाना गंज हो ॥ ॥ स्वा० ॥३॥ राजाना मोल लुटाइ गया ॥ लुटी करी घेर जाय ॥ सोपाय कमेटी चडयुं ॥ त्यांतो दीठा छे चंदन बाल हो ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चंदनबाला बारणे हेठां उतरां तो खंधे चढावीने लइ गयो ॥ एतो बोले छे कडवो बोल हो ॥ ५ ॥ स्वा० ॥ बाइ तुमारे घेर घोडली ॥ हुं छुं तारो नाथ ॥ एवां वचन ज्यारे सांभळ्यां ॥ एटले धारणी कीधो काल हो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ जीभ कचरीने मरी गया ॥ मरतां न लागी वार ॥ एतो मरी गया ततकाल हो ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ खंधेथी हेठा पडया ॥ टलवले ते चंदनबाल ॥ बाइ तुं मारे

घेर बेटडी ॥ हुं छुं तारो तात ॥ बाइ न करीस आपज घात हो ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ खंधे चढावी लेइ गयो ॥ गेर छे चेतानार ॥ जाउरे बजारमां वेचवा ॥ नकर जाइराज पोकार हो ॥ स्वा० ॥९ ॥ खंधे चढांवी लेइ गयो ॥ वेचे ते बजार मांही उभी करी ॥ एतो मुलवे चेइयां नार हो ॥ स्वा० ॥ १० ॥ लाख टका बाइ मुलवे ॥ मो माग्यां ते आपां मुल ॥ लाख टकाना बइ अधलाख ॥ बाइ तम घेर केवो आचार हो ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ राग ठाठ बनाववा ॥ करवा ते सोल सणगार ॥ हींचोला खाडे हींचवा ॥ अम घेर चाववा लेइ पान हो ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ मारो भठ पडयो अवतार हो ॥ मे स्यां करां तां पाप हो ॥ पेला समर्या भगवंत हो ॥ मेना आराध्या अरिहंत हो स्वा० ॥ १३ ॥ में तोडी पुन्यनी पाल हो ॥ आकास उभा देवता ॥ सांभले ते एवा बोल ॥ एने उलटीआ व्यंतर वानहर हो ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ आंख नाक वलुरीयां एतो ॥ एतो नासी गइ तनकाल हो ॥ खांधे चढावी लेइ गया ॥ वेचे ते बजार मांही ॥ चौटामां उभी करी ॥ एने मुलवे सुदरशन शेठ हो ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ लाख टकारे बाइ मुलवे ॥ मो माग्या ते आपे मुल ॥ लाख टकाना बाइ अधलाख ॥ भाइ तमघर सो आचार हो ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ पोसा प्रतीक्रमणा अती घणा ॥ आंबीळनो नहीं पार ॥ अपवास एकासणां नित करवां ॥ अमघर पाणी गळवां त्रणवार हो ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ मे आराध्या अरिहंत ॥ में समरा श्री भगवंत हो ॥ मे बांधी पुन्यनी पालहो ॥ शेठ वखारमाथी आवीआ ॥ स्वा० ॥१८॥ धुपे ते सेठना पाप ॥ मुल ए मनमां चितव्युं एतो नीस्व करीने रा-

खी हो ॥ हाथे ते घाल्या दसकला ॥१९॥ स्वा० ॥ पगे ते घाली हेड ॥ मस्तके मुंडया वेणीना केश ॥ अनेथां गुप्त द्वार हो ॥ पेहेलु तो दाहाडो तीहां थयुं॥ क्यां गइ ते चंदनबाल ॥ सरखी सैयरो ॥ एतो घरमां न आवे लगार हो ॥ २० ॥ स्वा० ॥ बीजुं ते दाहाडो त्यां गयो ॥ क्यां गइ ते चंदनबाल ॥ तने एने मोढे चडावी मेली ॥ एतो क्यु न माने लगार ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ त्रीजो दाडो तिहां थयो ॥ क्यां गइ चंदनबाल ॥ तमे एने लाडवाइ करी मेली ॥ एतो सातरमां नमोने लगार हो ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ चोथो ते दाडो त्यां थयो ॥ क्यां गइ चंदनबाल ॥ शेठे ते काढयो कटारलो ॥ हवे मारीशमांरे पेट हो ॥ स्वा० ॥ २३ ॥ मुलानाशा गइ ततकाल हो ॥ शेठे पाडोशीने पुछीयुं ॥ क्यां गइ ते चंदनबाल॥ हाथे ते घाला दशकलां ॥ पगे घाली हेड ॥ मस्तकें मूडयारे बीणीश केश हो ॥ एमने घाल्यां गुप्त द्वार हो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ शेठे ते तालां भागीआं ॥ काढयां ते चंदनबाल ॥ एने बेसारां उमरा मांही हो॥२५॥ स्वा० ॥ सुपड खूणे बाकुला बेसारां ते उबरमांही ॥ शेटजी जाय लवारने तेडवा हो ॥ २६ ॥ स्वा० ॥ छमासीने पारणे ॥ मुनी भमे ते घरेघरे भात ॥ सघली जोगवाइ तीहां मली ॥ पण न दीठी आसुनी धार हो ॥ २७ ॥ स्वा० ॥ त्यांथी ते प्रभु पाछा वल्या ॥ चींतवे ते चंदनबाल ॥ मारो भठ पडो अवतार हो ॥ मे स्या कीधां तां पाप ॥ स्वा० ॥ २८ ॥ मेना आराध्या अरिहंत हो ॥ मेना समरा भगवंत हो ॥ मे तोडी पुन्यनी पाल हो ॥ स्वा० ॥ २९ ॥ मुनी पाछु वली जोयुं दीठो ते आशुं धार ॥ सघली जोगवाइ तिहां

मली ॥ त्यांतो वोरावे चंदनवाल हो ॥ स्वा० ॥ ३० ॥ अठम केरे पारणे ॥ वोरावे ते चंदनबाल ॥ वोरावी करो तमे पारणुं ॥ तमारो सफल हुओ अवातार हो ॥ ३१ ॥ स्वा० ॥ हाथे ते थयो सोना चूडलो ॥ पगे थइ सोनानी हेड ॥ मस्तके थया वेणीना केश हो ॥ सेथो थयो मोतीनी सेरो हो ॥ स्वा० ॥३२॥ शेठ लवार तेडी आविया शुं थयुं ते चंदनबाल ॥ पीता तुं मारे पसाय हो ॥ एटले आव्या मुनी माय हो ॥ शुं थयुं चंदनबाल ॥ माता तुमारे पसाय हो ॥ स्वा० ॥ ३३ ॥ दश देशना राजवी ॥ चंदनवालाने त्यां जाय ॥ त्यां कणे वार करोड वत्रीसनी व्रष्टी हो स्वा० ॥ ३४ ॥ त्यां कणे अठाइ महोच्छव थाय हो ॥ त्यां कने देवताइ वाजां वाग हो ॥ त्यां तो नाटारंम हो थाय हो ॥ त्यां लब्धि विजय गुण गाय हो ॥ स्वा० ॥ ३५ ॥

॥ इति चंदनबाला गीत समाप्त ॥

॥ सझाय ॥

गुरु सन मुख रही विनय विवेके ॥ इरिआ वहि पडिकमिएजीरे ॥ आ भव परभव पातिकहणीए ॥ गुण श्रेणीए चढीए सुत अनुसरीएजी रे ॥ तरिए आ संसार पातिक हणीएजीरे ॥ सद गुरुने आधार पार उतरीएजीरे ॥ १ ॥ खट अक्षरनो अर्थ सुणीने ॥ जाणीयुं मस्तक डोलेजीरे ॥ मिछामी डोकडंनि युक्तिए ॥ भद्र बाहु गुरु बोले ॥ सुत ॥ २ ॥ पुठवी अप तेंउ वाउ साधारण ॥ तरु

बादर सुहुक्षमूजीरे ॥ प्रतेक तरु विगल द्रीपजता ॥ अपजता अडवीश ॥ सुत ॥ ३ ॥ हवे पंचेद्री जल थर खेचर ॥ उर पर भुज परिविसेजीरे ॥ गरभ समुछी भेद पजता ॥ अपजता ए वीस ॥ सुत ॥ ४ ॥ नारकी साथे पज अपजा ॥ चउड भेद मन धारोजी रे ॥ कर्म भुमीं अकर्म भुर्माना ॥ पनरतिस वीचारो ॥ सुत ॥ ५ ॥ छपन अंतर द्यीपनां माणस ॥ गर्भ समुर्छम भेदेजीरे ॥ ते अपजता पजता गर्भज ॥ त्रणसे तणवीभेदे ॥ सुत ॥ ६ ॥ भवन पती दश डश त्रीजंभक ॥ पन्नर परमा धामीजीरे ॥ व्यंतर सोलने जोतिष्क दस तण ॥ किल विखीया सुर पामि ॥ सुत ॥ ७ ॥ बार सरगने नव लोकांतिक ॥ नव ग्रैवेक पंच अनुतरनाजीरे ॥ ए नवाणुं पजता अप जता ॥ एकसो अठाणुं सुरना ॥ सुत ॥ ८ ॥ अभिया आदे दस पद साथे ॥ पांचसेने त्रेसेठ गणतांजी रे ॥ छपनसे ने त्रीस थया ते ॥ रागने ध्वेशे हणतां ॥ सुत ॥ ९ ॥ अगियार सहसने बसे सांठे ॥ मन वचन काया तिगुणाजी रे ॥ तेत्रीसहस अने सातसे एसि ॥ ते वली आगळथि गुणा ॥ सुत ॥ १० ॥ करे करावे ने अनुमोदे ॥ एक लाख तेरसे चालीशजी रे ॥ त्रण काण सुगण तातिग लख ॥ चार हजारने विश ॥ सुत ॥ ११ ॥ केवल सीध मुनी सुगुरु आतम ॥ छगुणा लाख अठारजी रे ॥ चोवीसहसने एकसो वीस ॥ सरवाले अवधारो ॥ सुत ॥ १२ ॥ छठे वरसे दीक्षा लीधी ॥ नवमे केवल धारतांजी रे ॥ जल क्रीडा करतां अइमतो ॥ नीवरनी बलीहारी ॥ सुत ॥ १३ ॥ इम कही साधु श्रावक पाति-

क ॥ टाली लहे भव पारजी रे ॥ श्री सुभवीरनुं सासन वरते ॥ एकवीश वरस हजार ॥ सुत ॥ १४ ॥ ईति.

॥ अथ चंद्रावतिनी सज्झाय ॥

जस मुख सोहे सरसति माय ॥ प्रणमी वीर जीनेश्वरराय ॥ साधु सहुको सुंणज्यो एह ॥ मंत्र यंत्र तंत्रादिक तेह ॥ १ ॥ वेंधक पोतीक कूटी कर्म ॥ मूखथी न कहिये एहनो मर्म ॥ अनरथ उपजे तेहथी घणां ॥ जेम एहथी मूवां पांचे जणां ॥ २ ॥ कुंडलपुर खत्री एक ठांम ॥ भीमसेन छे तेहनो नांम नारी तेहनी चंद्दावति ॥ दोसन दीसे तेहमां रती ॥ ३ ॥ चंद्दावती मूकी घरबार एक दीवस ते थयो असवार ॥ चाल्यो चतुर ते कींक मझार ॥ चंद्दावती ते करे वीचार ॥ ४ ॥ एक मने जो किजे धर्म ॥ तो नीकाचीत छूटे जे कर्म ॥ घर पासे तिहां मुनिवर रहे ॥ चंद्दा-वतीने धर्मज कहे ॥ ५ ॥ प्रतिबोधि कीधि श्राविका ॥ थई ते जिन शासन भाविका ॥ वहोरण गया तेह मुनिराय ॥ चंद्रावती ते प्रणमी पाय ॥ ६ ॥ नयणे नीर झरे ते घणुं ॥ दुख देखी ह्रहवे आपणुं ॥ घणा दीवस पीउ चाले थया ॥ खर्चि बजे मेली नवी गया ॥ ७ ॥ दीन वचन तेहनुं जब सुंण्यो ॥ दुख थयो ते मुनीवरने घणो ॥ जो-स जोइने कर्यो विचार ॥ दीवस सातमे आवे भरतार ॥ ८ ॥ जोस जोइने मुनीवर बोल्यो ॥ कहेल दिवसे कंतज मल्यो ॥ त्यारे खूसी थई चंद्रावती मंन ॥ तेणे रांध्युं सुंदर अंन्न ॥ ९ ॥ प्रथम प्रति लाभो मुंनीराज ॥ नीमित कही सारो मुज काज ॥ भीमसेंन मन

भटके बोल्यो–ए पाखंदी एहने मल्यो ॥ १० ॥ एहने एहवुं आप्युं अंन्न ॥ जो ए बेहुनो एकज मंन ॥ खडग काढी मारवा धस्यो ॥ देखी मुंनीवर मनमां हस्यो ॥ ११ ॥ नारी कहे नवि कीजे रोस ॥ ईणे प्रकाश्यो ताहरो जोस ॥ ते माटे में आप्युं अंन्न ॥ सूणी वचन तुम्हे वालो मंन ॥ १२ ॥ जूवो जोस मुंनिवर ततकाल ॥ आ घोडी स्युं जणसे बाल ॥ जोस जोइने कहे ततकाल ॥ तो बेउने उपजसे काल ॥ १३ ॥ जोस जोइने मुनीवर भण्यो ॥ उदर वधे रह्यो घोडी तणो ॥ धोला पगने रातुं अंग ॥ लीलवट टीलुं छे तुरंग ॥ १४ ॥ सुणी वान तेणे ततकाल ॥ उदर वधेरी काढ्यो बाल ॥ अनरथ देखी चंद्रावती ॥ वीख खाइ मूंइ महा सती ॥ १५ ॥ भीमसेन मन पडीयो फाल ॥ आपे हुं तो करियो काल ॥ हत्या चारे हुइ जे तले ॥ दुख करवा लागो तेटले ॥ १६ ॥ है है में सू कीधुं काज–अन-रथ चारे कीधां आज ॥ अन्न पांणी मुनीवर परीहरी ॥ काल्ठ किधो निश्चल मन करी ॥ १७ ॥ एहवादोस कह्यां छे घणा–मंत्र यंत्र तंत्रादिक तणा ॥ मूके माया ममता मोह ॥ चारित्र नहि चढावो सोह ॥ १८ ॥ जेमां दोष न होय रती ॥ ते कहो मुजने सुधिपती ॥ एणी परे सउको मुनिवर भणे ॥ दोष रहित ते शीवपुर वरे ॥१८॥ वाधीक नामे वडो रुप हुंवो ॥ चंद्र मदो ते निमित कह्यो ॥ कुल वा-लुओ नीमीत ज भणे ॥ थुभ पाडी लई दुर गति गणे ॥ २० ॥ तपगछपतिश्री हिरसु रिंद ॥ पटोधर विजयसेन सुरिंद ॥ हरख्या आनंद पंडीत वरसीस ॥ हरखविजयकहे भजोजगीस ॥ संपुर्ण सझाय.

॥ अथ भीलडीनी सझाय लिख्यते ॥

नरसामि सासण वीनवुं ॥ मागुं एक पसाओ । सतीय शीरो-मणी गायशुं ॥ डीगामणराउ ॥ वनो से अती रुयडो ॥ १ ॥ तुमें साहस धीरो ॥ भीली चाली खेलवा ॥ इह वनय मजारो ॥ वनो ॥ २ ॥ भीली कहे स्वामी सुणो ॥ मारा वचन विचारो ॥ फल खावा अमे जाइशुं ॥ इह वनय मजारो ॥ वनो ॥ ३ ॥ भील कहै गोरी सुणो ॥ इह वनय मत जावो । कोइ पुरुष तने देखशे ॥ डीगामणरावो ॥ वनो ॥ ४ ॥ अंग अमारो नही आभडुं ॥ जैसो वसीओ हारो ॥ अवर पुरुष मारे बांधवो ॥ मारे भीलज राहो ॥ ॥ ५ ॥ सामी तणो आदेश लही ॥ भीलडी रमण चाली ॥ देखी वन रलीआमणो ॥ भीलडी रमण लागी ॥ वनो ॥ ६ ॥ डीगामण राय पालक चढयो ॥ आव्यो वन मोझारो ॥ फल खावे तिहां रस भाखे ॥ देखै एकज नारो ॥ वनो ॥ ७ ॥ डीगामणराय दृष्टे पडयो । जब भीली नाठी ॥ खमण खमण गुफा माहे ॥ भीली तर पेठी वनो ॥ ८ ॥ कैतु अपसरा देव कन्या ॥ के तुं देवल पुतली ॥ एक अचंभो मोहने । दीशै रुपस स्वरुप ॥ वनो ॥ ९ ॥ नहुं अपसरा देव कंन्या ॥ नही देवल पुतली ॥ जनम दीयो मोरी मावडी ॥ रुप दीयो कीरतार ॥ गज गज गैले छातीआंरा दुखसै पायो ॥ जमननी वाली पदमणी ॥ बोलै अमृत वांणी ॥ वनो० ॥ ११ ॥ भला भुंडा मारा जुंपडा ॥ देखो अधिक वासो ॥ मोह स-रीखा राजवी कांइ ॥ मुंको निरधारो ॥ वनो० ॥ १२ ॥ भले भले

मेरा झुंपडा ॥ नही खप लगार ॥ वचनकु वचन तमे कहेतो लागशे पाप ॥ वनो० ॥ १३ ॥ साल दाल घृत भोजन ॥ नित नवलां तंबोल ॥ पैरण पीत पटोलडां ॥ बैसो चकडोल ॥ वनो० ॥ १४ ॥ भोजननो कांइ सरावीओ ॥ राजा अरथ अजाणो ॥ पैरण पान-पटोलडां ॥ मुज भीलज राणो ॥ वनो० ॥ १६ ॥ भीम हण्या कं-कर हण्या ॥ बहु जग संसारी ॥ सैहस पुरुष सेव्मा घणा ॥ नही पापनो पायोरो ॥ वनो० ॥ १७ ॥ राय कहे परधान सुणो ॥ ए रुपै रुडी वेगरीने ॥ भीलडीने मारे मंदीर आणो ॥ वनो० ॥ १८॥ परधान घडी नइ आवीओ ॥ लागो भीलडीने पाय ॥ राय कहे प्राण तजुं ॥ सुं करु मोरी माय ॥ वनो० ॥ १९ ॥ तु छु पृथवी राजीओ ॥ तुने कहीशुं बाप ॥ वचनकु वचन तमे कह्यां ॥ तुमने लागशे पाप ॥ वनो० ॥ २० ॥ मेरु डगे तुं हुं डगुं ॥ पश्चिम उगे भाण ॥ सील हमारुं नही खंडुं ॥ जो जासे मुज प्रांण ॥ वनो० ॥ २१ ॥ राय तुं रंगथी उतर्यो ॥ लागो भीलडीने पाय ॥ वचनकु वचन घणा कह्यां ॥ घणा ते समज्यो मोरायो ॥ वनो० ॥ २२ ॥ भेर वाज्यां भुंगल वाज्या ॥ वाज्या मृदंग ताल ॥ भीलडी मंदिर सांचरी ॥ वरत्यो जय जजकार ॥ वनो० ॥ २३ ॥ आनंद घन पसायथी ए ॥ चोढाले रुडी ॥ सीयलस कोइ पालजो ॥ नही कोइ भीलडीने तोल ॥ वनो० ॥ २४ ॥

॥ इति भीलडीनी सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ दीवालीनी सजाय लिख्यते ॥

वंदी वीरजीनेस्वर पाय ॥ गुरु गोयम गणधर राय ॥ तस निर्वाण अने वली नाण ॥ ते आराधे श्रावक जाण ॥१॥ मुक्ते पोतो वीरजीणंद ॥ ओछव करे सुरासुर वृंद ॥ कल्याणी कदी न भणीए एह ॥ तपे करी आराधे तेह ॥२॥ श्रावक मलीआ राये अढार आराधे पोशह आचार सोल पहोर सांभले वखांण ॥ छंडे रोग भोगते जाण ॥३॥ जीर्णी राते जीन मुक्ते गया ॥ अणु धरी कंथु आ बहु थया ॥ तीणे कारण गुरु आ रीषिराज अणसण लइने सरां काज ॥ ४ ॥ जीणवर साधु साधवीतणो ॥ पडयो विरह ते कारण घणो ॥तेह दीवस आवे जेणीवार ॥ कहो केम थाय हरख अपार ॥ ५ ॥ तेजे कारण कीजे तप ॥ घणो संभारीने कुल आपणो ॥ पुजा करीए धरीए ध्यान ॥ राग भीग परहरीए पान ॥ ६ ॥ कोइ जीव अज्ञानी जाण ॥ हरख धरे पापने ठाण ॥ मांडे मुल थकी आरंभ ॥ खावा पीवानो प्रारंभ ॥ ७ ॥ गहु पलालोवणविसेव ॥ दीवालो आवे छे हेव ॥ करे लाडु ने सांकली । इंद्री रस वाहल फली ॥ २ ॥ तेम सुले माटी छाण ॥ जगनाथनी भागे आण ॥ दले खांडे नवी जयणा करे ॥ खाटकी साला पांचे वावरे ॥ ९ ॥ चोमासा मांहि बहुला जीव ॥ नील फुल कंथुआ अतीव ॥ कंशारी कीडी करोलीआ ॥ राते अंधारे रोलीआ ॥ नाठी सान वासीओ करे ॥ सामायक पोशापरी हरे ॥ पानफळ साडी सणगार ॥ अधीका करे तेह गमार ॥ ११ ॥ धनतेरस न्हाण उल्लास ॥ जीव हणीने बांधे पास ॥ सेवो लाडवा हरखे

जमे ॥ सील न पाले जुगटे रमे ॥ १२ ॥ घर लींपे काढे सा-
थीआ ॥ ताव्या तल्या जे केइ आथीआं ॥ पर्वतणी नवी लाभे सार
॥ चउदस अमावास्या धर्म संभार ॥ १३ ॥ वली जो जो
अधिकां पाप ॥ फुल फलने करे संताप ॥ भागी डाल
जेवुं करे ते गेल ॥ अग्नि प्रजालिने मागे तेल ॥ १४ ॥
घर घर दीवा लीधे फरे ॥ बहुला जीव ते मांही मरे ॥ मेराइयांनु
मोढे नाम ॥ घर घर फरतो करे प्रणाम ॥ १५ ॥ पाखी पडीकम-
णांनो काल ॥ ते हविसारे मुरखबाल ॥ मुढे कहःवे श्रावक नाम ॥
नवी जाणे सासन दुर्लभ ठाम ॥ १६ ॥ जलहल दीवा पछमराते ॥
काढे अलछीने जमे प्रभाते ॥ चउला कुर विना नवी जमे ॥
देखो लोक अज्ञाने भमे ॥ १७ ॥ गौतमस्वामी पाम्या ज्ञान ॥ ते
हतणुं तजीने नाम ॥ जुहार भटारां करतो फरे ॥ सांजे साजन
भणी संचरे ॥१८॥ पहेरे ओढे बहु सणगार, काम भोग पुर्यो परि-
वार ॥ हांसी वाजी करे टंकोल॥ बांधे कर्मने भय रह बोल ॥१९॥
पछी वली करे भावीज ॥ खातां पीतां आवे रीज ॥ मुल मंत्र घणा
साधे जेह ॥ धर्म न आराधे प्राणी तेह ॥ २० ॥ दीवालीनुं कल्पी
नाम सगां साजनने जमाडे तमाम ॥ अन्न केवली करे आहार ॥
जोजो लोकतणो व्यवहार ॥ २१ ॥ आव्यो धर्म दीवस जेह ॥
पापे करी विराधे तेह ॥ कर्म निकाचित बांधे बाल ॥ एणी रीते
रुले अनंतो काल ॥ २२ ॥ जेने मुक्ति अछे ढुकडी ॥ तेनी मती
संवरमां चढी ॥ संसारीक सुख दुःख स्वरुप ॥ एहनी सभावे आ-

तम भुप ॥ २३ ॥ दोहीलो दीसे नरभव जेह ॥ तेहमांही दुर्लभ जीन धर्म तेह ॥ जीन वाणी ते दुर्लभ सुणे ॥ मीथ्या मतीने दुर्लभ हणे ॥ २४ ॥ तपगछ गयण विभासण भाण ॥ श्री हीरविजय सुरी जाण ॥ वाचक भानुचंदनो शीष्य ॥ देवचंद्र प्रणमे नीसदीस ॥

इति दीवालीनी सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ पडिकमणानी सझाय लिख्यते ॥

गोयम पुछे श्री महावीरनेरे ॥ भाखो भाखो प्रभुजी संबंधरे ॥ पडिकमणाथी स्युं फल पामीएरे ॥ स्युं स्युं थाय प्राणीने बंधरे ॥ गो ॥ १ ॥ सांभलो गोयम जे कहुं पून्यथीरे ॥ करणी करतां पुन्य नो बंधरे ॥ पुन्यथी दुजो अधिकोको नहिरे ॥ जेथी थाय सुख सं-बंधरे ॥ गो ॥२॥ इछा पडिकमणु करी पामीएरे ॥ प्राणीने पुन्यनुं बंधरे । पुन्यनि करणी जे उवेखस्येरे ॥ परभवे थास्ये अंधोअंधरे ॥ गो ॥ ३ ॥ पांच हजारने उपर पांचशेरे ॥ द्रव्य खरची लखावे जेहरे ॥ जीवाभिगमइपजावणारे ॥ मुंबके भंडारे पुन्यनि रेहरे ॥ गो ॥ ४ ॥ पांच हजारने पांचशेरे ॥ गायो गर्भवंति जेहरे ॥ तेने अभयदान देतां थकांरे ॥ मुहपत्ती आप्यानु पुन्य एहरे ॥ गो ॥५॥ दसहजार गोकुल गायो तणारे ॥ एकेको दशहजार प्रमाणरे ॥ तेहने अभयदान देतां थकांरे ॥ उपजे प्राणीने विरवांणरे ॥ गो ॥ ६ ॥ तेथी अधिकुं उतम फळ पामिएरे ॥ परने जे उपदेश देधानुं जाणरे ॥ उपदेश थकी संसारी तरेरे ॥ उपदेशे पामे परिमल नाणरे ॥ गो

॥ ७ ॥ श्री जीनमंदीर अभिनव सोभतारे ॥ सिखरनुं खरच करावे जेहरे ॥ एकेको मंडप बावन चैत्यनोरे ॥ चरवलो आप्यानु पुन्य एहरे ॥ गो ॥ ८ ॥ मासखमणनि तपस्या करेरे ॥ अथवा पंनर करावे जेहरे ॥ एहवा क्रोड पन्नर करतां थकांरे ॥ कांवलीउं आपानुं फल एहरे ॥ गो ॥९॥ सहस अठासी दांन साला तणुरे ॥ उपजे प्राणीने पुन्यनु बंधरे ॥ स्वामि संगाथे गुरुने थान केरे ॥ प्रवेश थाए पुन्यनु बंधरे ॥ गो ॥ १० ॥ जीन प्रतीमा सोवनमय करेरे ॥ सहस अठासीनु प्रमाणरे ॥ एकेकी प्रतीमा पांचसें धनुषनीरे ॥ इरीयावही पडिकमवानो ए प्रमाणरे ॥ गो ॥ ११ ॥ आवश्यक पंजर जुगते ग्रंथ मारे ॥ भाख्यो पडिकमणानो संबंधरे ॥ जीवाभिगवइ आवस्यक जोइजोरे ॥ स्वयंमुख भाखे वीर जीणंदरे ॥ गो ॥ १२ ॥ वाचक जस कहे श्रद्धा धरेरे ॥ पालस्ये पडिकमणानो व्यवहाररे ॥ अनुत्तर सम सुख पामे मोटकुंरे ॥ पांमस्ये भविजन भवजल पाररे॥गो॥१३॥

इति पडिकमणानी सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री मरुदेवीमातानी सझाय लिख्यते ॥

एक दिन मरुदेवी आइ ॥ कहे भरतने अवसर पाइरे ॥ १ ॥ सुणो प्रेम धरी ॥ तुंतो षटखंड पृथवी माणे ॥ माहारा सुतनुं दुःख नवी जाणेरे ॥ २ ॥ सुणो० ॥ तु चामर छत्र धरावे ॥ माहारो ऋषभ पंथे जावेरे ॥ ३ ॥ सु० ॥ तुंतो सरसा भोजन आसी ॥ माहारो ऋषभ नीत उपवासीरे ॥ ४ ॥ सु० ॥ तुंतो मंदीर मांहे सुख

विलसे ॥ मारो अंगज धरती फरसेरे ॥ ५ ॥ सु० ॥ तुंतो सजन कुटंबमां माले ॥ मारो ऋषभ एकवडो चालेरे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तुंतो विषयतणां सुख सूचे ॥ मारा सुतनी वात न पुछेरे ॥ ७ ॥ सु० ॥ इम कहती मरुदेवी वयणे ॥ आंसु पडलागी नयणेरे ॥ ८ ॥ सु० ॥ इम सहस वरसने अंते ॥ लह्यो केवल ऋषभ भगवंतेरे ॥ ९ ॥ सु० ॥ हवे भरत भणे सुंणो आइ ॥ श्रुत देखी करो वधाइरे ॥ १० ॥ ॥ सु० आइ गज अंथ बेसार्यां ॥ श्रुत मलवाने पउधार्यांरे ॥ ११ ॥ सु० ॥ कहे एह अपुरव वाजां ॥ किहां वाजे छे ए ताजांरे ॥१२ ॥ सु० ॥ तव भरत कहे सुणो आइ ॥ ए तुम सुतनी ठकुराइरे ॥१३॥ ॥ सु० ॥ तुम सुत ऋषि आगे सहुनी ॥ त्रण तोले सुरनर बहुनीरे ॥ १४ ॥ सु० ॥ हरखे नयणे जल आवे ॥ तव पडल बेहु खरी जावेरे ॥ १५ ॥ सु० ॥ हु जाणती दुःखीओ कीधो ॥ सुखीओ सहुथी छे अधीकोरे ॥ १६ ॥ सु० ॥ गयो मोह अनीत्यता आवे ॥ तव सिद्धस्व रुपीआयोरे ॥१७॥ सु० ॥ तव ज्ञान विमल वधु नारी तव परगटी अनुभव सारीरे ॥ १८ ॥ सु० ॥

॥ इति मरुदेवीनी सज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सोल सुपनानी सज्ञाय लिख्यते ॥

सुपन देखेपेलडे ॥ भांगी कल्प वृक्षनी डालरे ॥ राजा संजम लेशे नही ॥ दुःखम पंचम कालरे ॥ चंद्र गुप्त राजा सुणो ॥ १ ॥ अकाले सूरज आथम्यो ॥ तेहनो शो विस्ताररे ॥ जन्मी ते पंचम

काव्मां ॥ तेने केवळज्ञान नही होसेरे ॥ चं ॥ २ ॥ त्रीजे चंद्रमा चारणी ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ सामाचारी जुइ जुइ होसे ॥ बारे बाटे धर्म होशेरे ॥ चं ॥ ३ ॥ भुत भुतडी दीठां नाचतां ॥ चोथा सुपन विस्ताररे ॥ कुदेवकु गुरु कुधर्मनि ॥ मानता घणीरे होसेरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ पांचमे नाग दीठो बार फेणो ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ वरस थोडाने आंतरे ॥ होसे बार दुकालरे ॥ चं० ॥ ५ ॥ देव विमान छठे वस्यो ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ विद्या ते जंघाचारनी ॥ लब्धि ते निसेध होसेरे ॥ चं० ॥ ६ ॥ उग्युं ते उकरडा मध्ये ॥ ॥ सातमे कमल विकासरे ॥ एका नही ते सर्वे वणीया ॥ जुदा जुदा मत होशेरे ॥ थापना थापसे आप आपणी ॥ पछी वीर अधीक घणुं होशेरे ॥ चं० ॥ ७ ॥ सुपन देखी आठमे ॥ आगीआनो च-मत्कार होशेरे ॥ उद्योत होशे जैन धर्मनो ॥ पछे मिथ्यात्व घोर अंधाररे ॥ चं० ॥ ८ ॥ सुकां सरोवर दीठां त्रण दीसें ॥ दक्षिण दीसे डोळा पाणीरे ॥ त्रण दीसे धर्म होसे नहीरे ॥ दक्षिण दीशे धर्म होशेरे ॥ चं० ॥ ९ ॥ सोनानीरे थाली मध्ये ॥ कुतरो खाय छे खीररे ॥ उंचतणीरे लक्ष्मी ॥ निचतणे होसेरे ॥ चं० ॥ १० ॥ हाथी माथे बेठो वांदरो ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ मले छ राजा उंचा होसे ॥ अशली हिंदु हेठे होस्येरे ॥ चंद्र० ॥ ११ ॥ समुद्र मरजादा मुंकी बारमे ॥ तेहनो स्यो विस्ताररे ॥ शिष्य चेलाने पुत्र पुत्रिउ ॥ नवि राखे मरजादा लगाररे ॥ चं० ॥ १२ ॥ राजकुंवर चडो पोठीए ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ उंचा ते जीन धर्म छांडीने ॥ राजा ते निच धर्म आदरसेरे ॥ चं० ॥ १३ ॥ रत्न झांखारे दिठा

चउदमे ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ भरतक्षेत्रना साधु साधवी ॥ तेहने हेत मेलावो थोडो होशेरे ॥ चं० ॥ १४ ॥ महारथे जुता वाछडा ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ बालक धर्म करसे सही ॥ बुढा प्रमादमां पडया रसेरे ॥ चं० ॥ १५ ॥ हाथी लडे मावत विना ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ वरस थोडाने आंतरे ॥ माग्या नही वरसे मेधरे ॥ चं० ॥१६॥ व्यवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये ॥ भद्रबाहु मुनि एम भाखेरे ॥ सोले ते सुपननो अर्थ ए ॥ सांभलो राय सुधिरोरे ॥ चंद्र० ॥१७॥

॥ इति सोल सुपनानी सझाय समाप्त ॥

गौतम स्वामीनी सझाय.

गौतम स्वामी पृछा करे ॥ कहाने स्वामी वर्द्धमानजीरे ॥ केणे कर्मे निर्धन निर्वंशी ॥ केणे कर्मे निःफल होय स्वामी ॥ परधर भांगे ने परदमे ॥ तेणे कर्मे निर्धन होय ॥ गौतम ॥ १ ॥ गौतम ॥ थापण मोसो जे करे ॥ तेणे कर्मे निर्वंशी होय ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे वेश्याने ने विधवा ॥ केणे कर्मे नपुंसक होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ २ ॥ दुर गंछा करे जैन धर्मनी ॥ तेणे कर्मे वेश्या होय ॥ गौतम ॥ शियळ खंडीने भोग भोगवे ॥ तेणे कर्मे विधवा होय ॥ गौतम ॥ ३ ॥ गौतम ॥ वेश्यानो संग जे करे ॥ तेणे कर्मे नपुंसक होय ॥ गौतम ॥ ४ ॥ केणे कर्मे गर्भ पीगळी जाय ॥ केणे कर्मे पीठी भइ च्या जाय ॥ स्वामी ॥ वाडी वेडे कुणा मोगरा ॥ तेणे कर्मे गर्भथी जाय ॥ गौतम ॥ ५ ॥ गौतम ॥ फूल विंधीने कर्म बाधीया

॥ तेणे कर्मे पीठी भर्या जाय ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे ठुंटाने पांगला ॥ केणे कर्मे जाति अंध होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ ६ ॥ पांखो काटे परजीवनो ॥ तेणे कर्मे पागुला होय ॥ गौतम ॥ वध करे पर जीवनो ॥ तेणे कर्मे जाति अंध होय ॥ गौतम ॥ ७ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे शोक्यज उपजे ॥ केणे कर्मे कलंक चडंत ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ ८ ॥ वेरो वंचो जे करे ॥ तेणे कर्मे शोक्य उपजंत ॥ गौतम ॥ खोटी शाख पुरीने कर्म बांधीया ॥ तेणे कर्मे कलंक चडंत ॥ गौतम ॥ ९ ॥ गौंतम ॥ केणे कर्मे विषधर उपजे ॥ केणे कर्मे जस हीण होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १० ॥ रिश भर्या मरे अण-बोलीया ॥ तेणे कर्मे विषधर होय ॥ गौतम ॥ जे जीव रागे वार्पीया ॥ तेणे कर्मे जरा हीण होय ॥ गौतम ॥ ११ ॥ गौतम ॥ केणे कर्म जीव निगोदमां ॥ केण कर्मे तिर्यंचमां जाय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १२ ॥ जे जीव मोहे व्यापीयो ॥ तेणे कर्मे निगोदमां जाय ॥ गौतम जे जीव मायाए व्यापीयो ॥ तेणे कर्मे तिर्यंचमा जाय ॥ गौतम ॥ १३ ॥ गौतम ॥ केणे कर्म जीव एकींद्रीमां ॥ केणे कर्मे पंचेद्रीमां जाय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १४ ॥ पांच इंद्रीयवश नवी करे ॥ तेणे कर्मे एकींद्रीमा जाय ॥ गौतम ॥ पांच इंद्रीयवश जे करे ॥ तेणे कर्मे पंचेंद्रीमा जाय ॥ गौतम ॥ १५ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे जीवडा बहु भमे ॥ केणे कर्मे थोडोय संसार ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १६ ॥ जे जीव मोह मछर करे ॥ तेणे कर्मे संसार भमंत ॥ गौतम जे जीव संतोष पामीया ॥ तेणे कर्मे थोडोय संसार ॥ गौतम ॥ १७ ॥ गौतम ॥ केणे कर्म जीवडा उंच कुले ॥ केणे कर्मे नीच

कुळ होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १८ ॥ दान दीधा सुपात्रमां ॥ तेणे कर्मे उंच कुळे जाय ॥ गौतम ॥ दान दीधा अणसुजता ॥ तेणे कर्मे नीच कुळ जाय ॥ गौतम ॥ १९ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे जीवडा नरकमां ॥ केणे कर्मे स्वर्ग विमान ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ २० ॥ जे जीव लोभे व्यापीयो ॥ तेणे कर्मे नरकमा जाय ॥ गौतम ॥ दान शियळ तप भावना ॥ तेणे कर्मे स्वर्ग विमान ॥ गौतम ॥ २१ ॥ गौतम ॥ राजगृही प्रभु आविया ॥ श्रेणीक वंदवा जाय ॥ गौतम ॥ चेलणा करे अति गहुं अली ॥ हयडे हर्ष न माय ॥ स्वामी ॥२२॥ गौतम ॥ गौतमे केवल मागीयुं ॥ दीयो ते वीर वर्द्धमान ॥ स्वामी ॥ जो वछ गौतम सांभलो ॥ मोहे न होय निर्वाण ॥गौतम ॥२३॥ गौतम ॥ रुप विजय कवि इणीपरे ॥ भाखे श्री भगवान ॥ गौतम ॥ जे नर भणे जे सांभले ॥ तस घर मंगळ माळ ॥ गौतम ॥२४॥

संपूर्ण.

॥ जीवरासीनी सझाय. ॥

मोह मीथ्यातकी निंदमे ॥ जीवा सुतो काल ॥ अनंत भव माहे तुं भटकीयो ॥ जीवाते सांभल वीरतंत ॥ जीवा तुंतो भोलोरे ॥ प्राणी इम रुलीयोरे संसार ॥ १ ॥ एसा केइ अनंत जीन हुवा ॥ जीवा उतकृष्टो ग्यान अगाध ॥ इण भवथां लेखो लीयो ॥ जीवा कुण बतावे तारी जात ॥ जीवा ॥ २ ॥ पृथवी पाणी अगनमे ॥ जीवा चोथी वायुकाय ॥ एकर काया मधे ॥ जीवा काल असंख्यातो जाय ॥ जीवा ॥ ३ ॥ पंचमी काय बनस्पती ॥ जीवा साधारण

प्रत्येक ॥ साधारणमां तुं वस्यो ॥ जीवा ते सांभली सुवीवेक ॥
जीवा ॥ ४ ॥ सुई अग्रनी गोदमे ॥ जीवा एण असंख्याती जाण
॥ असंख्याता प्रतर एक सेणमे ॥ जीवा एम गोळा असंख्या प्रमाण
॥ जीवा ॥ ५ ॥ जाण एक शरीरमे ॥ जीवा जीव अनंता प्रमाण
एक गोळा मधे ॥ जीवा शरीर असंख्याता जाण ॥ एकर एक
शरीरमे ॥ जीवा जीव अनंत प्रमाण ॥ जीवा ॥ ६ ॥ तेमाथी अ-
नादी जीवडा ॥ जीवा मोक्ष जाये धीरा चाल ॥ एफ खाली शरीर
न हुवो ॥ जीवा न हुवे अनंते काल ॥ जीवा ॥ ७ ॥ एकर अभवी
संगे ॥ जीवा भव अनंता होय ॥ वली वीसेखे तेहने ॥ जीवा जन्म
मरण तुं जोय ॥ जीवा ॥ ८ ॥ दोय घडी काची मधे ॥ जीवा
पेसट संहस सो पांच ॥ बत्रीस अधीका जाणज्यो ॥ जीवा ए कर-
मनी खाच ॥ जीवा ॥ ८ ॥ छेदन भेदन देहना वेदना ॥ जीवा
मरण सही बहु वार ॥ नीण सेतीनीगोदमे ॥ जीवा अनंतगुणी
वीचार ॥ जीवा ॥ १० ॥ एकींद्रीमाथी नीकल्यो ॥ जीवा इंद्री
पाम्यो दोय ॥ तव पुन्याइ ताहरी ॥ जीवा तेथी अनंती होय ॥
जीवा ॥ ११ ॥ इम तेरंद्री चोरंद्री जीवमा ॥ जीव बे बे लाख ए
जात ॥ दुख दीठा संसारमे ॥ जीवा सुणता अचरिज वात ॥ जीवा
॥ १२ ॥ जलचर थलचर खेचर ॥ जीवा उर पुर भुज पुर जात ॥
सीत ताप त्रसा सही ॥ जीवा दुख सह्या दीनरात ॥ जीवा ॥ १३ ॥
इम भमंतो जीवडो ॥ जीवा पाम्यो नरभव सार ॥ गर्भावासमे दुख
सह्या ॥ जीवा ते जाणे कीरतार ॥ जीवा ॥ १४ ॥ मस्तक तो हेठो
होवे ॥ जीवा उपर रहे बेहुं पाय ॥ आंख्यो आदी द्रुष्टी बेहुं ॥

जीवा इम रह्यो वीष्ट घर माय ॥ जीवा ॥ १५ ॥ वाप वीरज माता रुध्र ॥ जीवा इस दोलीयो ते आहार ॥ भुली गयो जन्म्या पछे ॥ जीवा सेखी करे अविचार ॥ जीवा ॥ १६ ॥ उंठे कोड सुइ लाल करे ॥ जीवा चांपे रुं रुं माय ॥ अष्टगुणी हुवे वेदना ॥ जीवा गर्भा वासारे माय ॥ जीवा ॥ १७ ॥ जनमता हुवे कोड गुणी ॥ जीवा मरणंता कोडाकोड ॥ जन्म मरणता जीवडा ॥ जीवा जाणजो मोटी खोड ॥ जीवा ॥ १८ ॥ देश अनारज उपनो ॥ जीवा इंद्री हीणो होय ॥ आउखुं ओछुं होये ॥ जीवा धर्म कीसी वीध होय ॥ जीवा ॥ १९ ॥ कदाचीत नरभव पामीयो ॥ जीवा उतम कुले अ-वतार ॥ देहनीरोगी पामीने ॥ जीवा रइ खोयो जम वार ॥ जीवा ॥ २० ॥ ठग फासीगर चोरटा ॥ जीवाधीवरकसायरी न्यात ॥ उपजीनी मुवो नही ॥ जीवा एसान रही कोइ जात ॥ जीवा ॥ २१ ॥ चउद राज लोकमां ॥ जीवा जनम मरणनी जोड ॥ जीवा खाली वालाग्रमात्रए ॥ जीवा एसीनरहीकोइ ठोड ॥ जीवा ॥ २२ ॥ एह जीव राजा हुवेगा जीवा हस्ती बांध्या बार ॥ कवहीक करमावसे ॥ जीवा न मील्यो अन उधार ॥ जीवा ॥ २३ ॥ इम संसार भमतो थको ॥ जीवा पाम्यो समकीत सार ॥ आदरीने छिटकावी दीयो ॥ जीवा जाय जन्मारो हार ॥ जीवा ॥ २४ ॥ खोटा देवज सरदीया ॥ जीवा लागो कुगुरु केड ॥ खोटो धर्मज आदरी ॥ जीवा कीधा चउ गती फेर ॥ जीवा ॥ २५ ॥ कवहीक नरके गया ॥ जीवा कवहीक हुवो तुं देव ॥ पुन्य पापना फल थकी ॥ जीवा लागी मीथ्यातनी टेव ॥ जीवा ॥ २६ ॥ ओघाने वली मोमती ॥ जीवा मेरु जेवडा लीध

एकही समकीत विना ॥ जीवा कारज नही हुवो सीध ॥ जीवा ॥ २७ ॥ चार ज्ञानतणा धणी ॥ जीवा नरक सातमी जाय ॥ चउद पुरवनो भाण्यो ॥ जीवा पडे नीगोद माहे ॥ २८ ॥ जीवा ॥ भगवंतनो धर्म पाम्या पछी ॥ जीवा कदीयन जाय फोक ॥ कदाचीत पडवाइ हुवे ॥ जीवा अर्ध पुदगल माहे मोक्ष ॥ जीवा ॥ २९ ॥ सुक्ष्मने बादरपणे ॥ जीवा मेली वर्गणा सात ॥ एक पुदगल प्रावर्तनननी ॥ जीवा जीणी घणी छे वात ॥ जीवा ॥ ३० ॥ अनंत जीव मुगते गया ॥ जीवा टाली आतम दोष ॥ नही गया नही जासे ॥ जीवा एक नीगोदनी जात मोक्ष ॥ जीवा ॥ ३१ ॥ पाप आलोइ आपणा ॥ जीवा अव्रत नाळा रोक ॥ तेथी देवलोकजावशो ॥ जीवा पनरे भव मोहे मोक्ष ॥ ३२ ॥ जीवा ॥ एहवा भाव सुणी करी ॥ जीवा सर्धा आणी नाइ ॥ ज्युं आयो तेम गयो ॥ जीवा लक्ष चोरासी माहे ॥ जीवा ॥ ३३ ॥ केइ उतम नर चींतवे जीवा जाणे अथीर संसार ॥ साचो मार्ग साधीने ॥ जीवा जाय मुगती मझार ॥ जीवा ॥ ३४ ॥ दान शीयल तप भावना ॥ जीवा इणसु राखो प्रेम ॥ कोड कल्याण छे तेहने ॥ जीवा ज्ञान वीमल कहे एम ॥ जीवा ॥ ३५ ॥ संपुर्ण इती.

प्रतिक्रमण विशे उपदेश.

मातापर भक्ति रागने स्त्रीपर प्रीतीराग तेम पडिकमणामा प्रीति भक्तिनो रांग विचारवो ते आवी रीते एक पतिक्रमण—बीजु काउसग ॥ त्रीजुं पचखाण ए त्रणमां प्रीति अनुष्ठान छे केमके एणी

संगतथी आगळ गुण वधे माटे प्रीतिराग छे ।। अने ।। एक सामा-
यिक बीजो चोउवीसथो त्रीजो गुरुने वंदण करवो ए त्रणमा भक्ति
अनुष्ठान छे ।।

यति धर्म माहे पांच क्रिया कहे छे पहेली विषक्रिया बीजी गरल
क्रिया, त्रीजी अनुष्ठान क्रिया, चोथी तदहेतु क्रिया, पांचमी अमृत
क्रियाए पांच भेदे क्रिया जाणवी ।। विष क्रिया कोणे कहीए ग्रह-
स्थि आवे त्यारे क्रिया करे तेने विषक्रिया कहीए ।। बीजी गरल-
क्रिया कोणे कहीए ते गरलक्रीया कालांतरे फल आपे हडकीया
वायुनी परे हडकवा लागे त्यारे मरण पामे तेम चारित्रीयो अति
नियाणुं करे तो बे त्रण भवमा ते वस्तु पामे पण चारित्रनुं फल पामे
नही तेने गरलक्रिया जाणवी ।। त्रीजी अनुष्ठान क्रिया कहे छे अवि-
वेके करीने अथवा क्रिया करवा बेसे त्यारे क्रिया करवानुं भान
नही मन रहित क्रिया करे तेने कंइ फल दायक जाणवी नही तेने
अनुष्ठान क्रिया कहीए ।। चोथी तद हेतुं क्रिया कहे छे चारित्र ले-
नार वैरागी भद्र परिणामी देसना सांभले शुध रागे वध ते क्रिया
करे पण विधी सुध नहीय परंतु सरवाले तेथकी विशुद्ध थाय माटे
चोथी क्रिया फलदायक जाणवी. पांचमी अमृत क्रिया कहे छे
आगम प्रमाणे सुध क्रिया करे क्रिया करवामा अध्वसाय सारा
करे क्रिया करवामा सुध्ध अनुष्ठाननुं आचरण करे एवातो कोइक वि-
रला प्राणी दीसे छे माटे पांच क्रियामां अमृत क्रीयानुं फल मोक्ष
आपवावालुं छे माटे अमृत क्रिया जाणवी ए पांच कियामां त्रण क्रिया
आदरवा योग्य नथी ने बे चोथी ने पांचमी क्रिया आदरवा योग्य छे.

समुर्छीम् जीवोनी उत्पत्ती विशे.

गायके मुत्रमे २४ पहर पछी

भेंसके मुत्रमे १६ पहर पछी

गाऽरतथा गधेडी घोडीके मुत्रमे ८ पहर पछी नरनारीके मुत्रमे चार पहर पछे छमुर्छिम जीव उपजे.

१४) पुर्वका नाम.

१) पहिला पुर्व उत्पाद.

२) बीजो–अग्रायणी,

३) त्रजो–वीर्यवाद.

४) चोथो–सता जाणीये.

५) पांचमो–नार गरयण.

६) छठो–सत्य प्रवाद.

७) सातमो–आतम.

८) आठमो–कर्म प्रवाद.

९) नवमो–प्रत्याख्यान प्रवाद.

१०) दशमो–विध्या प्रवाद.

११) अगीआरमे–नाम कल्याण.

१२) बारमे–प्राणायु.

१३) तेरमे–क्रिया विलास.

१४) चौदमें–बिंडुसार.

जाहेर विज्ञप्ति.

पुस्तकने जेम बने तेम ज्यां त्यां रखडतुं मुकवु नहि. शुद्ध हाथे अडकवुं नहि तेमज उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं न

अमारी पांसेथी नीचेनां गुजराती पुस्तको मळशे.

पंचप्रतिक्रमण (नवस्मरण तथा जीवविचारादि चार प्रकरणोना) अर्थ साथे जेनी छ आवृत्तिओ खपी जवाथी हालमांज घणा सुधारा वधारा साथे सातमी आवृत्ति बहार पाडवामां आवी छे.	१–४.
देवसीराइ अर्थ सहित	०–६.
जीवविचारादि चार प्र. अर्थ साथे.	०–६.
सामायक सूत्र अर्थ सहित.	०–१.
कर्मग्रंथ शास्त्री टाइपथी भाग १ लो जेथी चार कर्मग्रंथनो समावेश अर्थ साथे करेलो छे.	१–०.
श्री रत्नाकर पचीशी भाषांतर सहित	०–२.
वीरविजयजीकृतस्नात्र पूजा तथा श्रावक दिन कृत्य.	०–१.

मळवानुं ठेकाणुं—मास्तर उमेदचंद रायचंद.

ठा. पांजरापोळ अमदावाद.